दिव्य प्रकाश दुबे

आको-बाको

(कहानी-संग्रह)

ISBN : 978-93-92820-00-7

प्रकाशकः

हिंद युग्म

सी-31, सेक्टर-20, नोएडा (उ.प्र.)-201301

फ़ोन- +91-120-4374046

आवरण ः गरिमा शुक्ला

लेखक की तस्वीर : समर्थ गर्ग @banjarasam

पहला संस्करण ः नवंबर 2021

© दिव्य प्रकाश दुबे

Aako-Baako

A collection of short stories by *Divya Prakash Dubey*

Published By

Hind Yugm

C-31, Sector-20, Noida (UP)-201301

Email : sampadak@hindyugm.com

Website : www.hindyugm.com

First Edition: Nov 2021

दीप्ति,

लो लिख दिया पहले पन्ने पर तुम्हारा नाम।

अब खुश?

आधे-अधूरे लोगों से मिलना

उजाला लिखते हुए अँधेरे की जगह अपने आप बन जाती है। ये सभी कहानियाँ मेरे मन के अँधेरे में न जाने कब घर कर गई थीं, जिनसे लड़ने का मतलब था- हार जाना। मन के अँधेरे से लड़ना नहीं होता, उसको दुलार से सहलाने पर ही उजाले की किरण दिखना शुरू होती है।

मैं अपने सोशल मीडिया हैंडल को एक बहुत बड़ा-सा हॉल मानता हूँ। जब भी वहाँ कुछ लिखता हूँ तो लगता है कि अगर एक हॉल में इतने सारे लोग बैठे होते तो क्या मैं ये बात बोलता? जब मैं कमरे में अकेला होता हूँ तो ऐसी कोई बंदिश नहीं होती। ये कहानियाँ ऐसे ही अकेले कमरे में बैठकर शाम को उदास होने के दौरान देखे गए नोट्स हैं।

कुछ खास लोग हैं, जिनकी कहानियों से ये दुनिया सुंदर होती है। लोग ऐसे भी हैं, जिनकी कहानियों से इस दुनिया को सुंदर बनाने की जरूरत महसूस होती है। ये दूसरे तरीके के लोग हमेशा पीछे छूट जाते हैं। मैं बहुत साल पीछे छूटा रहा और जहाँ भी रहा, किसी भी तरीके की रेस में शामिल होने से भरसक बचने की कोशिश करता रहा। इसलिए जब भी अपने जैसे आधे-अधूरे लोगों से मिला तो लगा कि अपने आप से मुलाकात हो गई। इन सभी

हम सभी का कोई-ना-कोई हिस्सा और किस्सा अजीब होता है। हम खुद भी समझ नहीं पाते कि वैसा हमने क्यों किया था!

'आको-बाको' शब्द से शुरू होने वाली एक छोटी-सी प्रार्थना मेरी नानी तब गाती थीं जब घर में किसी बच्चे की नजर उतारनी होती थी। नाम थोड़ा अजीब है, उन सभी लोगों की तरह जिनकी कहानियाँ यहाँ हैं। शायद हम उनकी कहानी जान जाएँ, तो ये लोग इतने भी अजीब न रहें।

कहानियाँ आपको जैसी भी लगें, बताइएगा जरूर। आपकी प्रतिक्रिया के इंतजार में।

With love, luck & Light

दिव्य प्रकाश दुबे

मुंबई

sharewithdp@gmail.com

www.divyapraksah.in

insta : @authordivyaprakash

Fb page : @authordivyaprakash

क्रम

सुपर मॉम

पेन फ्रेंड

खिलौना

संजीव कुमार

पहला पन्ना

डैडी आई लव यू

कविता कहाँ से आती है!

भूतनी

शुगर डैडी

कमरा

_____

गुमशुदा

विंडो सीट

सुपरस्टार

खुश रहो

द्रौपदी

सुपर मॉम

नीता को घर का कामकाज निपटाते हुए रोज की तरह दिन के बारह बज गए थे। उसने अपने लिए चाय बनाई और इत्मिनान से अखबार पढ़ने लगी। उसको अखबार पढ़ने का शौक था लेकिन कभी वो ताजा अखबार नहीं पढ़ पाती। ज्यादा कुछ कहाँ चाहिए था उसे, कड़क चाय और ताजा अखबार। बस इतना और बस इतना ही नहीं मिल पाता था।

पति को चाय के बिना अखबार के अक्षर दिखाई नहीं देते थे। सुबह बच्चों का टिफिन, उनके स्कूल की तैयारी में साँस लेने की फुरसत ही नहीं होती।

नीता उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले के ऑफिसर्स कॉलोनी में रहती थी, नहीं उसके पति ऑफिसर नहीं थे। वो लोग अपर कास्ट नहीं थे, ये बात दो-तीन दिन में कोई-न-कोई याद दिला देता था। शाहजहाँपुर की इस ऑफिसर्स कॉलोनी में घरों के चार-पाँच टाइप थे- बंगले, ए टाइप, बी टाइप, सी टाइप, डी टाइप। नीता का घर सी टाइप का था। इस कॉलोनी में चपरासी बाबू से लेकर, अधिकारी, जज सभी सरकारी लोग रहा करते। यूँ तो बाबुओं की बिल्डिंग से डीएम बंगला बिलकुल पास था। नीता के घर के आस-पास रहने वाली औरतें शहर के अधिकारियों की बीवी की तरह नहीं थीं। कभी किसी को काम हो तो वो एक-दूसरे के घर का खाना-पीना देख

देखतीं जैसे वो उस शहर की हिरोइन हों। डीएम और एसपी की बीवियों के पहने हुए कपड़ों की चर्चा बहुत दिनों तक होती। ऐसा कहा और माना जाता कि बड़े अधिकारियों की बीवियाँ कपड़े वगैरह खरीदने बरेली या लखनऊ जाती हैं। कुछ औरतें तो यहाँ तक कहती थीं कि शहर के सब बड़े अधिकारियों की बीवियाँ हफ्ते में एक बार बरेली केवल शॉपिंग करने जाती थीं। ये वे औरतें थीं जो अपने पतियों से डीएम और एसपी की तनख्वाह पूछकर उँगलियों पर हिसाब लगातीं कि कितने पैसे खर्च हो जाते होंगे। बड़े अधिकारियों की होने वाली कमाई को जोड़ने में उनकी उँगलियाँ कम पड़ जातीं। अपने बच्चों को अधिकारी बनाने का सपना पहली बार उनकी उँगलियों पर महीने का खर्चा जोड़ते-घटाते हुए पनपता।

वे जो कपड़े लेकर आतीं, बाबुओं की बीवियाँ उन कपड़ों जैसे कपड़े ढूँढने के लिए शाहजहाँपुर की लोकल मार्केट जातीं। कुछ औरतें इसलिए सारे व्रत और त्यौहार रहतीं कि रिटायरमेंट से पहले उनके पति का प्रोमोशन हो जाए और वे थोड़े दिन के लिए ही सही बड़े बाबू से अधिकारी हो जाएँ। सी टाइप के घर से बी टाइप के घर पहुँचने में उम्र निकल जाती थी।

नीता को अपना दो कमरे वाला सरकारी घर अच्छा लगता था। उसने

उसको सजाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। घर चूँकि छोटा था इसलिए कुछ भी नया सामान रखने की जगह नहीं थी।

नीता के आस-पास रहने वाली सहेलियाँ भी उसकी अखबार पढ़ने की इस आदत से परेशान रहतीं। एकाध तो ताने मारते हुए कह भी देतीं, "देश-दुनिया तो फैमिली ही है न, फिर अखबार क्या पढ़ना!" या फिर, "अखबार पढ़कर किस्मत थोड़े बदल जाएगी!"

उसके पूरे ब्लॉक में वो अकेली थी जो अखबार पढ़ती थी। उसकी बाकी सहेलियाँ तो न्यूज देखती भी नहीं थीं। उनके पति जो कुछ भी बता देते थे वही उनके लिए खबर हो जाती।

नीता कभी इस बात का जवाब नहीं देती। अखबार में अपना भविष्यफल पढ़कर वो पिछले दिन के अखबार से अपना भविष्यफल मिलाती। बीता हुआ दिन शायद ही कभी भविष्यफल के हिसाब से बीता होता, फिर भी नीता को उम्मीद थी कि किसी न किसी दिन का भविष्यफल तो सही निकलेगा।

उसके आज के भविष्यफल में लिखा था, "एक नया मौका मिलने की आशा है। लकी नंबर 7, लकी रंग नीला।"

नीता को भविष्यफल के ठीक नीचे एक बड़ा-सा बॉक्स बना हुआ दिखाई

हिंदुस्तान में पहली बार हो रही है सुपर मॉम की खोज। माँ को सम्मान देने का समय आ गया है। सुपर मॉम जीतने वाली महिला को दस लाख का नगद इनाम मिलना था। अप्लाई करना बहुत आसान था। बस एक हजार रुपये लेकर एक दिन होटल जाना था। अपना स्लॉट पहले से बुक करना था। दो राउंड होने थे, पहले में शॉर्टलिस्ट होने के बाद सेकंड राउंड में देश भर की औरतों के साथ परफॉर्म करना था। टीवी के एक बड़े चैनल के साथ ये प्रोग्राम लॉन्च होना था। टीवी पर आना और हवाई जहाज पर उड़ना, ये दोनों ही सबसे घिसे-पिटे सपने हैं लेकिन सबसे ज्यादा देखे भी यही जाते हैं। हवाई जहाज वाला तो फिर भी इतना बड़ा सपना नहीं बचा लेकिन टीवी पर एक बार आ गए तो मतलब लाइफ सेट है। जिंदगी कभी सेट नहीं होती, लाइफ सेट होती है।

परफॉर्मेंस में कुछ भी हो सकता था, चाहे खाना बनाना, गाना, डांस, मेहँदी। टैलेंट की सैकड़ों केटेगरी थीं।

नीता ने अपनी अलमारी से एक एल्बम निकालकर बाहर रखा। उसमें अपनी वो तस्वीरें देखने लगी जिसमें नीता अपने स्कूल और कॉलेज की डांस प्रतियोगिता में परफॉर्म कर रही थी। झटके से देखने पर अपनी पुरानी तस्वीर बहुत नई दिखती। नीता ने तस्वीर को छूकर देखा, जैसे वो खुद को

नहीं बीते हुए समय को छू रही हो।

"सरोज खान से डांस सीखना है मुझे।"

"जरूर जाना, लेकिन शादी के बाद।"

याद समंदर की लहर के जैसे आई और पुराने दिनों की उम्मीद बहाकर ले गई। याद रात के तारे की तरह आई, नींद उड़ाकर चली गई। याद हर तरीके से आई, बस अच्छी याद की तरह नहीं आई।

अब भी शादियों में नीता से अच्छा डांस कोई नहीं करता। वो फॉर्म भरे कि न भरे, इस उधेड़बन में एक बज गए। आठवीं क्लास में पढ़ने वाले अर्जुन के लौटने का समय हो चुका था। उसने उस पेपर की कटिंग निकालकर रख ली।

उसने सोचा कि अपने पति से इसमें भाग लेने के लिए पूछे, फिर उसके दिमाग में आया कि हजार रुपये की तो बात है। अगर एक राउंड में शॉर्टलिस्ट हो जाएगा तब बताने का फायदा भी है। ऐसे ही कोई फायदा नहीं, पता चला बोल दो और शॉर्टलिस्ट ही नहीं हुआ तो ये महीनों मजाक उड़ाते रहेंगे।

नीता पर जैसे अब धुन सवार हो चुकी थी। लेकिन घर में प्रैक्टिस करना इतना आसान नहीं था। घर में इतना सामान था कि डांस लायक ठीक-ठाक

था कि घंटी बजी। सामने वाली सक्सेना जी की वाइफ दरवाजे पर ही सब्जी काटने बैठी हुई थीं। दोनों दरवाजों के बीच में सीढ़ी थी।

सब्जी काटते हुए बात करना मिसेज सक्सेना का फेवरेट टाइम पास था। ऐसे घर का काम भी होता रहता था।

"नीता, पता चला डीएम की बीवी कल एसपी के बच्चे के बर्थडे में नहीं गई। हमें क्या मतलब इन बातों से, फिर भी..."

'हमें क्या मतलब इन बातों से', हर बात या तो शुरू होती या खत्म, लेकिन जितनी सब्जियाँ लेकर वो बैठी थीं उस हिसाब से अगले आधे घंटे और कोई काम नहीं होने वाला था।

मिसेज सक्सेना बातें भले चटपटी करती हों लेकिन वो थीं बहुत अच्छी महिला। बिल्डिंग के बाकी लोगों जैसा उन्होंने कभी नीता को महसूस नहीं कराया था कि वो लोग लोअर कास्ट हैं। एक-दो बार जब नीता की तबियत खराब हुई तो उन्होंने कभी ये महसूस नहीं होने दिया कि वो पड़ोसी हैं, बल्कि वो बड़ी बहन की तरह मदद के लिए हमेशा तैयार रहीं।

सक्सेना जी का अगले पाँच साल में रिटायरमेंट होना था। इसलिए मिसेज सक्सेना की दो ही आखिरी इच्छाएँ थीं कि रिटायरमेंट से पहले एक घर बन

जाए और बेटा नौकरी पा जाए। बेटी बहुत पहले ही अपनी मर्जी से कॉलोनी के ही एक इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ने वाले बेरोजगार लड़के से शादी कर चुकी थी जो बाद में प्लेसमेंट के बाद लाखों का पैकेज पाने वाला कमाऊ इंजीनियरिंग हो गया। शादी के एक साल के अंदर ही बेटी-दामाद अमेरिका चले गए। बेटी अब जब कभी मायके आती तो उसको अपना दो कमरे का घर छोटा लगता। बेटी की अपने मन से शादी के लिए वो इतने ताने सुन चुकी थीं कि जब मोहल्ले में किसी लड़की की शादी किसी बाबू से होती तो अपने दामाद की लाइफस्टाइल की तारीफ करना नहीं भूलतीं और उसके डॉलर वाले पैकेज को रुपये में कन्वर्ट करके चार-पाँच लाख एक्स्ट्रा जोड़कर बतातीं।

सक्सेना आंटी से उसको इतने काम पड़ते रहते थे कि नीता से कहा नहीं गया कि वो प्रैक्टिस करना चाहती है।

इस बीच स्कूल से बेटे के लौटने का टाइम हो गया था। बेटा जब घर में घुसा और टेबल को बिस्तर पर देखा तो उसने पूछा, "ये क्या है मम्मी?"

मम्मी के पास कोई जवाब नहीं था।

"सही से सफाई करने के लिए चढ़ाया था।"

माँ-बेटे ने मिलकर टेबल को अपनी जगह रख दिया। नीता जहाँ डांस

उसने पेपर से वो प्रचार वाला हिस्सा काटकर अपनी अलमारी में साड़ी के नीचे बिछे अखबार के नीचे दबा दिया।

उस पूरी रात वो नींद में डांस की प्रैक्टिस करती रही। सुबह उठकर उसने जल्दी-जल्दी काम निपटाया। पति और बच्चे को समझ नहीं आया कि माँ को ऐसा क्या हुआ है कि रोज जो सुबह थकी हुई होती थी, आज सब कुछ अलग ही तेजी से कर रही है।

जाते ही उसने टेबल हटाई। मोबाइल पर बेस्ट डांस वीडियो सर्च किया और शुरू हो गई। अब उसका शरीर पहले जैसा नहीं रह गया था। उसके समय से डांस अब बहुत बदल चुका था। उसने नये पैटर्न को पकड़ने की कोशिश शुरू कर दी। अभी उसको डांस करते हुए पंद्रह मिनट भी नहीं हुए थे कि नीचे वाले घर से एक बच्चा आया और बोला, "आंटी, आपके घर से बहुत जोर-जोर से कूदने की आवाज आ रही है।"

नीता ने मन-ही-मन सरकारी घर को कोसा। उसने अब एक गद्दा लगाया और प्रैक्टिस शुरू की लेकिन गद्दा लगने से उसकी रिदम सही बन नहीं पा रही थी। चूँकि वो कई दिन बाद डांस कर रही थी इसलिए थक भी जल्दी गई।

ऑडिशन में पंद्रह दिन बचे थे। अब भी अखबार में रोज सुपर मॉम की खोज के बारे में आता। एक-दो बार उसने कॉन्टेस्ट में न जाने का मन भी बनाया लेकिन अखबार उसे भूलने नहीं देता। अखबार उसको हर दिन याद दिलाता। नीता किसी तरह धीरे-धीरे डांस की प्रैक्टिस करती रही। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो पति को बताए या नहीं। बहुत सोच-समझकर उसने अपने बचाए हुए पैसों से पति को बिना बताए ऑडिशन में जाने का फैसला लिया। दस दिन में उसके डांस में थोड़ी बहुत रिदम आ चुकी थी।

पहले राउंड का दिन आ गया था। उसने अर्जुन को सामने वाली सक्सेना आंटी के यहाँ भेज दिया। दिन के लिए सब्जी एक्स्ट्रा बनाकर सक्सेना जी के यहाँ दे दी ताकि उनको भारी न लगे। अपने भविष्यफल के हिसाब से उसने लकी रंग के कपड़े पहने।

अब सवाल ये था कि पति को क्या बोले? उसने सोचा कि वैसे भी शाम से पहले तो आते नहीं हैं। अगर बाद में पूछेंगे तो बता देगी कि बाजार गई थी।

उस बड़े होटल के बाहर पहुँचकर वो घबरा रही थी क्योंकि शादी के बाद वो कभी इतने बड़े होटल में गई नहीं थी। बाहर का खाना भी वो लोग बस शादी-ब्याह में ही खाते। वरना शायद ही ऐसा कोई दिन बीता हो जब उसने खाना न बनाया हो।

होटल के अंदर पहुँचने पर पता चला कि बहुत भीड़ है। पहले सबको

नहीं थी। हालाँकि टीवी पर उसको डांस वाले रियलिटी शो बहुत पसंद थे। होटल में कई सारे कैमरे लगे हुए था। सबके बारी-बारी वीडियो बन रहे थे। नीता को रजिस्ट्रेशन करने के बाद एक टोकन दे दिया गया। जब उसको टोकन मिला तभी उसकी नजर सामने डीएम और एसपी की बीवियों पर भी गई। वो बात अलग थी कि उनका टोकन अलग से लेने के लिए एक-दो लोग लगे हुए थे। उसने उनसे नजर हटाई और मन में सोचा कि कहीं यहाँ भी जुगाड़ से होने लगा तब तो उसके हजार रुपये बर्बाद हो ही गए।

होटल वाले अलग से डीएम की वाइफ को खाना लाकर दे रहे थे। नीता अपने साथ टिफिन में कुछ खाने को लाई थी। वर्ना इस होटल में तो सब कुछ बहुत ही महँगा था। फाइनली पाँच घंटे बाद नीता का नंबर आया। सामने तीन लोग बैठे थे। एक करीब चालीस साल की महिला थीं, जिनको उसने कभी टीवी पर देखा था लेकिन पहचान नहीं पा रही थी। दो और लोग थे जिनकी उम्र भी करीब चालीस साल रही होगी। उनमें से एक ने काला चश्मा लगाया हुआ था। दूसरा आदमी सोने से लदा हुआ था। उस महिला ने पूछा, "नीताजी, आपको क्यों लगता है कि आपको सुपर मॉम होना चाहिए?"

नीता एकदम से इस सवाल के लिए तैयार नहीं थी। वो अभी कुछ सोच ही

रही थी कि क्या जवाब दे। उस औरत ने अपना सिर पकड़ लिया। जैसे कि वो नीता के जवाब न दे पाने से निराश हो। काला चश्मा पहने हुए आदमी ने बात को सँभालते हुए कहा, "नीताजी, आप लीजिए पानी पीजिए, घबराइए नहीं। आपने अपने फॉर्म में लिखा है कि आपको डांस का शौक है।"

"जी।"

"दिखाइए अपना टैलेंट। याद रखिए ये आपका आखिरी मौका है। अगर आपने सही से परफॉर्म किया तो आपकी लाइफ हमेशा के लिए बदल जाएगी।" ये कहकर वो टेबल पर रखे काजू खाने लगा। नीता अपनी सीट से खड़ी हुई। सोने से लदा हुआ आदमी चिल्लाया- 'म्यूजिक'।

म्यूजिक चलने लगा और म्यूजिक सुनते ही नीता में जैसे किसी की आत्मा आ गई हो। वो अगले दो मिनट में ऐसा नाची जैसे नेशनल टीवी पर लोग फाइनल राउंड में नाचते हैं। जज बनी हुई औरत उसके परफॉर्मेंस के बाद ताली बजाने लगी। उसने उठकर नीता को गले लगा लिया।

"माय डियर, मेरी तरफ से हाँ है।"

हाँ, सुनकर नीता की आँखों से आँसू निकल गए। ये आँसू हाँ के थे या इतने दिनों बाद बेफिक्री से नाचने के, उसको समझ नहीं आ रहा था। बाकी दोनों जज भी खड़े हो गए। कैमरा एकदम से नीता के पास आ गया। कैमरा

"नीता जी, क्या करती हैं आप?" उस महिला ने पूछा।

"हाउस वाइफ हूँ मैम।"

जब नीता के आँसू सूख गए तब कैमरा पीछे हुआ और तभी क्रू में से किसी ने रूमाल लाकर दिया।

"आपके पति क्या करते हैं?"

"वो सरकारी दफ्तर में क्लर्क हैं, मैम।"

"आप अगले राउंड में लखनऊ उनके साथ ही आएँगी?" जज ने बचा हुआ काजू खाते हुए पूछा।

"उनको इतने दिनों की छुट्टी नहीं मिलेगी, मैम।"

"आपके पति को पता है कि आप यहाँ आई हैं?"

ये सवाल सुनकर नीता के सूखे हुए आँसू हल्की-सी शरारत में बदल गए।"

"नहीं मैम।"

काले चश्मे वाला जज जोर से हँसा और बोला, "उनको बताइएगा भी मत। अब सब लोग आपको सीधे टीवी पर देखेंगे, नेक्स्ट राउंड में आपसे

लखनऊ में मुलाकात होती है।"

फिर उस जज ने महिला जज की तरफ देखते हुए कहा, "मुझे लगता है मैम कि हमें सुपर मॉम मिल गई है।"

नीता को इन सब बातों का यकीन नहीं हो रहा था। उस एक पल में वो अपनी लाइफ बदलते हुए देख रही थी। जब वो बाहर निकली तो उसको कैमरे ने घेर लिया। नीता से पहला सवाल पूछा गया कि अगर वो दस लाख रुपये जीत गई तो क्या करेगी? ये सवाल आस-पास भी कई औरतों से पूछा जा चुका था। ज्यादातर ने यही जवाब दिया कि वो इन पैसों से घर बनाएँगीं।

नीता के सामने जब कैमरा लगा, तो उसके मन में दो जवाब थे। उसने सोचा कि वो पहला जवाब देगी लेकिन माइक के सामने उसके मुँह से दूसरा जवाब निकला।

"मैं दस लाख रुपये से एक डांस अकेडमी खोलूँगी, जिसमें मॉम्स के लिए डिस्काउंट होगा।" जवाब देने के बाद कुछ देर तक उसे खुद पर यकीन नहीं हुआ कि उसने ऐसा क्यों बोला।

लाइम लाइट से हटकर उसने जब अपना मोबाइल खोला तो पति के तमाम मैसेज पड़े हुए थे। उसने जैसे ही मोबाइल उठाया पति का फिर एक बार फोन आया। पति ने चिल्लाते हुए पूछा, "तुम कहाँ हो?"

"तो फोन क्यों बंद कर रखा है? मैं आधे घंटे से बाहर खड़ा हूँ, जल्दी आओ।"

घर पहुँचने पर पता चला, पति के एक पुराने दोस्त आए हुए हैं। जो अगले दो दिन तक रहने वाले थे। दोस्त के घर पर होने की वजह से पति को लड़ने का मौका नहीं मिला। नीता ने स्पेशल खाने की तैयारी की। दिन भर की अपनी खुशी वो किसी को अभी तक बता नहीं पाई थी। खुशी न बता पाने का दुख शायद सबसे बड़ा होता है।

पति अच्छा खाना खाने के बाद भी नाराज था। इसीलिए सोने से पहले कुछ बात नहीं हुई। अजीब दिन था। नीता के भविष्यफल में ये नहीं लिखा था कि उस दिन खुशी और दुख दोनों के आँसू रहेंगे।

दोस्त आए तो दो दिन के लिए थे लेकिन हफ्ते भर रुके। हफ्ते भर बाद जब वो चले गए तब जाकर नीता ने चैन की साँस ली।

अर्जुन जब स्कूल से आया तो उसको खाना खिलाते हुए नीता ने अर्जुन से पूछा, "अगर मैं कभी टीवी पर आई तो तुझे खुशी होगी?"

अर्जुन बहुत जोर से हँसा और बोला, "मम्मी, कोई भी नहीं आ जाता टीवी

पर, आप ऐसे फालतू सवाल मत पूछा करो मुझसे।"

नीता ने उदासी भरे गुस्से में उस दिन रोज से ज्यादा खाया। अब वो एक-एक दिन इंतजार कर रही थी कि कब अगले राउंड के लिए कॉल आएगा।

रोज अपना भविष्यफल और ध्यान से देखती। भविष्यफल देखना एक उम्मीद भरा काम है। करते बहुत लोग हैं, पर सच बहुत कम लोगों का होता है। लेकिन अगले दिन अखबार आने पर फिर उतनी ही उम्मीद इकट्ठा हो जाती है जितने में अच्छे दिन आते हुए दिख सकें।

वो फोन पर ज्यादा देर बात नहीं करती कि कहीं कॉन्टेस्ट वालों का कॉल मिस न हो जाए।

धीरे-धीरे करके एक महीना बीत गया। नीता को लगा कि आज नहीं तो कल कॉल तो आना ही है, तब तक अपनी प्रैक्टिस क्यों रोकी जाए। वो टीवी के रियलिटी शो देखते हुए रोती, खुश होती, उम्मीद बाँधती। अर्जुन को ये सब पसंद नहीं था।

"क्या मम्मी, क्या रोना-धोना देखती रहती हो?" यह कहते हुए वो चैनल बदलकर कार्टून लगा देता।

नीता ने बहुत कोशिश करके कमरे की सेटिंग कुछ ऐसे बदली कि रोज उसको टेबल ऊपर-नीचे नहीं करना पड़ा। पति को अजीब तो लगा लेकिन

अब कमरे में इतनी जगह हो गई थी जितने में डांस किया जा सकता था। वो बात अलग है कि इसमें नीता को एक-दो बार पैर में चोट लग गई थी।

पहले राउंड के पैंतालीस दिन बाद नीता को फोन आया।

"बधाई हो नीता जी! आपको अभी से दस दिन बाद लखनऊ में सेकंड राउंड के लिए आना है। वहाँ पर एक हफ्ते रुकने के हिसाब से तैयारी करके आइएगा। आपका फाइव स्टार में रुकने का खर्चा हम लोग देंगे। बस हाँ, आप एक लाख रुपये का सिक्योरिटी डिपॉजिट करके आइएगा, जो कि एक हफ्ते बाद आपको वापस मिल जाएगा। आप कब तक आने का कन्फर्म कर देंगी?"

नीता के पास सोचने का समय तो था नहीं। उसने तुरंत ही फोन पर हाँ कर दिया लेकिन दिमाग में एक लाख रुपये अटक गए। अब एक हफ्ते के लिए बिना पति को बताए जाना संभव ही नहीं था। चली तो फिर भी वो एक बार जाती लेकिन एक लाख रुपये, वो कहाँ से लाती? उसने आए हुए नंबर पर दुबारा कन्फर्म करने के लिए फोन किया लेकिन फोन लगा ही नहीं।

नीता ने अपने पति का मनपसंद खाना बनाया। वो अच्छे मूड में थी। पति ने खाना खाया लेकिन वो खाना स्पेशल है इस बात का नोटिस ही नहीं

लिया। पति ने इतना ज्यादा खा लिया था कि जब तक नीता किचन का काम निपटाकर आती, वह सो चुका था।

संडे को डरते हुए उसने अपने पति को पूरी बात बताई। उसको डर था कि पति नाराज होंगे लेकिन हुआ इसका उल्टा। पति बहुत खुश हुए, उन्होंने कहा, "मेरी तरफ से पूरा सपोर्ट है। बस मैं एक लाख रुपये नहीं दे पाऊँगा, वो तुम अपने पापा के यहाँ से इंतजाम कर लो।"

नीता को खुशी मिली लेकिन थोड़े से दुख के साथ। उसके लिए यही बहुत बड़ी बात थी कि पति को उसके एक हफ्ते जाने में कोई दिक्कत नहीं है।

नीता के पापा के यहाँ हालत ऐसी नहीं थी कि एक लाख रुपये वो लोग दे पाएँ। ये बात उसके पति को अच्छी तरह से पता थी। इसलिए खुद विलेन बनने की बजाय उसने पैसे वाला गेम खेल दिया था। उसको पता था कि एक लाख रुपये का इंतजाम करना नीता के बस की बात नहीं है। इससे बात भी रह गई।

जाने में बस एक हफ्ता बचा था। नीता दिन-रात इस सोच में थी कि आखिर पैसे का इंतजाम कैसे होगा। बैंक उसको लोन देता नहीं। अगर देता तो भी पति को पता चल जाता।

सामने सक्सेना आंटी भी नीता से कहतीं कि वो तो आजकल दिखती ही

होता तो वो अपने बच्चे और पति पर बात डाल देती।

जब तीन दिन बचे थे तब उसने एक बार और अपने पति से पूछा लेकिन पति का जवाब वही था।

"आप अर्जुन को कैसे सँभालेंगे?"

"तुम कौन-सा जा रही हो?" पति ने अखबार पढ़ते हुए जवाब दिया।

"मैं बात कर लूँगी उन लोगों से कि बिना पैसे के हो जाए।"

"मैं सँभाल लूँगा, तुम बात कर लो।"

उस दिन पति के जाने के बाद से नीता बहुत देर तक रोती रही। टीवी ऑन करने पर किसी औरत का एपिसोड चल रहा था जिसमें वो बता रही थी कि कैसे उसके पति ने उसको पूरा सपोर्ट किया। नीता को गुस्सा आया, अपने पापा, अपने भाई, अपने पति, सक्सेना जी पर, सब पर। नीता अब जाने की उम्मीद लगभग खो चुकी थी।

जिंदगी के बड़े फैसले आराम से बैठकर नहीं, बेचैनी से फूट-फूटकर रोते हुए पलों में लिए जाते हैं।

नीता ने गुस्से में अपनी अलमारी का लॉकर खोला और अपने सारे गहने

लेकर सुनार के पास पहुँची और एक लाख दस हजार रुपये के गहने बेच दिए। शाम को जब पति घर पहुँचे तब नीता खुशी-खुशी अपना बैग लगा रही थी। अर्जुन बेचैन था कि उसकी मम्मी कहाँ जा रही थी।

इससे पहले कि पति कुछ पूछता, नीता बोली, "मेरी बात हो गई थी। सिक्योरिटी डिपॉजिट की जरूरत नहीं है। मैंने सब सामान रख दिया है। सामने वाली आंटी दिन में इधर ही आ जाएँगी। वही खिला भी देंगी। आप बस शाम का देख लीजिएगा।"

ये देखकर पति का मूड ऑफ हो गया, "जाना जरूरी है क्या?"

"मतलब! आपने बोला तो था इसलिए मैंने बात की।"

पति अपने ही बनाए जाल में फँस चुका था। नीता अब रुकने वाली नहीं थी। उसको जीतने-हारने से फर्क नहीं था, वो तो बस कॉन्टेस्ट में जाना चाहती थी।

अर्जुन बार-बार पूछ रहा था, "मम्मी कहाँ जा रही हो?"

नीता ने उसको अपने पास बुलाया और माथे पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "तुम्हारी मम्मी टीवी पर आएगी।"

अर्जुन को विश्वास नहीं हुआ। उसको अपनी मम्मी की महक उस दिन

स्टेशन पर पति और अर्जुन छोड़ने आए। शाहजहाँपुर से लखनऊ की ट्रेन का रास्ता लगभग तीन घंटे का है। पूरे समय नीता के दिमाग में स्पीच चल रही थी कि जब वो जीत जाएगी तो वो क्या बोलेगी? उसकी स्पीच बार-बार गलत हो रही थी। उसको याद ही नहीं आ रहा था कि वो जीतने पर किसका नाम लेगी? उससे जब कोई पूछेगा कि उसकी प्रेरणा कौन है तो वो क्या बताएगी? इस सवाल का जवाब बहुत जोर डालने पर भी उसे समझ नहीं आ रहा था।

लखनऊ स्टेशन जैसे ही दिखना शुरू हुआ उसको जवाब भी समझ आ गया। उसने सोच लिया कि उसकी प्रेरणा वो खुद है। प्रेरणा हमेशा अंदर होती है। अपना ये जवाब सोचकर वो बहुत खुश हुई। उसको ये भी खुशी हुई कि ये जवाब तो आज तक किसी ने टीवी पर दिया भी नहीं है। सब लोग किसी ना किसी और को ही अपनी प्रेरणा बता देते हैं।

स्टेशन के बाहर कॉन्टेस्ट कराने वाली टीम से उसको लेने लोग आए हुए थे। उसको एक मॉल में ले जाया गया।

"पहले आपका रजिस्ट्रेशन होगा, फिर वहाँ से आपको होटल लेकर जाएँगे।" उसको लेने आए एक लड़के ने कहा।

नीता पहले भी लखनऊ आई थी लेकिन उस दिन नीता को एक नया ही लखनऊ दिख रहा था। उसने सोचा कि मुंबई को क्यों लोग सपनों का शहर कहते हैं! उसकी नजर से उस दिन लखनऊ भी सपनों का शहर लगा था।

मॉल के ऑफिस में एक तरफ लाइन से औरतें बैठी हुई थीं। एक-एक करके सबका नंबर आ रहा था। रजिस्ट्रेशन में कोई भी फैमिली मेंबर अलाउड नहीं था। नीता से एक और लंबा फॉर्म भरवाया गया। जिस फॉर्म में सबसे पहला सवाल यही था कि अगर आप दस लाख रुपये जीत गईं तो क्या करेंगी। नीता के दिमाग में जवाब आज बिलकुल साफ था।

पचास के आस-पास महिलाएँ वहाँ आई थीं। फॉर्म भरने के बाद उसने पैसे जमा कर दिए। सभी महिलाओं को इंतजार करने के लिए कहा गया कि होटल से एक बस आएगी, उसमें सब एक साथ जाएँगी। वो इंतजार किसी को खल नहीं रहा था। इन औरतों ने जीवन में हर चीज के लिए इतना लंबा इंतजार किया था कि दो-चार घंटे का इंतजार उनके लिए कुछ नहीं था।

शाम होने के बाद से मॉल की भीड़ कम होती जा रही थी। जो लड़कियाँ वहाँ बैठकर रेजिस्ट्रेशन कर रही थीं वो भी अब खाली हो चुकी थीं। उनको कन्फर्मेशन का इंतजार था।

दिन भर बैठे हुए लोग अब परेशान हो रहे थे। एक-दो लोग चिल्ला रहे थे लेकिन उन लड़कियों को भी ज्यादा कुछ पता नहीं था।

कुछ महिलाओं के पति या कोई रिश्तेदार मॉल में ही इंतजार कर रहे थे। लड़कियों को होटल का नाम नहीं पता था, न उनके पास कोई जवाब था।

"रजिस्ट्रेशन के पैसे पहले ही उनके बॉस आकर ले जा चुके थे।"

सात बजे, फिर आठ बजे, अंतत: साढ़े आठ बज गए।

नीता के पति के मोबाइल से अर्जुन का कॉल आया, "टीवी पर कब आओगी मम्मी?"

"मैं बहुत अच्छे से हूँ, होटल का कमरा बहुत अच्छा है। तेरी गर्मी की छुट्टी में लखनऊ आएँगे तो इसी होटल में रुकेंगे, अच्छा रखती हूँ।"

अब तक माहौल में गर्मी आ चुकी थी। सुबह से इंतजार करते हुए पति और रिश्तेदार अब ऊपर आ चुके थे। उन लड़कियों को एक-दो थप्पड़ लग चुके थे। साढ़े नौ बजे तक पुलिस आई।

सभी सुपर मॉम एक बड़ी ठगी का शिकार हो चुकी थीं। आस-पास शोर ही शोर था। नीता की आवाज इतनी तेज नहीं थी कि कुछ असर करती। इतने बड़े झटके में आँसू भी रास्ता भूल जाते हैं। पुलिस ने सबका नाम, पता और

नंबर नोट किया और लोगों को घर जाने को कहा।

नीता का घर तो दूर था, वो जाती भी तो कहाँ जाती! यकायक उसको बचे हुए लगभग दस हजार रुपयों का खयाल आया। उसने मॉल से निकलकर ऑटो वाले को फाइव स्टार होटल चलने को कहा।

ऑटो वाले ने उसको होटल ताज, गोमती नगर के बाहर छोड़ा। ऑटो से उतरने वाली वो अकेली थी। उसने एक दिन के लिए कमरे का पता किया।

आधे से ज्यादा दिन बीत चुका था। होटल वाले ने पता नहीं क्या सोचकर उसको डिस्काउंट में कमरा छह हजार में दे दिया, हाँ पैसे एडवांस में ले लिए।

नीता डरी-डरी कमरे में आई। उसने अपने कमरे की हर चीज को ऐसे देखा जैसा वो सचमुच ही ताजमहल के अंदर आई हो। बाथरूम में जाकर उसने पंद्रह मिनट लगाकर ये समझा कि ये शॉवर चलता कैसे है। वो जिंदगी में पहली बार शॉवर में नहा रही थी। दायें करो तो ठंडा पानी, बायें करो तो गरम। इतनी सारी क्रीमें, इतना सुंदर शीशा। इतना करीने से सजा हुआ बेड।

शॉवर लेते हुए नीता ने नया जन्म ले लिया हो जैसे। उसने शॉवर लेने के बाद घर पर अर्जुन को वीडियो कॉल किया और कमरा दिखाया।

"खाना दिया पापा ने? यहाँ बहत अच्छा इंतजाम है।"

उसके पति भी मोबाइल में झाँककर होटल का कमरा देख रहे थे। उन्होंने फोन लिया और इतना ही कहा, "अर्जुन की चिंता मत करना, अच्छे से करना। वो क्या कहते हैं?"

"ऑल द बेस्ट कहते हैं।" नीता ने बात पूरी की।

फोन रखने के बाद उसका रोने का मन नहीं किया। उसको लगा कल दिन में बारह बजे चेक आउट करने से पहले तक का दिन उसको पूरा डूब के जीना है।

नीता को इतनी अच्छी नींद कई सालों से नहीं आई थी।

नाश्ता फ़्री था। उसने सुबह उठकर नहा-धोकर अपने सबसे अच्छे कपड़ों में नाश्ता किया। उसके सबसे अच्छे कपड़े भी वहाँ के सबसे खराब कपड़ों से खराब थे। लेकिन नीता को अब इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। उसने पैसे दिए थे, कोई चोरी नहीं की थी। नाश्ते के हॉल में जब उसे लोगों ने मैम बोला तो उसे बहुत अच्छा लगा। उसको तो ये भी पता नहीं था कि उसको जवाब कैसे देना था।

अभी वो नाश्ता कर ही रही थी कि उसकी नजर कोने में बैठी एक औरत

पर गई। उसने ध्यान से देखा- अरे! ये तो वो डांस रियलिटी शो वाली जज है जो टीवी पर आती है!

नीता उठकर उसके पास गई। वो वीआईपी है, ये होटल वालों को भी पता था, इसलिए उस जज के पास पहुँचने से पहले ही होटल वालों ने बहुत ही प्यार से नीता को रोका।

"मुझे बस एक मिनट के लिए मिलना है। मैं उनकी बहुत बड़ी फैन हूँ। आप एक बार उनसे पूछ तो लीजिए।"

होटल वाले उस जज से पूछकर आए। उसने नीता को बुलाया। टीवी पर सब उनका पैर छूते थे, तो नीता ने भी जाते ही पैर छू लिया।

"मैं आपकी बहुत बड़ी फैन हूँ मैडम! मुझे डांस का बहुत शौक है, लेकिन कोई रास्ता समझ नहीं आता।"

उस जज ने नीता की आँखों में ना जाने क्या देखा, वो बोली, "हम सबने अपने रास्ते बनाए हैं। कोई रास्ता बना हुआ नहीं मिलता।"

नीता ने एक सेल्फी के लिए पूछा। उन्होंने बहुत प्यार से सेल्फी खिंचाई और अपना नंबर भी दिया।

नीता ने चलने से पहले कहा, "आप बहुत अच्छी हैं मैम! मैं जिंदगी भर

नीता की सारी थकावट अब मिट चुकी थी। उसने दो बजे की ट्रेन ली और शाम को घर पहुँची।

उसके इतनी जल्दी आ जाने पर पति खुश भी थे और आते ही उन्होंने ताना भी मार दिया, "पहले ही राउंड में बाहर हो गई, करा दी बेइज़्ज़ती!"

नीता ने अपने मोबाइल से उस जज के साथ सेल्फी दिखाई। पति और अर्जुन को विश्वास ही नहीं हुआ। मोहल्ले में आग की तरह खबर फैल गई कि फलाने शो की जज से नीता मिलकर आई है। मोहल्ले में एकदम से नीता की इज़्ज़त बढ़ गई। जो मिलता वो नीता के मोबाइल से फोटो देखता। नीता खुशी-खुशी वो तीन-चार फोटो दिखाती रही। एक दिन में नीता की लाइफ बदल गई।

जो नीता लौटकर आई थी वो दो दिन पुरानी वाली नीता से बदली हुई थी। इस ताम-झाम से जब उसे फुरसत मिली तो उसे याद आया कि उसके पास गहने नहीं हैं। उसको पहली बार बहुत डर लगा।

वो अपने पति को कैसे बताए ये बात, वो समझ नहीं पा रही थी। उसको ये बात बतानी भी नहीं पड़ी क्योंकि अगले दिन के अखबार में सुपर मॉम के नाम पर हुए फ्रॉड के बारे में खबर छपी थी। अखबार पढ़ते हुए पति खुश था,

“बढ़िया हुआ तुमने फीस माफ करा ली थी।”

नीता ने सबकी बात टाल दी ये कहकर कि वो तो अलग प्रोग्राम में गई थी। पति को यकीन नहीं हुआ। लेकिन उस सेल्फी की वजह से सबको यकीन हो गया। कभी-कभी लखनऊ से पुलिस का फोन भी आता लेकिन नीता अब उम्मीद खो चुकी थी।

एक दिन डरते-डरते हुए उसने ये बात सक्सेना आंटी को बताई। उसको लगा था कि वो उसको डाँटेंगी। उन्होंने अपनी बेटी से बात करके एक लाख का रुपये का इंतजाम किया।

“धीरे-धीरे करके दे देना और ये बात किसी को नहीं बताना।”

नीता सुनार के पास जब गहने लेने जा रही थी कि तभी उसकी नजर कॉलोनी के पास एक ‘टू लेट’ (किराए के लिए उपलब्ध) बोर्ड पर पड़ी। बच्चों के स्कूल वालों ने वो जगह खाली की थी। उसने अंदर जाकर पता किया। तीन महीने का किराया मिलाकर कुल पचास हजार रुपये देने थे। नीता अगर उस दिन घर लौटकर आती और सक्सेना आंटी से बात करती या अपने पति को फोन करके पूछती तो कभी अपना डांस स्कूल नहीं खोल पाती।

उस दिन लौटने पर पति बहुत नाराज हुआ था। नाराज तो सक्सेना आंटी भी हई थीं। पति ने छह महीने बात नहीं की।

नीता के कान में अब भी उस जज की आवाज गूँज रही थी- ‘रास्ता बनाना पड़ता है।’

शुरू के पाँच महीने स्कूल में बस इतने ही बच्चे आते कि वो उस जगह का किराया मुश्किल से दे पाती। नीता उनको जी-जान से सिखाती। नीता का सिखाया हुआ बच्चा जब एक सच के रियलिटी शो में पहुँचा तब जाकर नेशनल टीवी पर पहली बार नीता का नाम आया। ये एपिसोड अभी रिकॉर्ड ही हो रहा था। उस बच्चे ने बताया कि उसकी मैम अब स्कूल बंद करने वाली हैं।

जज ने जब उस बच्चे के मुँह से नीता का नाम सुना तो उसको कुछ याद आया। नीता को शाम को फोन आया कि मुंबई बुलाया गया है। उसका टिकट और रुकने का इंतजाम हो चुका था।

उस हिस्से की दुबारा शूटिंग हुई। अगले हफ्ते के एपिसोड में जब बच्चे ने अपनी टीचर का नाम लिया तब स्क्रीन पर नीता को बुलाया गया। उसके हाथ में माइक दिया गया। उस जज ने पूछा, “आपकी प्रेरणा कौन है?”

नीता के पास जवाब तैयार था। उसका जवाब उन हजारों औरतों के टूटे हुए सपनों से बना था।

“आप स्कूल क्यों बंद कर रही हैं?” जज ने जैसे ही पूछा, नीता ने अभी तक जो आँसू रोक रखे थे वो बहने लगे।

“मैडम, सही रास्ता मिलने के बाद भी उस पर चलना इतना आसान नहीं होता, लेकिन मैडम मैं थकी नहीं हूँ। फिर एक दिन स्कूल खोलूँगी। जब स्कूल खोला था तब कुछ पता नहीं था, लेकिन अब तो कम-से-कम एक स्कूल को खोलने और बंद करने का एक्सपिरियेंस है। तब तक स्कूल खोलती रहूँगी जब तक वो शाहजहाँपुर का सबसे बड़ा डांसिंग स्कूल नहीं हो जाता।”

नीता ने जब तक अपनी बात पूरी की, उस हाल में बैठे हर शख्स की आँखों में आँसू था। जज ने आगे बढ़कर नीता को गले लगाया।

“हम ऐसी सुपर मॉम का हौसला बढ़ाने के लिए हर साल ऐसे ही डांस को सपोर्ट करने के लिए हर सीजन में दस लाख की स्कॉलरशिप देंगे।” जज ने नीता का हाथ पकड़कर आसमान की दिशा में कर दिया। उस दिन नीता को आसमान में सचमुच के भगवान होने का यकीन आया।

जज ने नीता से पूछा, “आप मेरे साथ डांस करेंगी?” दोनों ने एक गाने पर साथ डांस किया। नीता ने उस दिन खूब बढ़िया डांस किया।

ये सब होने के बाद जब नीता शहर पहुँची तब ठीक उसी समय वो

को टीवी पर देखा। उनको यकीन नहीं हो रहा था कि ये सच में हो रहा है। एपिसोड एयर होने के बाद नीता और उसके पति का फोन बजना बंद ही नहीं हो रहा था। रात में दस बजे पूरी कॉलोनी नीता के घर के बाहर इकट्ठा थी।

अगले दिन सुबह से अखबार वालों की लाइन लगी हुई थी। अखबार वाले ने पहला सवाल पूछा, “आपकी प्रेरणा कौन है?”

नीता ने अपने पति की तरफ देखा और कहा, “मैं खुद ही अपनी प्रेरणा हूँ, प्रेरणा अपने अंदर होती है।”

अगले दिन अखबार के अंदर के पन्नों की हेडलाइन भी यही थी। नीता की जिंदगी, पति और पूरी कॉलोनी अब बदल चुकी थी। डीएम और एसपी के बच्चे भी अब नीता से डांस सीखने आते लगे। वो नीता को मैम कहकर बात करते थे। पति का ऑफिस में रुतबा बढ़ गया था। नीता को वो दो कमरे का घर छोटा पड़ने लगा था। नीता अब घर में सबसे पहले अखबार पढ़ती थी।

पेन फ्रेंड

तरु घबराई हुई थी। इसलिए नहीं कि फ्लाइट में टर्बुलेंस था, बल्कि इसलिए क्योंकि वो पहली बार मुंबई पहुँच रही थी। उसको उम्मीद नहीं थी कि ये ट्रिप कभी वो बना भी पाएगी। मुंबई के प्लान जब भी उसने बनाए थे किसी-न-किसी वजह से कैंसिल होते रहे। जिस भी शहर जाने के प्लान बार-बार कैंसिल होते हैं वहाँ पहुँचना ही अपने आप में कहानी पूरी कर देता है।

तरु, पार्थ से अपनी सात साल की बातचीत में पहली बार मिलने जा रही थी। तरु के बारे में जितना पार्थ को पता था उतना किसी को भी नहीं।

जब भी वो पार्थ को 'कैसे हो' का मैसेज करती, वो समझ जाता कि उस दिन तरु जरूर बहुत ज्यादा परेशान है। उनके रिश्ते की अच्छी बात यही थी कि वो कभी एक-दूसरे को अपनी परेशानी नहीं बताते थे, बस ये बता देते थे कि वो उस दिन परेशान हैं। दूसरा भी अपनी पूरी बातचीत में यही कोशिश करता कि उस परेशानी वाली बात की बात ना करके उस बात को दुनिया में कहीं और ले जाए।

कुछ देर में दोनों एक-दूसरे की परेशानी भूल जाते थे। ना वो एक-दूसरे को बर्थडे विश करते, ना ही एनिवर्सरी विश करते। कई बार तो बात किए हुए महीनों बीत जाते। उनको एक-दसरे का खयाल भी नहीं आता।

पार्थ ने कहा था वो लेने आएगा। तरु से अब बिलकुल भी इंतजार नहीं हो रहा था। लैंड करते ही उसने पार्थ को कॉल किया।

"यार ये मुंबई का ट्रैफिक, तुम अंदर ही रहना। मैं बोलूँगा तब निकलना।"

"कितना टाइम लगेगा तुम्हें?"

"आधे घंटे।"

"तुम्हें निकलने में अभी बीस मिनट लगेंगे, चेक इन लगेज है?"

"हाँ, एक दिन के लिए आई हो उसमें भी?"

"पार्थ, शटअप!"

जब तरु पार्थ को 'शटअप' कह रही थी, उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई।

तरु ने अगला फोन अपने पति को किया, "पहुँच गई। होटल पहुँचकर आराम से कॉल करूँगी।"

फोन की दूसरी तरफ से आवाज आई, "वहाँ माया मौसी का बेटा है ही, कोई दिक्कत होगी तो बता देना, आ जाएगा।"

तरु की अपने पति से फोन पर कभी दो लाइन से ज्यादा बात नहीं होती थी।

फ्लाइट का दरवाजा खुलने पर जब तरु के चेहरे पर मुंबई की हवा पड़ी तो उसने नमी को महसूस किया। आसमान में काले बादल थे।

बेल्ट पर सामान आ रहा था। लोग दो घंटे की फ्लाइट के बाद दस मिनट बेल्ट पर बिताने में ही सबसे ज्यादा बेचैन होते हैं। सबको ऐसा ही लगता है कि उनका ही सामान नहीं आ रहा।

तरु को अब कोई जल्दी नहीं थी। उसका सामान भी अभी तक नहीं आया था। इतने में पार्थ का फोन आया, "कहाँ हो, मैं आ गया हूँ।"

"अभी सामान नहीं आया।"

"बोला था ना टाइम से पहुँच जाऊँगा। गेट से निकलते ही दिख जाऊँगा।"

तरु सामान लेकर जब एग्जिट गेट की तरफ बढ़ रही थी तो उसने सोचा कि क्या सही में ये सच होने जा रहा है? पार्थ सही में बाहर आया होगा? क्या वो सही में मुंबई में है?

पार्थ ने हाथ में कार्ड बोर्ड पकड़ा हुआ था, जिस पर लिखा था- 'वेलकम टू मुंबई!'

तरु को बोर्ड देखकर खशी हई। पार्थ ठीक वैसा था जैसा अपने सोशल मीडिया अकाउंट में दिखता था। दोनों के लिए कोई सरप्राइज नहीं था। पार्थ ने कार्ड बोर्ड पास खड़े होटल वाले को पकड़ाया।

"तुमने बनाया नहीं था?"

"पागल हो क्या! ये सब ड्रामा पसंद है तुम्हें! वो तो सामने होटल वाले का दिख गया तो उससे दो मिनट के लिए माँग लिया।"

'पागल' कहते हुए तरु ने पार्थ को कोहनी मारी। एक-दूसरे को गले लगाने से पहले दोनों झिझके।

दोनों ने एक साथ कहा, "फाइनली!"

पार्थ ने तरु का सामान हाथ में ले लिया। तरु के हाथ में अब सिर्फ एक बैग था।

पार्थ और तरु के बीच बातचीत की शुरुआत एक मैगजीन में आने वाले कॉलम के जरिए हुई थी। मैगजीन में कुछ पते दे रखे थे जहाँ लोग एक-दूसरे को चिट्ठियाँ लिख सकते थे। पहली चिट्ठी तरु ने लिखी थी। चिट्ठी भी उसने केवल ये देखकर भेजी थी क्योंकि मुंबई का एक ही पता दिया हुआ था। उसने इस उम्मीद में चिट्ठी लिखी थी कि शायद कभी कोई जवाब न आए।

जवाब आना भी नहीं चाहिए था क्योंकि तरु ने पता नोट करने में गलती की थी। और इसी गलती की वजह से वो चिट्ठी पार्थ के घर पर पहुँची।

पार्थ का असली नाम पार्थ नहीं था। तरु ने वो चिट्ठी जिसके नाम लिखी थी उसका नाम पार्थ था। तरु ने अपना नाम बदलकर चिट्ठी भेजी थी ताकि कल को कोई दिक्कत ना हो। दोनों को अब एक-दूसरे का असली नाम पता था। लेकिन दोनों तरु और पार्थ नाम की छाँव में खुश थे।

जिंदगी बिस्तर की सिलवट जैसे हर सुबह उलझी हुई मिलती है। इसीलिए उलझी हुई सिलवट को वापस ठीक करने की कवायद में लोग जिंदगी के चार सिरे खींचकर रोज उसको सँवारते रहते हैं। जिंदगी का काम है उलझाना। आदमी का काम है सुलझाना और उस सुबह का इंतजार करते रहना जिस दिन सिलवट नहीं मिलेगी।

चिट्ठियों का सिलसिला फोन में बदला। दोनों की जिंदगी में तमाम परिवर्तन आए लेकिन एक गलत पते पर पड़ी चिट्ठी से जुड़ा हुआ रिश्ता बना रहा।

"तो मुंबई घुमाओ अब, इतना बोलते थे!" तरु की इस बात से पार्थ का ध्यान टूटा। वो तरु के खयाल में था। दूसरे का खयाल कई बार उस आदमी से ज्यादा नशा देता है।

"पहले होटल में चेक इन करते हैं, सी फेसिंग कमरा बुक किया है।"

समंदर दिखता हो। जिनके घरों से खिड़की खोलने पर समंदर दिखता है, पता नहीं उनकी जिंदगी कैसी होती है। लेकिन खिड़की खोलने पर समंदर दिखे ऐसी याद हर कोई बनाना चाहता था। उस समंदर की याद के सहारे बाकी उम्र काटने के लिए।

एयरपोर्ट से बाहर निकलने पर सड़क पर काफी भीड़ थी। तरु ने भोपाल में कभी इतनी भीड़ नहीं देखी थी जितनी वो अभी शुरुआत के दस मिनट में देख चुकी थी। बारिश शुरू हो चुकी थी। गाड़ियों का रेंगना शुरू हो चुका था। वे अभी थोड़ा ही आगे बढ़े थे कि एक टैक्सी वाले ने हाथ हिलाकर इनकी टैक्सी को रोका।

"टैक्सी खराब हो गई है। ये आंटी को दादर जाने का है। बैठा लेगा क्या भाई?"

ड्राइवर ने मना कर दिया कि सवारी है। पार्थ ने कहा, "रास्ते में तो है, बैठा लो। बाहर की लग रही हैं। पहली बार मुंबई आई हैं लगता है।"

उसने बोलने के बाद ध्यान दिया कि उसने तरु से तो पूछा ही नहीं। "बैठा लूँ न, तरु?" पार्थ ने तरु से पूछा।

"हाँ, मुझसे क्या पूछ रहे हो!"

तरु को मुंबई में पहली बार अपना नाम सुनकर अच्छा लगा। आंटी बरसात में पसीने-पसीने थीं। उन्होंने बैठते ही तरु और पार्थ को बहुत आशीर्वाद दिया।

"खुश रहो बेटा तुम दोनों, दस लोगों को पूछ लिया था, सबने मना कर दिया था।"

"कोई बात नहीं आंटी, आप टेंशन मत लो।"

ड्राइवर जो लगातार बढ़ती हुई भीड़ और बारिश को देख रहा था। बोला, "मुंसिपलटी वाला पता नहीं क्या तैयारी करते हैं सेठ, थोड़ा-सा पानी बरसा नहीं कि पूरा शहर जाम हो जाता है। लेकिन आप टेंशन मत लो आंटी।"

आंटी ने साँस में साँस ली। पार्थ को लगा कि अब तरु से बात कैसे करे। तरु भी यही सोच रही थी। इतने में आंटी ने ही पूछा, "तुम लोग मुंबई के रहने वाले हो?"

तरु या पार्थ में से पहले कोई जवाब देता, ड्राइवर बोला, "आमची मुंबई को बाहर वालों ने बनाएला है आंटी। सब बाहरगाँव के हैं यहाँ।"

आंटी ड्राइवर के जवाब से खुश नहीं थीं। वो दोबारा पूछने जा ही रही थीं कि तरु बोली, "अब तो दस साल से यहीं के हो गए हैं आंटी।"

तरु ने कहने के बाद पार्थ को कोहनी मारी। पार्थ बोला, "ये दस साल से है

यहाँ के।"

तरु ने पार्थ को प्यार से घूरकर देखा, जैसे बच्चे उस बैट्समैन को घूरते हैं जो शीशा तोड़ देता है।

"आप यहीं के हो आंटी?"

"यहिंच की हूँ बेटा, पति दो साल पहले ऑफ हो गए। बेटा दुबई रहता है। मेरी साइड वाला कोई बचा नहीं। अब जब तक हूँ तब तलक मुंबई ही अपना दोस्त-रिश्तेदार सब है।"

आंटी बोलते हुए अचानक रुकीं जैसे उनको कुछ याद आया हो। वो पार्थ की ओर घूमकर बोलीं, "मुंबई आए हो तो सिद्धिविनायक का दर्शन पक्का करने का, सब पूरा करते वो।"

"सही में करते हैं आंटी?" पार्थ ने पूछा।

ड्राइवर बीच में जोड़ते हुए बोला, "सब पूरा करते गणपति। अपुन सेठ का टैक्सी चलाता था। मैंने गणपति को बोला, अपुन को अपना टैक्सी चाहिए। गणपति ने दिया मेरे को।"

ड्राइवर ने स्टेयरिंग से हाथ हटाकर अपने माथे पर हाथ रखते हुए भगवान को याद किया।

पानी लगातार बढ़ता जा रहा था। पिछले एक घंटे में गाड़ी मुश्किल से तीन सौ मीटर बढ़ी होगी। फोन लगने में भी मुश्किल हो रही थी।

तरु के पति का फोन आया, "टीवी में तो दिखा रहे हैं कि मुंबई हाई अलर्ट पर है। तुम पहुँच गई?"

"पहुँचने ही वाली हूँ।"

"नहीं, बोलो तो मौसी के लड़के को भेजूँ?"

"यहाँ इतना जाम है कि कोई कहीं से कहीं नहीं पहुँच पाएगा, मैं पहुँचकर फोन करती हूँ आपको।"

तरु की बात पूरी होने से पहले फोन कट चुका था। तरु ने डायल किया लेकिन फोन लगा नहीं।

"मेरा पति बुरा आदमी नहीं था लेकिन काम बुरे थे उसके।" आंटी बिना किसी संदर्भ के व्याख्या कर रही थीं। तरु को लगा कि कुछ बुरे, अधूरे, टूटे-फूटे लोग इसलिए भी होने चाहिए ताकि उनकी बुराई की जा सके।

"क्या करते थे अंकल?" पार्थ ने इंट्रेस्ट लेना शुरू किया।

वो। बहुत पैसा बनाया इसलिए कैंसर हुआ उसको, बहुत दर्द में मरा। ऐसा हो गया था कि मर ही जाए तो अच्छा। उसका दर्द देखा नहीं जाता था। बच्चों माफिक रोता था वो। मैं बोली उसको, पाप-पुण्य सब हिसाब यहिंच करके जाना होता है।"

आंटी बोलने के बाद आसमान में देखने लगी। तरु ने पार्थ का हाथ पकड़ लिया। शाम पसर चुकी थी।

हाथ पकड़कर कैसा लगता है इस पर किताब लिखी जा सकती है। लेकिन तरु को ऐसा लगा जैसे वो कहीं बिल्डिंग से गिर रही थी और अचानक गिरने से उसकी नींद खुली और पार्थ ने उसको थाम लिया। उसने थोड़ा और जोर से पार्थ का हाथ पकड़ लिया। मुंबई तरु पर चढ़ने लगा था। उस पल उसको तमाम सुनी हुई राजा-रानी की कहानियों पर यकीन हो गया।

पार्थ चुप हो गया। उसकी आँखों में आँसू था।

पार्थ को उस बूढ़े की कहानी याद आई जो दुनिया को देखकर चौराहे पर रोता था और हाथ में बड़ा-सा कागज लेकर चिल्लाता था कि 'सब यहीं धरा रह जाएगा।' पार्थ जिस दिन उसको खाने को देता उसको उस दिन अच्छी नींद आती।

पार्थ को लगा कि वो गाड़ी में हाथ पकड़े थोड़ी देर के लिए सो जाए। तरु ने अपना कंधा पार्थ के सर पर रख लिया।

"साल 2005 में भी ऐसी बारिश हुई थी, बहुत लोग ऑफ हो गए थे।" आंटी ने अपनी बोतल से पानी पीते हुए कहा।

"यहाँ मरे हुए को ऑफ हो गए क्यों बोलते हैं आंटी? आदमी है, पंखे का स्विच थोड़े है कि ऑन-ऑफ होगा।" पार्थ ने ऊँघते हुए कहा।

"मेरे को क्या पता, सब ऐसहिच बोलते इधर। तू नया है ना इधर। भोपाल में कोई मरता है तो क्या बोलते हैं उधर?"

पार्थ को आंटी से ऐसे सवाल की उम्मीद नहीं थी। तरु को आंटी के सवाल से हँसी आ गई। उसने आँखों से इशारा किया- 'अब दो जवाब!'

"वहाँ तो मर गए को मर गए ही बोलते हैं आंटी।" पार्थ ने सोच-समझकर जवाब दिया।

"ऑफ हो गए, सुनने में बड़ा लगता है। ऐसा लगता है मरने वाले को कुछ इज़्ज़त मिला।" ड्राइवर ने इस उम्मीद में ये बात बोली कि शायद सब लोग हँसेंगे। पर कोई नहीं हँसा।

पार्थ जब भी तरु से मिलने के लिए पूछता तो बोलती कि जब एक पूरे दिन बरसात नहीं रुकेगी उसके अगले दिन कहीं चलेंगे। वो मजाक में कहता कि

तरु जब उदास होती तो पार्थ को कोई लंबी कहानी सुनाने के लिए बोलती। कोई ऐसी कहानी जिसमें सब अच्छा-अच्छा हो। पार्थ उसको समझाता भी कि ऐसी कोई कहानी होती ही नहीं जिसमें सब अच्छा हो। इस पर वो कहती, "क्यों, हमारी कहानी में बुरा कुछ हुआ है कभी? चलो सुनाओ।"

पार्थ किसी पढ़ी हुई कहानी या देखी हुई फिल्म का किस्सा उसके हिसाब से तोड़-मरोड़कर उसको सुनाता। जहाँ वो किस्सा थोड़ा-सा उदास होने लगता तो तरु तुरंत कहती कि मजा डालो इसमें। वो कहानियाँ बदलवाती रहती, और पार्थ बदलता रहता।

"टैक्सी में रेडियो नहीं चलता?" आंटी ने पूछा।

ड्राइवर ने रेडियो को एक-दो बार ठोका, हल्की-सी आवाज आनी शुरू हुई- 'मुंबई में हर जगह पानी भर चुका है। जो लोग जहाँ भी हैं जगह देखकर रुक जाएँ। मौसम विभाग ने आशंका जताई है कि मुंबई में अगले चौबीस घंटे पानी नहीं रुकने वाला। एक-दूसरे की मदद कीजिए, बारिश का अपना फेवरेट गाना मुझे कॉल करके बताइए।"

"आज मरेंगे लोग।" आंटी ने चेहरे पर बिना कोई भाव लाते हुए कहा। ड्राइवर ने बात काटते हुए कहा, "ऐसे मत बोलो आंटी।"

आंटी नाराज हुईं। तरु को अब घबराहट हो रही थी।

"हम यहाँ कहीं आस-पास नहीं रुक सकते?" तरु ने पार्थ से धीरे से पूछा।

"एक बार पहुँच जाएँ, वहाँ से सुबह बहुत अच्छी दिखती है। स्पेशल कमरा बुक किया है।"

पार्थ ने तरु का हाथ पकड़ लिया।

रात के नौ बज गए थे। टैक्सी वाले ने मीटर बंद कर दिया था।

"अपने हिसाब से देख लेना सेठ। सब पर आफत आई है, मीटर से चलूँगा तो हजारों का बिल आ जाएगा।"

तरु के मोबाइल पर न फोन आ रहा था, न जा रहा था। उसने पार्थ का मोबाइल लेकर अपनी एक सहेली को फोन मिलाया, पर उसे भी फोन नहीं लगा। रेडियो जॉकी की आवाज में अब घबराहट भी थी और एक झूठी राहत देने की कोशिश भी।

"बहुत भूख लग रही है।" तरु ने कहा।

"कुछ नहीं मिलेंगा इधर।" ये कहते हुए आंटी ने अपने झोले से बिस्कुट का एक पैकेट निकाला। चारों लोगों ने एक बराबर बिस्कट खाए।

"मुंबई काफी रोमांटिक है।" पार्थ कहकर हँसा।

"आप टेंशन ना लो सेठ, अपुन खाने का कुछ करता है।"

वैसे भी गाड़ी ज्यादा आगे बढ़ नहीं रही थी। वो गाड़ी कोने में करके एक गली में गया। जब वो लौटा तो उसके हाथ में चार वड़ा पाव थे।

"कितना हुआ इसका?" पार्थ ने पूछा।

"आप खाओ ना साहब, टेंशन नहीं है।"

आंटी ने पहले वड़ा पाव सूँघा फिर खाया। आंटी को वड़ा पाव सूँघता देखकर ड्राइवर बोला, "आंटी वड़ा पाव अच्छा है। मेरे एक दोस्त की लुगाई ठेला लगाती है इधर। वही दोस्त मेरे को डिराइवरी सिखाया। ऐक्सिडेंट में ऑफ हो गया, तो अपुन कभी-कभी हाल-चाल लेने आता है इधर।" ड्राइवर ने एक साँस में सब बोल दिया और एक बार में पूरा वड़ा खा लिया।

"मेरा घर यहाँ से बस दो किलोमीटर दूर है। तुम लोग उधरिच रुक जाना।"

तरु, पार्थ या ड्राइवर, किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। आंटी ने दुबारा नहीं

पूछा।

"मिलते हैं पार्थ।"

"क्यों मिलना है?"

"मुझे नहीं पता, तुम्हें नहीं मिलना तो भी मुंबई तो आऊँगी ही।"

"क्या बोलकर आओगी?"

"कुछ भी बोल दूँगी... यही कि मेरा इंटरव्यू है।"

"अच्छा!"

"आऊँ ना?"

"कमरा एक बुक करूँ या दो?"

"जो तुमको ठीक लगे। लेकिन अच्छा वाला करना, जिसमें बाथटब हो।"

तरु थकी हुई थी, शायद इस दिन के लिए इतने झूठ बोले थे कि जब यह दिन सामने आकर खड़ा हो गया था तो सब बोले हुए झूठ की थकावट भी साथ आ गई थी। चिट्ठी के साथ लिफाफा भी कुछ खबर लेकर आता है जैसे।

आंटी भी अब सो चुकी थीं। ड्राइवर ने गाड़ी बंद कर दी थी। पार्थ की

माथे पर ठीक बिंदी वाली जगह पर अपने हाथ रख दिए। ड्राइवर ने देखा लेकिन उसने अपनी नजरें हटा लीं। तरु ने अपने होंठ पार्थ के माथे पर रखे। पार्थ बर्फ पर तेज धार से पड़ते हुए पानी की तरह हो गया।

तरु ने पार्थ का हाथ इतनी जोर से पकड़ा, जैसे उसका बच्चा जब सपने में डर जाता है तो उसको जोर से पकड़ लेता है। दोनों की साँसें तेज हुईं।

"कब पहुँचेंगे?" तरु ने पूछा।

"मुश्किल है मैडम।" ड्राइवर ने आँख बंद किए हुए ही जवाब दिया।

रात के दो बजे थे। अब तक दादर नहीं आया था। सड़क पर पुलिस वालों के शोर से सबकी आँख खुली। वो लोग कार को वहाँ से घूमवा रहे थे। आंटी चिल्लाई, "मेरा घर बस सौ मीटर पर है। चलो उतरो तुम लोग, मेरा घर आ गया। वहीं रुको, सुबह जाना।"

आंटी ने जैसे पूछा था, तरु और पार्थ के पास कोई ऑप्शन नहीं था। आंटी का घर एक पुरानी बिल्डिंग में था। आंटी के घर में कुल एक बड़ा कमरा था। उसी कमरे में किचन था।

पानी अब भी बरस रहा था। घर में घुसते हुए वो भीग चुके थे। आंटी ने

झटपट पराठे सेंक दिए। घर में हर चीज बहुत सलीके से रखी हुई थी। ड्राइवर ने गाड़ी वहीं बिल्डिंग के नीचे लगा ली। वो ऊपर नहीं आया।

"सुबह आपको छोड़ते हुए निकल जाऊँगा सेठ।"

पार्थ ने जेब से हजार रुपये निकालकर उसकी तरफ बढ़ाए। ड्राइवर ने आधे से ज्यादा पैसे वापस कर दिए।

"आज पैसे क्या कमाना सेठ, मैं नीचे ही है। अपुन गाड़ी में सो जाएगा।"

आंटी ने पराठा बनाने के बाद उस ड्राइवर को पराठा देने के लिए पार्थ को नीचे भेजा। तरु आंटी की मदद कर रही थी। जब पार्थ नीचे गया तो आंटी ने तरु से पूछा, "तुम लोग बच्चा नहीं बनाया?"

"इस साल बनाने वाले थे आंटी।" तरु ने जितनी तेजी से जवाब दिया, वो एक मिनट के लिए भूल ही गई कि वो मुंबई सिर्फ एक दिन के लिए आई है।

आंटी प्लेट में कैरी का अचार डालते हुए बोली, "दो बच्चे बनाने का, एक बच्चा होता तो छोड़कर चला जाता। एक बच्चे को हमेशा अपने पास रखने का। मेरा हसबैंड बोलता था लेकिन मैंइच पागल थी, बना लेना था।"

प्लेट लगाने के बाद दोनों पार्थ का इंतजार करने लगे।

"प्यार-व्यार करता है ना तुमको?"

आंटी कुछ-न-कुछ बोलती रहीं। खाने के बाद आंटी ने वहीं सामने बिस्तर लगा दिया और बीच में जहाँ कपड़ा टाँगने के लिए रस्सी लगी थी, वहाँ पर एक बड़ी-सी चादर बिछा दी।

आंटी लेटने के पाँच मिनट बाद ही खर्राटे मारने लगीं। तरु ने शरारत में पार्थ के कान में कहा, "आंटी ने कहा है बच्चा बना लेना।"

"तुमने क्या कहा?"

"आंटी बड़ी हैं, उनकी बात को मना कैसे कर सकती हूँ?"

दोनों एकदम धीरे-धीरे हँस रहे थे। दोनों चाहकर भी एक-दूसरे को जितना छूना चाह रहे थे, छू नहीं पा रहे थे। इस रात के बारे में उन्होंने ना जाने कितने तरीके से सोचा था। उनको मलाल नहीं था, वो साथ थे ये बात काफी थी।

दोनों सोए नहीं। पार्थ को ऐसा लगा कि सुबह तक हालत सही हो गई होगी। अब होटल जाया जा सकता है। दोनों धीरे से उठकर तैयार हुए। तरु ने आंटी को धीरे से उठाया। आंटी उठकर बिना कुछ कहे चाय बनाने लगीं। उन्होंने फ्रिज में देखा तो दूध नहीं था।

"कल गिर गया था दूध, ऐसे तो रोज रहता है। मैं रोज पीती है एक कप।"

तरु और पार्थ ने बिना दूध की चाय पी और नीचे जाकर ड्राइवर को उठाया। सूरज अभी उगने को था। मरीन ड्राइव पर समंदर के पड़ोस में गाड़ी चलते हुए तरु सुबह को होते हुए देख रही थी। ड्राइवर ने जब होटल के ठीक सामने टैक्सी लगाई तो तरु ने पार्थ को समंदर के पास बैठने को कहा।

अब भी हल्का-हल्का पानी बरस रहा था। तरु पार्थ के साथ बैठकर कुछ देर भीगती रही। समंदर से बड़ी-बड़ी लहरें आ रही थीं। तरु अपने आप को पानी में बहुत देर तक धुलती रही, जैसे कोई गंगाजी में अपने पाप धुलता है।

ड्राइवर वहीं पास ही सवारी के इंतजार में रुका हुआ था। वो पार्थ और तरु के चेहरे देखकर समझ नहीं पा रहा था कि दोनों हँस रहे हैं कि रो रहे हैं।

रेडियो पर खबर आ रही थी कि एयरपोर्ट के रास्ते में जाम है। तरु की वापसी की फ्लाइट 11 बजे की थी। अब उनके पास इतना समय नहीं था कि होटल में जाकर रुक पाएँ। तरु अपनी फ्लाइट छोड़ नहीं सकती थी।

पार्थ ने ड्राइवर को रुकने का इशारा किया। उन्होंने होटल में चेक इन किया। दोनों ने अपने आइडेंटिटी प्रूफ दिए। उन्होंने कमरे में जाकर एक बार मुंबई के समंदर को जी भर के देखा। उनके पास बातें नहीं थीं। उन्होंने एक-दसरे को जोर से गले लगाया।

"चलो देर हो जाएगी।" पार्थ ने तरु के माथे के पास होंठ रखकर कहा।

तरु ने फटाफट कपड़े चेंज किए और पंद्रह मिनट के अंदर दोनों ने चेक आउट कर दिया। उस होटल का रजिस्टर दुनिया में इकलौती जगह थी जहाँ पर तरु और पार्थ का नाम एक साथ लिखा था।

ड्राइवर ने भागते हुए इधर-उधर के शॉर्टकट लेकर तरु को फ्लाइट के समय एयरपोर्ट पहुँचा दिया। पूरे रास्ते भर दोनों की कोई बात नहीं हुई।

तरु जब उदास होती है तो मैसेज करती है- 'कैसे हो?' और पार्थ नई कहानियाँ ढूँढकर रखता है जो उसको सुना सके।

तरु अब बस पुरानी कहानियाँ सुनना चाहती है। कहानियों के वो हिस्से जिसमें उन्होंने मजा डाला था, वो अब दोनों ही भूल चुके हैं। उदासी है कि जाती ही नहीं। नई कहानियाँ बनाने की उम्र वो दोनों कब की पार कर चुके हैं।

तरु मुंबई बार-बार आना चाहती है, लेकिन घर-गृहस्थी में कभी मौका नहीं मिलता। पार्थ हर बरसात में अपनी खोयी हुई मुंबई की रात को ढूँढता है। तरु जब टीवी पर मुंबई की बरसात की खबर देखती है तो उसे उन दो लोगों की चिंता होती है जो कहीं अटके हुए होंगे और उस बरसात के दिन पहली

बार मिले होंगे।

तरु को मुंबई आए सोलह साल हो गए, पार्थ को इंतजार करते हुए सोलह साल दो घंटे।

भोपाल से मुंबई दो घंटे ही दूर है लेकिन बीस साल से भोपाल मुंबई नहीं पहुँचा, बीस साल से मुंबई भोपाल नहीं जा पाई। चिट्ठियाँ अब गलत पते से लौट आती हैं, उन्होंने गलत पते पर पहुँचकर सही होना बंद कर दिया है।

कहानियाँ वो पेड़ हैं जिसमें लोग छाँव ढूँढने आते हैं। पार्थ कहानियाँ ढूँढता है और तरु उन कहानियों में छाँव। जब पार्थ वो कहानियाँ भूल जाता है तब तरु उन्हें याद दिलाकर दो लोगों भर की छाँव इकट्ठा करके अपने कपड़े की अलमारी में बिछे अखबार के नीचे छुपा लेती है।

खिलौना

लखनऊ में अलीगंज वाले हनुमान जी का मंदिर। जो माँगो सब मिलता है यहाँ, ऐसा वो लोग कहते हैं जिनको मिल जाता है। जिनको नहीं मिलता वो नहीं मानते। वो कोई दूसरा मंदिर ढूँढ लेते हैं। एक न एक दिन या तो मंदिर मिल जाता है या वो इच्छा मर जाती है। मंदिर जाना ईश्वर के होने ना होने से ज्यादा बड़ी चीज है। जैसे विश्वास पहले होना और फिर उस विश्वास का सच हो जाना। जैसे बच्चे का माँ की महक से पहला रिश्ता बनना, फिर कुछ साल बाद जानना कि ये महक ही माँ है।

ये कहानी अलीगंज वाले हनुमान मंदिर की नहीं है, बल्कि उसके पास से निकलने वाले एक चौराहे पर लगे हुए पीपल के पेड़ के पंडा रुद्र नारायण की है।

रुद्र नारायण कहाँ के हैं, इस पेड़ के नीचे मंदिर कब से है, किसी को कुछ नहीं पता। उनके बैठे होने से कब एक पत्थर से दो पत्थर हुए और एक दिन वो पेड़ के नीचे छोटा-मोटा मंदिर हो गया। एक दिन सुबह वो इस पेड़ पर आकर बस गए और यहीं के होकर रह गए। कुछ दिन में सब उनको पहचानने लगे।

रुद्र नारायण जी की खास बात यही है कि हमेशा मुस्कराते रहते हैं। लोग अपनी समस्या सुनाते, वो मुस्कुरा देते। आसमान में देखते हुए सामने वाले से कह देते, "बोल दिया है, काम हो जाएगा।" जिसका काम हो जाता है, वो आकर पैर में गिर जाता है। न कभी कोई मंत्र पढ़ा ना कोई पूजा बताई। बस मुस्कुराकर कंधे पर हाथ रख देना। ये इतना आसान था कि लोगों को यकीन ही नहीं होता कि पंडित जी ने कुछ किया या नहीं। उनको लगता कि पंडित जी का ऊपरवाले से कोई डायरेक्ट कॉन्टैक्ट है।

पुरानी कई किताबों में लिखा है कि मुस्कुराकर समस्या हल की जा सकती है, लेकिन लोग आसान बातें मानते कहाँ हैं। आँसू, मुस्कुराहट, ओस, हँसी, गुदगुदी और स्पर्श जैसी आसान बातों पर अब लोगों का यकीन नहीं रहा।

ऐसे ही जिन लोगों का काम होता गया, वो रुद्र नारायण को कुछ-न-कुछ देते गए। वो कभी किसी से पैसा नहीं माँगते, अगर कोई देता तो मना भी नहीं करते।

दुनिया में रहकर भी वो ऐसे रहते हैं कि उनकी वजह से ये दुनिया डिस्टर्ब न हो जाए। ज्यादा किसी से बात करते उनको नहीं देखा गया है। किसी ने पास में घर दे दिया, तो वहीं रहने लगे। खाना कोई-ना-कोई दे ही जाता है। सुबह-सुबह नहा-धोकर वो आकर मंदिर में बैठ जाते हैं।

जो कोई आता है, उसको बस एक ही चीज बोलते हैं- "काम हो जाएगा।" शायद ही कोई ऐसा हो जिसको उन्होंने ऐसा बोला हो कि काम नहीं होगा।

इसी पीपल के पेड़ के पास एक चाय की दुकान थी जिसमें छोटू काम करता था। मंदिर से निकलते हुए लोगों को देखकर उसका मन करता कि वो भी भगवान से कुछ माँगे। उसके पास माँगने को इतना कुछ था लेकिन जब मंदिर में जाता तो उसे समझ ही नहीं आता कि वो शुरू कहाँ से करे, इतना कुछ जो है माँगने के लिए। अगर सही में भगवान सामने आ ही जाए तो ज्यादातर लोग कुछ भी माँग ही नहीं पाएँगे।

दुकान पर वो दिन भर गाली सुनता है। एक दिन वो मंदिर जाकर बैठ ही गया कि आज तो बिना कुछ माँगे मंदिर से नहीं जाएगा। उसको मंदिर में बैठे हुए देर हो गई। इतने में उसका मालिक आया और उसको माँ की गालियाँ दीं। छोटू ने तुरंत ही भगवान से यह माँग लिया कि 'भगवान! उसकी मरी हुई माँ को कोई गाली न दे।'

छोटू अपने बाप से नाराज है इसलिए कभी घर नहीं जाता। यहीं मंदिर के पास वाले पेड़ के नीचे सो जाता है। रुद्र नारायण ने उसको कभी भगाया नहीं।

भगवान पर उसकी बात का कोई असर होता उसको दिख नहीं रहा था। रोज गालियाँ वैसे ही पड़ रही थीं। ऐसे ही जब एक दिन गाली सुनकर वो

बाबा हँसे और आसमान की तरफ इशारा करके बोले, "बोल दिया है। हो जाएगा।"

बच्चा बोला, "कब सुनेंगे, इतने दिन तो हो गए?"

उस दिन किसी की मंशा पूरी हुई थी तो वो बाबा के लिए खाना देकर गया था। बाबा ने पूछा, "खाना खाओगे?"

बच्चा कोई जवाब देता इससे पहले बाबा खाना लगा चुके थे। बच्चे ने पेट भरकर खाना खाया। बाबा पूरे समय मुस्कुराते रहे। खाना खाने के बाद बच्चे ने पूछा, "आप क्या माँगते हैं भगवान से?"

"कुछ नहीं माँगता।"

"क्यों, आपको कुछ नहीं चाहिए?" बच्चे ने बताशा खाते हुए पूछा।

"नहीं।"

"क्यों नहीं चाहिए? सबको कुछ चाहिए होता है।"

"हाँ लेकिन मेरे पास सब है, तो कुछ माँगकर क्या फायदा?" बाबा ने चबूतरे पर से सामान समेटते हुए कहा।

"भगवान होता है?"

बच्चे के सवाल रुक नहीं रहे थे। खाली पेट इतने सवाल नहीं थे, पेट भरते हुए वो एक के बाद एक सवाल पूछ रहा था। बाबा मुस्कुरा दिए।

"बताइए ना, कोई है आसमान में?" बच्चा बिना जवाब सुने हिलने वाला नहीं था।

"सच बताऊँ?"

बच्चे को इस दुनिया के सबसे बड़े सवाल का जवाब मिलने वाला था।

"आसमान में कोई भगवान नहीं है।"

बच्चे को इस जवाब की उम्मीद नहीं थी।

"और मंदिर में?"

"वहाँ भी नहीं।"

"फिर आप जो सबको कहते हैं कि बोल दिया है, किसको कहते हैं?"

बाबा मुस्कुराकर बोले, "कल के लिए भी कुछ छोड़ दो।"

अगले दिन सुबह-सुबह लखनऊ विकास प्राधिकरण (लखनऊ डिवेलपमेंट अथॉरिटी) की गाड़ी आई और अधिकारियों ने मंदिर को वहाँ से हटा दिया। कछ लोगों ने विरोध किया लेकिन सुप्रीम कोर्ट का ऑर्डर था कि सड़क पर अवैध मंदिर नहीं हो सकते।

ये सब कुछ बाबा की आँखों के सामने हुआ। वो पास खड़े मुस्कुराते रहे। आस-पास के कई लोग तमाशा देख रहे थे। बच्चा बाबा को देख रहा था। वो दुकान से एक कुल्हड़ चाय बाबा के लिए लेकर आया। बाबा ने बड़े ही प्यार से वो चाय पी। कुल दो घंटे में सब कुछ समतल हो चुका था।

आस-पास के सैकड़ों लोग जिनका काम उस मंदिर से पूरा हुआ था, उनको अब एक नया मंदिर ढूँढना था। कुछ लोगों ने नेतागिरी भी करने की कोशिश की लेकिन सुप्रीम कोर्ट के ऑर्डर के बाद वैसा संभव नहीं हुआ।

बाबा ने अपना झोला उठाया और धीरे से वहाँ से चल दिए। बच्चा दुकान छोड़कर उनके साथ चल दिया।

"अब कहाँ जाएँगे?"

"तुम वापस जाओ, घरवाले परेशान होंगे।" बाबा ने झोले से प्रसाद निकालकर उस बच्चे को दिया।

"जाने से पहले ये तो बता दीजिए भगवान कहाँ हैं?" बच्चे ने मासूमियत से पूछा।

बाबा ने उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा, "अंदर!"

बच्चे को जवाब समझ नहीं आया। इससे पहले बाबा कुछ बोलते, बच्चा बोला, "ये मत कहना कि बड़ा होकर समझ आ जाएगा।"

बाबा मुस्कुराकर बोले, "बड़े लोगों से भगवान खो जाता है। जैसे बच्चों से खिलौना खो जाता है।"

बच्चा बाबा को पकड़कर बहुत देर तक रोता रहा। बाबा ने उसे चुप नहीं कराया। जब बच्चा चुप हो गया तब बाबा ने कहा, "अब जाओ।"

बच्चा जब दुकान पहुँचा तो मालिक ने उसे उस दिन गाली नहीं दी। बच्चा गाली का इंतजार करता रहा। चाय की दुकान पर लोग मंदिर के तोड़े जाने को लेकर सरकार को गालियाँ दे रहे थे। 'वो सरकार होती न, तो औकात नहीं होती मंदिर तोड़ने की। बहुत माना हुआ था मंदिर, जो माँगो मिलता था।'

बच्चा दिन भर लोगों की बात सुनता रहा। उसको विश्वास हो गया था कि भगवान सही में होता तो मंदिर कैसे टूटता! बच्चे को ये भी विश्वास हो गया कि उसने जो कुछ भी माँगा था वो अधूरा रह जाएगा।

बाबा रुद्र नारायण ने हरिद्वार की ट्रेन पकड़ी। रास्ते में उनके बाबा वाले कपड़े देखकर लोगों ने खाना खिला दिया। एक-दो लोगों ने जब अपना भविष्य पूछा तो बाबा ने मुस्कराते हए वही जवाब दिया, "काम हो जाएगा।"

हरिद्वार में वो एक आश्रम पहुँचे। एक-दो दिन रुके लेकिन मन नहीं लगा। बहुत देर तक गंगा के किनारे बैठे रहे। कुछ लोग आकर उन्हें पैसे देते गए। बाबा मुस्कुरा नहीं रहे थे। वो गंगा घाट पर रात भर बैठे रहे। सुबह तक उनको बहुत ठंड लगती रही। बहुत ठंड लगने पर घर के बिस्तर की याद आती है।

बाबा ने फिर ट्रेन पकड़ी। जहाँ वो उतरे वो स्टेशन भोपाल था। भोपाल में बड़े आलीशान घर का दरवाजा खटखटाने से पहले वो कुछ देर बाहर रुके। जैसे मन में कोई दुविधा हो। खैर, जब उन्होंने दरवाजा खटखटाया तो घंटी के पास लगे कैमरे से आवाज आई, "बाबा जाओ, बाद में आना।"

बाबा ने बड़ी उम्मीद से घर को देखा और लौट गए। एक दिन पास में एक मंदिर में रुकने के बाद अगले दिन फिर उसी घर पहुँचे। घर के पास पहुँचने से पहले उनकी चाल धीमी पड़ जाती। दरवाजा इस बार खुला था। एक बड़ी गाड़ी से एक आदमी कहीं निकल रहा था। उसके बीवी-बच्चे उसको विदा कर रहे थे।

बाबा को दरवाजे पर देख छोटा बच्चा बोला, "मम्मा भिखारी, मैं पैसे दूँगा।" बच्चा करीब सात साल का था।

बच्चे की माँ मुँह बनाते हुए अपने पति से बोली, "रुको पानी लेकर आती हूँ। प्रसाद खाकर जाना। पता नहीं कहाँ से आ जाते हैं!"

अंदर घुसने से पहले उसने बाबा से कहा, "टाइम देखकर नहीं आ सकते?"

बाबा अब मुस्कुरा नहीं रहे थे। उनकी नजर उस गाड़ी वाले आदमी पर थी, जो कहीं फोन पर किसी को बता रहा था कि बस दस मिनट में पहुँच जाएगा। अंदर से वो औरत दस रुपये का नोट लेकर आई। बच्चे ने लपककर नोट लिया और फौरन बाबा के हाथ में रख दिया। बाबा ने उसके सिर पर हाथ रखा तो माँ गुस्से में चिढ़ गई।

"छुआ कैसे? अब हो गया ना, जाओ अब!"

एक ट्रे में ग्लास और प्रसाद लेकर उस औरत ने अपने पति को दिया। पति ने कार का शीशा खोला। तब बाबा बोले, "निर्मला है?"

अब पहली बार उस आदमी का ध्यान बाबा की शक्ल पर गया। वो घबराकर कार से नीचे उतरा। उसने बाबा के पैर छूए। उनको अंदर लेकर गया। तुरंत अपनी सभी मीटिंग कैंसिल की। बीवी को कुछ समझ नहीं आ रहा था।

जब वो उसको हॉल में लेकर जा रहा था तो बीवी ने सर्वेंट रूम की ओर इशारा किया। उस आदमी ने अपनी बीवी की बात पर ध्यान नहीं दिया।

बाबा के पास कोई कपड़े तो थे नहीं। लड़का जब उनको कमरे में बैठा रहा था तब उसका ध्यान बाबा के पसीने की महक पर गया। उसमें ठीक पहले जैसी ही महक थी। उनको कमरे में बैठाने के बाद जैसे ही वो बाहर आया, बीवी ने पूछा, "कौन हैं ये?"

"पापा!"

"तुमने तो कहा था वो मर गए, तुमने झूठ बोला था?"

पति ने किसी भी बात का उस समय जवाब देना ठीक नहीं समझा। उसने अपना ढीला कुर्ता-पाजामा उनको दिया। बाथरूम दिखाया।

बाबा ने पूछा, "निर्मला कहाँ है?"

"आप नहा-धो लीजिए, मिलवाता हूँ।"

इधर बेटे ने अपने ऑफिस में छुट्टी के लिए कह दिया। बीवी ने जिद पकड़ ली कि पहले इनका मेडिकल टेस्ट कराओ, पता नहीं कहाँ-कहाँ से कौन-सी बीमारी लेकर आ रहे हैं।

बाबा कुर्ता-पाजमा पहनकर अपने कमरे में एक तरफ बैठे थे। उनका पोता

डरते हुए कमरे में आया।

"आप अब हम लोगों के साथ रहेंगे?"

बाबा ने कुछ नहीं कहा। बेटा बोला, "रुद्र नाम रखा है इसका।" फिर बेटे ने पोते से कहा, "दादाजी हैं, पैर छुओ इनके।"

बहू ने तुरंत अलमारी से पहनने लायक कपड़े ढूँढे और वो कमरे में नाश्ता लेकर आई। बाबा ने आराम से नाश्ता किया। खाते हुए उनकी नजर कमरे में उनकी और निर्मला की तस्वीर पर गई।

लड़के ने बाबा को अस्पताल ले जाकर तमाम टेस्ट कराए, दाढ़ी बनवाई, कपड़े दिलवाए। रास्ते भर कोई बात नहीं हुई। लड़के की आँखों में रह-रहकर आँसू आ रहे थे।

जब बाबा का एक भी निशान शरीर पर नहीं बचा तब बेटा उनको घर में एक कमरे में लेकर गया।

निर्मला पिछले कुछ साल से ज्यादा चलती-फिरती नहीं थीं। उनकी याददाश्त लगभग जा चुकी थी। कभी-कभार कुछ पुराना याद आ जाता तो तबीयत खराब हो जाती। उनको बस पोते के बाद का याद था, उसके पहले का सब कुछ मिट चुका था। पोते का नाम उनको याद था। किसी नये से मिलतीं तो घबरा जातीं।

उनकी आँखों से पानी बहने लगा। निर्मला ने उनको रोता देख अपने बेटे से पूछा, "इनका कोई खिलौना खो गया है क्या? ये रो क्यों रहे हैं?"

बाबा ने निर्मला का हाथ पकड़ लिया और वहीं जमीन पर बैठ गए। निर्मला बोलीं, "बोल दूँगी भगवान जी को, काम हो जाएगा। ध्यान से रखना चाहिए था न खिलौना!"

नर्स खड़ी देख रही थी। बेटा अपने माँ-बाप को कमरे में छोड़कर बाहर आ गया।

बाबा के टेस्ट की रिपोर्ट्स आ चुकी थीं। उनको कोई भी बीमारी नहीं थी। पोता अपने दादा जी के साथ घुलमिल गया था। वो मोहल्ले भर के बच्चों को बताता कि उसके दादाजी लौट आए हैं। वो बहुत बड़े बाबा हैं।

बाबा ने अपने आप को समेट लिया था। बाबा को आए डेढ़-दो महीने बीत गए। बीवी कुछ दिनों के लिए मायके गई थी। एक दिन उनके बेटे ने पूछा, "आपको ये नहीं लगा कि हम लोगों का क्या होगा? मम्मी पर कितनी मुश्किल आई पता है? उनका इंतजार खत्म हो जाए इसलिए मैंने उन्हें बता दिया था कि आप मर गए हैं। लेकिन वो कभी मानी ही नहीं।"

बोलते-बोलते बेटे की आँखें भीगने लगीं। बाबा सुनते रहे। बेटा बोलते-बोलते चुप हो गया। उसको जवाब चाहिए भी नहीं था शायद। अपने कमरे में जाकर कुछ देर तकिया पकड़कर रोता रहा। वो जब रो रहा था तब 35 साल का नहीं, 21 साल का लड़का हो गया जिसके लिए बाप मर चुका था।

मरे हुए लोग अगर लौट आएँ तो क्या हमें सुख मिलेगा या हम शायद सब शिकायतें करके पहले अपने आप को खाली करेंगे?

बेटा कुछ हल्का हो गया। ऐसा कहते हैं कि दो-तिहाई धरती पर पानी है, शरीर में भी है। आँसू छटाँक भर हैं, लेकिन भारी बहुत हैं। इतना भारी कि इस धरती पर सबसे बड़े फैसलों के पीछे कहीं-न-कहीं इसी पानी का हाथ है।

15 साल बाद घर लौटना। वो घर जिसको इतनी मेहनत से बाबा ने बनवाया था। बनते हुए उस घर के एक-एक कमरे का हिसाब था कि कहाँ क्या होगा। जब रहेंगे तो कैसे रहेंगे!

धीरे-धीरे बाबा को इस घर ने अपना लिया। बेटे की शिकायत बची भी तो उसने कभी बोला नहीं। बहू अच्छी थी। बचीं निर्मला, उनकी जिंदगी आसान थी, बस रोज भगवान से कुछ-न-कुछ माँग लेना। यादें खो जाएँ तो जिंदगी आसान हो जाती है। हम अपनी यादों से परेशान लोग हैं, दुनिया तो बहुत

बाबा रोज निर्मला के साथ बैठते। निर्मला का हाथ पकड़कर वो घंटों रोते। निर्मला रोज उनको कहती, "मैंने भगवान जी को बोल दिया है। एक बार अपने घर में सही से खोज लो, वहीं होगा। मेरा भी कुछ खो गया है लेकिन याद नहीं आ रहा क्या खोया है, तुम्हें मिले तो बताना।"

बाबा लौट आए थे। उनके पोते ने एक दिन स्कूल की किताब में गौतम बुद्ध की कहानी पढ़ी तो बाबा से उनके बारे में पूछा, "बाबा, गौतम बुद्ध क्यों नहीं लौटे?"

बाबा बहुत दिन बाद ठीक पहले जैसा मुस्कुराए और बोले, "उनको रास्ता याद ही नहीं आया। जब याद आ जाएगा तो एक बार तो लौट के जरूर जाएँगे।"

"वो अभी जिंदा हैं बाबा?" पोते ने अभी पूछा ही था कि नर्स की आवाज आई। निर्मला अपनी आखिरी साँसें गिन रही थीं। बेटा, बहू, पोता सब पास में खड़े थे। बाबा ने निर्मला का हाथ पकड़ा और कहा, "खिलौना मिल गया है, भगवान जी को बोल देना।"

निर्मला का बेचैन शरीर अब थम रहा था। आखिरी साँस से पहले उसने कहा, "अब... सँभाल...कर... रख...ना..."

निर्मला और बाबा दोनों का हाथ ठंडा पड़ गया। जो गए वो गौतम बुद्ध हुए या नहीं पता नहीं, पर जो लौटे वो गौतम बुद्ध से कम नहीं थे।

संजीव कुमार

देहरादून का नाम सुनते ही एक तस्वीर जेहन में उभरती है। पहाड़, आसमान और चुटकी भर फुरसत। यह बात तब की है जब मैं दो महीनों के लिए एक स्कूल में थिएटर पढ़ाने के लिए गया था। मैं कोई टीचर नहीं था लेकिन स्कूल वालों को कोई एक ऐसा आदमी चाहिए था जिसने फिल्म और थिएटर की दुनिया के कुछ बड़े लोगों से मुलाकात की हो, थोड़ी बहुत अंग्रेजी बोल लेता हो और बच्चों को एक छोटा-सा प्ले तैयार करा दे।

फोन पर तो स्कूल वालों ने यही बताया था कि मैं अकेला ही वहाँ रहूँगा लेकिन जब मैं वहाँ पहुँचा तो पता चला कि एक लोकल थिएटर करने वाली लड़की स्मृति भी मेरे साथ पढ़ाएगी। एक बार को तो मुझे बुरा लगा कि ऐसा कैसे हो सकता है! लेकिन अगले पल खयाल आया कि एक तो पैसे बढ़िया हैं और दूसरे, दो महीने एक अच्छी जगह पर रुकने को मिल रहा है तो थोड़े-बहुत एडजस्टमेंट में बुराई नहीं है।

स्मृति करीब 26-27 साल की होगी। 20 साल की उम्र में मुंबई हीरोइन बनने गई थी। एक-दो फिल्मों में उसने छोटे-मोटे रोल भी किए और कुछेक सीरियल्स में भी बड़ी बहन बनकर आई। लेकिन अपनी तस्वीरों को अलग-अलग तरीके के लोगों को दिखाते हुए वो एक दिन थक गई। कुछ शहर जो

मुश्किल शहर है, जहाँ बड़ा समंदर भी लोगों को बड़प्पन नहीं सिखा पाता। स्मृति थककर एक दिन घर लौट आई।

सीरियल में आने का उसको एक फायदा हुआ कि देहरादून लौटकर उसने एक एक्टिंग स्कूल खोल दिया। उस एक्टिंग स्कूल के बाहर उसके सीरियल की तस्वीरें भी लगी हुई थीं। स्मृति एक्टिंग क्लासेज के नीचे ही बड़ा-बड़ा लिखा हुआ था- 'हुनर से कामयाबी तक'।

वह जान-बूझकर कभी इस लाइन को नहीं पढ़ती थी क्योंकि यह लाइन घूरकर उसको चिढ़ाती थी। उसको कई सारे लोकल स्कूल में काम मिला हुआ था। अंग्रेजी कॉन्वेंट स्कूल था और उनको यह दिखाना पड़ता था कि उन्होंने किसी बाहर के एक्सपर्ट को बुलाकर प्ले करवाया है, इसलिए उन्हें मजबूरन उसे बुलाना पड़ा। उसने मुंबई में दो-चार प्ले किए थे। हाँ प्ले बनाए बहुत हैं, लेकिन वो प्ले कभी हुए ही नहीं। स्कूल वाले भी ज्यादा पैसे खर्च करना नहीं चाहते थे इसलिए उन्होंने कहीं से उसके बारे में सुना कि, 'अच्छा आर्टिस्ट है, अभी ज्यादा फेमस भी नहीं हुआ है', इसलिए बुला लिया गया था।

स्मृति से मेरी पहली मुलाकात न बहुत अच्छी रही न बहुत खराब। उसके

बहुत सारे दोस्त अभी मुंबई में काम कर रहे थे। इसलिए उसने अपने शुरुआती सवालों से मुझे तौलने की कोशिश की। मेरे पास भी बताने को लाखों बातें थीं और मुंबई की कमाल की बात यही है कि मुंबई में कभी कोई काम के लिए मना नहीं करता। मैंने भी बता दिया कि फिल्मों में जिनमें मैंने एक्टिंग की है उनका शूट हो गया है और वो रिलीज होने वाली हैं।

स्मृति ने जब फिल्मों के बारे में पूछा तो मैंने बड़े ही आराम से झूठ बोल दिया कि एक फिल्म तो करण जौहर के साथ की है, लेकिन आप अभी किसी से कहिएगा मत, ये सब बातें अभी बाहर नहीं आनी चाहिए। झूठ जितना बड़ा हो उसको उतने ही आराम से बोलने पर वो सच हो जाता है।

हम दोनों ही एक-दूसरे के झूठ से वाकिफ थे और कमाल की बात थी कि हमें इस बात से कोई दिक्कत नहीं थी। मुंबई में स्ट्रगल करने वालों के बीच में एक अनकहा एग्रीमेंट होता है। शुरुआत में मुझे लग रहा था कि किसी के साथ मैं कैसे काम करूँगा, लेकिन उसके साथ जब मैंने दो-तीन क्लासेज कर ली तो मुझे एहसास हुआ कि स्मृति के होने से आराम ही है।

हमने शेक्सपियर का एक घिसा-पिटा-सा प्ले चुन लिया और बच्चों को उसका रिहर्सल कराने लगे। इस बीच स्मृति ने मुझे यह बताया कि देहरादून में अब प्ले होने लगे हैं। मैंने जब प्ले देखने की इच्छा जताई तो वह खुशी-खुशी मुझे प्ले दिखाने ले गई।

मैं देखकर हिल गया। मैंने उसके जैसा एक्टर पूरे मुंबई में नहीं देखा था। वह एक्टिंग इतनी कमाल थी कि लग ही नहीं रहा था कि सामने वाला एक्टिंग कर रहा है। प्ले खत्म होने के बाद मैंने स्मृति से यह गुजारिश की कि मुझे इस एक्टर से मिलवा दे।

मैंने जब स्टेज के पीछे जाकर उस एक्टर से हाथ मिलाया और उससे कहा कि मैंने इतनी कमाल एक्टिंग देखी ही नहीं कभी। वह सकुचाते, शरमाते हुए बहुत ही धीमे से बोला, "शुक्रिया!" इतना धीमे कि अगर मैंने उसके होठों को हिलते हुए नहीं देखा होता तो मैं मानता भी नहीं कि उसने कुछ कहा भी।

खैर जब मैं उस छोटे से हॉल से निकलकर स्मृति के साथ कुछ खाने के लिए बाहर गया तब मुझे पता चला कि ये जो देहरादून का सबसे अच्छा एक्टर था, वो एक पोस्ट ऑफिस में डाकिया था। थोड़ा मोटा, थोड़ा थुलथुल-सा, बिखरे हुए बाल, कद-काठी से बिलकुल संजीव कुमार की याद दिलाता हुआ।

मैं जब संजीव कुमार की फिल्में देखता हूँ तो सोचता हूँ कि हिंदुस्तान का सबसे बड़ा एक्टर संजीव कुमार को क्यों नहीं बोलते।

क्योंकि मेरे पास दो महीने का समय था तो मैंने सोचा कि मैंने जो आखिरी स्क्रिप्ट मुंबई में लिखी थी, उसको देहरादून में परफॉर्म कर लिया जाए। शायद कुछ चमत्कार ही था कि मुझे जिस उम्र का और जैसा एक्टर चाहिए था, वो डाकिया ठीक वैसा ही एक्टर था। वो स्क्रिप्ट शायद उसके लिए ही लिखी गई थी।

मैंने स्मृति से जिद करके उस डाकिया से मिलने का सोचा। जब मैं उसके ऑफिस गया तो वो ढेर सारी चिट्ठियों पर ठप्पे लगा रहा था। उसके ठप्पे लगाने में एक रिदम था, एक संगीत था। जैसे चिट्ठियों पर ठप्पे लगाना इस दुनिया का सबसे खूबसूरत काम हो।

हर शहर में ऐसे तमाम लोग मिलते हैं जो अगर शहर छोड़ देते हैं तो पूरी दुनिया में उस शहर को पहचान दिला देते हैं। वो कभी शहर छोड़ने की हिम्मत नहीं कर पाते इसीलिए अपने ही शहर में एक दिन अजनबी होकर रह जाते हैं।

एक बार ऋतिक रौशन की एक फिल्म का कोई छोटा-सा हिस्सा देहरादून में शूट हो रहा था। पोस्टमैन साहब का उस रोल के लिए सलेक्शन भी हो गया। लेकिन जिस दिन शूटिंग थी उस दिन की छुट्टी अप्रूव नहीं हुई। उस रोल के छूट जाने की न कभी किसी ने शिकायत सुनी, न कभी किसी से उन्होंने शिकायत की ही। जिस दिन शूट हो रहा था उस दिन वो वापस

संगीत था, उनमें कोई गुस्सा नहीं था।

स्मृति ने हमारी मीटिंग की बात पहले से कर रखी थी। उन्होंने हमें इंतजार करते देखा और बिलकुल इत्मीनान से हमें पोस्ट ऑफिस के पास वाली चाय की टपरी पर ले गए। टपरी तक जाने के दरमियान हमारी कोई बात नहीं हुई। मैंने ही हाथ बढ़ाकर कहा, "सर मैं पुनर्वसु हूँ।"

उन्होंने जब हाथ बढ़ाया तो हाथ एकदम ठंडा था जैसे कि उनका हाथ मिलाने का मन ही ना हो। मैंने उनकी कमीज पर नाम पढ़ा- 'मोहन जोशी'।

मोहन जोशी ने जब चाय वाले को तीन चाय बनाने के लिए इशारा किया तो भी एक शब्द नहीं कहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वो मुझसे बात नहीं करना चाह रहे हैं, उनको प्ले नहीं करना या वो ऐसे ही हैं।

"आप स्क्रिप्ट दे दीजिए, मैं देखता हूँ। कुछ समझ नहीं आएगा तो पूछ लूँगा।"

"मैंने रोल के बारे में समझाना चाहा लेकिन मोहन जोशी ने मना कर दिया।"

"मैं पहले पढ़ लेता हूँ।"

उस मीटिंग के बाद लौटते हुए मैंने स्मृति से कहा, "यार यह कुछ अजीब नहीं है! कुछ बोला ही नहीं।"

स्मृति उनके बारे में थोड़ा-बहुत जानती थी। वह बोली, "वो जीनियस है।"

मुझे स्मृति की बात पर यकीन नहीं हुआ। इस प्ले में हमें दो लोग चाहिए थे। मोहन जोशी से मिलकर मुझे यही लगा कि मुझे इस प्ले के बारे में सोचना ही नहीं चाहिए।

अगले दिन मोहन जोशी ने हमें शाम को बुलाया। मैंने पूछा, "कैसा लगा आपको?"

पोस्ट ऑफिस में इक्का-दुक्का लोग थे। मोहन जोशी उठा और थोड़ा आगे जाकर उसने ऐसे पोजीशन ली जैसे हम पोस्ट ऑफिस में नहीं किसी थिएटर में बैठे हों। इससे पहले मुझे कुछ समझ आता, उसने मेरी स्क्रिप्ट का एक सीन करना शुरू कर दिया।

मैं यह देखकर सकते में था कि उस स्क्रिप्ट के सबसे मुश्किल सीन को मोहन जोशी ने इतने आराम से कैसे कर लिया! मैंने फिर भी यह जानना चाहा कि उसको स्क्रिप्ट कैसी लगी। उसने जवाब दिया, "ठीक है, कर सकते हैं।"

हालाँकि उस मीटिंग में आने से पहले मेरे मन में डाउट था, लेकिन मोहन

बचा था। लेकिन सामने एक नई समस्या थी। वो ये कि हमें इस प्ले में एक 35 साल की महिला की भी जरूरत थी। वह भी ऐसी जो अच्छी एक्टिंग कर लेती हो। स्मृति की उम्र थोड़ी कम थी, वह कोशिश करके भी उस रोल के लिए फिट नहीं हो रही थी।

मेरे दिमाग में ये आइडिया आया कि जब एक अच्छा एक्टर हमारे पास है तो क्यों ना किसी ऐसे को लिया जाए जिसने कभी एक्टिंग की ही ना हो। स्मृति को यह बात अच्छी लगी। अब देहरादून जैसे शहर में एक ऐसे एक्टर की तलाश जिसकी उम्र 35 साल हो और वह रिहर्सल के लिए समय दे पाए, साथ ही उसको स्टेज पर आने का डर ना हो, ऐसा कोई आसानी से मिल जाना तो संभव ही नहीं था।

उधर स्कूल में प्ले की तैयारी ठीक चल रही थी। स्कूल की प्रिंसिपल भी समय-समय पर आकर हमारी तैयारी को देखती रहती थीं। मुझे उनके बार-बार आने से दिक्कत नहीं थी, उनके फालतू के सवालों से ज्यादा दिक्कत थी। उन्होंने शायद गूगल में कुछ एक्टिंग के बारे में दो-चार आर्टिकल पढ़ लिए थे। उनके सवाल मेथड एक्टिंग से शुरू होते थे और पता नहीं कहाँ-कहाँ चले जाते थे।

एक समय के बाद उनको जवाब देना मुश्किल हो रहा था। उनके हर

सवाल का मेरे पास एक ही जवाब होता, "मैम, आप इन बच्चों की परफॉर्मेंस में देखिएगा।"

स्मृति से ही मुझे यह पता चला कि मोहन जोशी ने शादी नहीं की है। उनके परिवार में भी कोई आगे-पीछे नहीं था। हमने सोचा कि जब तक फीमेल एक्ट्रेस नहीं मिल रही है तब तक प्रैक्टिस तो शुरू ही की जाए, टाइम क्यों वेस्ट करें। इसी चक्कर में हम रोज शाम को पोस्ट ऑफिस पहुँच जाते और पोस्ट ऑफिस खाली होने के बाद वहाँ पर ही प्रैक्टिस शुरू कर देते।

एक दिन ऐसे ही जब स्मृति और मैं ऑफिस पहुँचे तो मोहन जोशी डरे-सहमे हुए अपनी सीट पर बैठे हुए थे। पोस्ट ऑफिस के केबिन में एक मैडम बैठी हुई थीं जो आते-जाते एक-दो बार दिखी तो थीं। पूछने पर पता चला कि मैडम पोस्ट ऑफिस की बड़ी बाबू हैं।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि वह मोहन जोशी की बॉस थीं। ऐसा कभी होता नहीं था कि वो ऑफिस में इतनी देर तक रुकी रहें लेकिन उस दिन शायद उनको कुछ काम था। उनकी उम्र ठीक वही थी जो हमें अपने प्ले के लिए चाहिए थी। मैंने नेम प्लेट पर नाम पढ़ा, ग्रीष्मा पंत लिखा हुआ था।

मोहन जोशी की एक खास बात थी कि प्ले की रिहर्सल शुरू करने से पहले ही मुझसे पूछते, "मैं कौन हूँ?" मेरे लिखे हुए प्ले में उनके कैरेक्टर का

जोशी कुछ देर के लिए अपनी आँखें बंद करते और जब वह आँखें खोलते तो उनका पूरा शरीर, उनकी आत्मा, उनके देखने का तरीका, उनके चलने का ढंग, सब कुछ शौकत वशिष्ठ हो चुका होता।

जैसे पुरानी कहानियों में हमने सुना था कि लोग एक मंत्र पढ़कर अपना रूप बदल लेते हैं। वैसे ही मोहन जोशी को शायद कोई जादू आता था। यूँ तो वो कोई बात नहीं करते थे लेकिन अगर कोई कैरेक्टर बहुत बातूनी है तो मोहन जोशी उतनी देर के लिए बहुत बातूनी हो जाते थे।

उनको ज्यादा बात करते हुए देखकर लगता कि इस आदमी के अंदर इतनी सारी बातें थीं तो वह निकल क्यों नहीं रही थीं? जैसे ही रिहर्सल खत्म होती वो वापस अपना मोहन जोशी वाला रूप धर लेते। एकदम चुपचाप, झुके हुए कंधों वाला कोई आदमी, जिसके पास सारी बातें खत्म हो चुकी हों।

पता नहीं क्या सोचकर मैंने मोहन जोशी से पूछा कि यह आपकी बॉस ग्रीष्मा पंत जो हैं, क्या वो एक्टिंग कर सकती हैं? मोहन जोशी इस सवाल के जवाब में सड़क पर टकटकी लगाए सोचने लगे। मुझे लगा कि शायद अब जवाब दें। लेकिन 10 मिनट तक तो कोई जवाब आया नहीं। मैंने खीजकर

दोबारा पूछा। मोहन जोशी जैसे किसी नींद से जागे हों। वो बोले, "पूछने में बुराई नहीं है।"

मुझे यह तो उम्मीद थी कि वो खुद तो कभी पूछेंगे नहीं इसलिए मैंने स्मृति से बात करने को कहा। स्मृति को शुरुआत में ये आइडिया बहुत खराब लगा। मैं यह बात पढ़ पा रहा था कि कहीं-ना-कहीं स्मृति खुद वो रोल करना चाहती है। लेकिन मुझे तो जैसे जिद थी कि नहीं मुझे वह खास हाव-भाव ही चाहिए।

उसने जब ग्रीष्मा से बात की तो उसने तो मजाक में टाल दिया। लेकिन एक चीज अच्छी हुई कि उसने यह कहा कि मैं रिहर्सल में आऊँगी।

यूँ तो वह मोहन जोशी की बॉस थी इसलिए ग्रीष्मा के सामने आते ही मोहन जोशी अपने आप को और अंदर सिकोड़ लेते थे।

ग्रीष्मा को इस बात का खूब अंदाजा था कि उसके आने की वजह से मोहन जोशी को दिक्कत हो रही है। इसलिए उसने आते ही सबको कम्फर्टेबल कर दिया। उस प्ले का फीमेल वाला डायलॉग स्मृति ने पढ़कर ग्रीष्मा को सुनाया। जब दो दिन तक उसने सारा डायलॉग सुन लिया, एक बार स्मृति को करते हुए देख लिया, तब तीसरे दिन ग्रीष्मा ने खुद एक बार अपने आपको उस कैरेक्टर में ढालकर हमारे सामने रखा।

यँ तो मोहन जोशी, ग्रीष्मा के आगे कछ भी बात नहीं करते लेकिन जैसे ही मैं एक्शन बोलता सब कुछ बदल जाता। मोहन जोशी की आदत के जैसे ही ग्रीष्मा ने भी आदत डाल ली थी कि अभी मैं कौन हूँ। वो दोनों बहुत अच्छा कर रहे थे। इतना अच्छा जिसकी मुझे दूर-दूर तक उम्मीद नहीं थी।

उधर मेरे स्कूल के प्ले की डेट आ चुकी थी। इधर रिहर्सल में ग्रीष्मा को, स्मृति को और मुझे मजा आने लगा था। मोहन जोशी को कैसा लगता था यह बात मैं कभी समझ नहीं पाया क्योंकि वो कभी कुछ ज्यादा रिएक्ट ही नहीं करते थे। रिहर्सल के दौरान ग्रीष्मा जैसे ही अपने कैरेक्टर में आती, वैसे ही मोहन जोशी बदल जाता। ग्रीष्मा घर की बड़ी बहन थी और बाकी सभी बहनों और भाइयों को पढ़ाते-लिखाते और सेटल करते उनकी शादी रह गई थी। मुझे कई बार ऐसा लगा कि ग्रीष्मा के मन में मोहन जोशी के लिए सॉफ्ट कॉर्नर है। मोहन जोशी डाकिये के लिए नहीं, मोहन जोशी जो एक्टर है, उसके लिए।

मैंने स्मृति से भी यह बात कन्फर्म करने की कोशिश की, उसको भी ऐसा ही लगता था।

खैर, हमने प्ले की एक डेट ले ली। स्मृति के ऑफिस में ही हमने करीब 50 लोगों को बुलाया। परफॉर्मेंस बहुत अच्छा रहा। हर कोई ग्रीष्मा को और मोहन जोशी को बधाई दे रहा था। लोगों ने कभी ऐसा प्ले देखा ही नहीं था।

ऑडियंस में ही शहर के कुछ बड़े लोग भी आए थे। उन्होंने इस प्ले को बड़े ऑडिटोरियम में परफॉर्म कराने के लिए हमसे पैसे पूछे। हम तो यह सब शौकिया कर रहे थे, हमें उम्मीद ही नहीं थी कि इसके लिए पैसे भी मिल सकते हैं।

इसी प्ले का सेकंड परफॉर्मेंस हुआ और पहले वाले से भी अच्छा हुआ। इस बार हम सब ने पैसे भी कमाए। जितने भी पैसे आए मैंने उसके चार हिस्से किए और आपस में हमने बाँट लिए। ग्रीष्मा तो पैसे लेने को तैयार भी नहीं हो रही थी क्योंकि उसको तो इसके पहले पता भी नहीं था कि कभी वह स्टेज पर परफॉर्म भी कर सकती है। मैंने सोच लिया था कि कभी ना कभी मैं मोहन जोशी और ग्रीष्मा को मुंबई ले जाकर परफॉर्म करवाऊँगा।

उधर मेरे स्कूल में प्ले हुआ, वो भी बहुत अच्छा हुआ। स्मृति से मेरी दोस्ती गहरा गई। मैंने उसको सच बता दिया कि मेरी कोई फिल्म नहीं आने वाली। यह सुनकर उसको कोई अचरज नहीं हुआ, उसको इस बात का अंदाजा था ही। उसने भी सच बता दिया कि उसका ड्रामा स्कूल बहुत अच्छा नहीं चल रहा।

धीरे-धीरे मेरा देहरादून से जाने का समय आ चुका था। जाने से पहले हमने सोचा कि क्यों ना हम सब लोग साथ में एक डिनर करें। ग्रीष्मा तो डिनर के लिए तुरंत तैयार हो गई, लेकिन जब मैंने मोहन जोशी से पूछा तो

मैंने कहा, "बहुत जरूरी है। मैं इसी बहाने आपको अगली कहानी भी सुना दूँगा।"

जब हम डिनर पर पहुँचे तो मोहन जोशी को छोड़कर हम तीन लोग आपस में खूब बातें, हँसी-मजाक कर रहे थे। इस बीच एकदम से मोहन जोशी ने मुझसे पूछा, "आज मैं कौन हूँ?"

हम सब इस सवाल पर खिलखिलाकर हँस दिए। ग्रीष्मा ने कहा, "आज तुम संजीव कुमार हो और मैं जया भादुड़ी।"

मोहन जोशी ने कहा, "कोशिश... कोशिश* फिल्म वाले?"

ग्रीष्मा ने कहा, "हाँ।"

*(*कोशिश फिल्म में संजीव कुमार और जया भादुड़ी बोल और सुन नहीं पाते थे।)*

थोड़ी देर में ग्रीष्मा ने फिल्म का नाम और हीरो का नाम बदल दिया। जैसे ही वो हीरो का नाम बदलती मोहन जोशी उस फिल्म के वही हीरो हो जाते और ग्रीष्मा उस फिल्म की हीरोइन हो जाती है। होटल के बैकग्राउंड में जो गाना बज रहा था, वही उनकी फिल्म का गाना हो जाता। हम उस कहानी

के साइड एक्टर हो जाते। जो टिपिकल-से होते हैं ना, हीरो का दोस्त, हीरोइन की सहेली।

ये सब कुछ एक जादू के जैसे हमारे सामने हो रहा था। मुझे एक-दो बार ये भी डाउट हुआ कि कहीं मैंने ज्यादा पी तो नहीं ली है, लेकिन ऐसा नहीं था।

मुंबई लौटने के बाद मैं मोहन जोशी जैसा एक्टर अपने प्ले के लिए ढूँढता रहा। मुझे कोई वैसा नहीं मिला। आखिरकार मुझे वो प्ले बंद करना पड़ा। मेरा काम ठीक-ठाक चलता रहा। मैंने मुंबई में एक एक्टिंग स्कूल खोल लिया, जहाँ मैं स्कूली बच्चों को एक्टिंग सिखाता।

देहरादून से लौट आने के कई साल बाद जब मैं दोबारा देहरादून पहुँचा तो पता चला कि ग्रीष्मा और मोहन जोशी ने शादी कर ली थी। स्मृति का एक्टिंग स्कूल अब अच्छा चलने लगा था। उसने भी शहर के एक बिजनेसमैन से शादी कर ली थी।

जब मैं ग्रीष्मा से मिला तो मैंने उनसे पूछा कि क्या अभी आप वो खेल खेलते हो, तो उन्होंने जवाब दिया, "हाँ, इस दुनिया में इतने किरदार हैं कि हम वो किरदार बनते रहते हैं। एक वही तरीका है कि हम जिससे अपनी असलियत से भाग सकते हैं।"

मोहन जोशी अब भी उसी पोस्ट ऑफिस में वैसे ही बैठे हुए चिट्ठियों पर

चिट्ठियों पर ठप्पा लगाने में अब भी वही संगीत था। संजीव कुमार अगर बुढ़ापे में मरते तो उनकी शक्ल ठीक मोहन जोशी जैसी लगती।

पहला पन्ना

'उन सभी शायरों-लेखकों के नाम जो कुत्ते की मौत मरे और मरते रहेंगे!'

जी हाँ, यही उस शायर की इकलौती किताब की पहली लाइन थी। वो किताब उसने कैसे और कब लिखी, ये एक लंबी कहानी है।

उसके बारे में यही कहा जा सकता है कि लोगों की जेब से फसाना चुराकर वो अपनी जेब में रख लेता था। जिसका फसाना चुराता वो कभी खुद जान ही नहीं पाता कि उसका एक हिस्सा चोरी हो गया है। रोज लिखता रोज फाड़ देता। लाखों पन्ने लिखे होंगे लेकिन अपना लिखा एक भी पन्ना अपने पास नहीं रखा।

उम्र थी यही कोई 43-44 साल। हमेशा एक नशे में रहता, लेकिन वो नशा शराब का नहीं था। कोई पूछता कि इतना मस्त कैसे रहते हो, तो एक हाथ अपने दिल पर और एक आसमान में दिखाकर कहता, "उसका नशा है।"

कभी कोई समझ नहीं पाया, उसका कौन? ऊपरवाला या कोई लड़की।

जब लखनऊ यूनिवर्सिटी में पढ़ता था तो जो भी लड़की आकर कहती कि हमारे ऊपर कुछ लिख दीजिए तो बस पाँच-दस मिनट में लिखकर दे देता।

जो लड़की जितना पास आने की कोशिश करती वो उससे उतना ही दर भागता। जिस लड़की को एक बार कविता लिखकर दे दी उसके बारे में कभी दुबारा नहीं लिखता। लोग उसको शायर, कवि, पगला, कुछ भी बोलते।

"लाइफ में क्या करोगे?" जब कॉलेज में पढ़ने वाले उसके साथी लड़के उससे पूछते तो बीड़ी का एक कश अंदर खींचते हुए कहता, "कुछ अच्छी बात करो यार, क्या बोरिंग बातें करते हो?"

कॉलेज के पहले साल से ही अखबार में उसकी कविताएँ छपने लगी थीं। जब कवि सम्मेलन में सुनाने बैठता तो बाकी लोगों को खा जाता। उसके बाद के कवि जब कविता सुनाने आते तो ऐसा लगता कि क्या बकवास कविता सुना रहे हैं। वो अपनी कविता सुनाने के बाद कभी कवि सम्मेलन में नहीं रुकता। पैसे लेता और निकल लेता। पैसे लेकर सीधे शहर के उस हिस्से में जाता जिस बस्ती में शरीफ लोग जाते तो हैं लेकिन बताते नहीं। अब उन लड़कियों को इसकी आदत हो गई थी। वहाँ बैठकर वो कविताएँ सुनाता। लड़कियों के कस्टमर आते-जाते रहते लेकिन वो अपनी धुन में बैठकर कुछ बोलता रहता।

कविता कहते हुए बीच-बीच में लड़कियाँ रोने लगतीं। रोते ही दिन भर की

उनकी थकान मिट जाती। जब लड़कियाँ रोतीं तो वो उनसे मजाक में कहता, "देखना जिस दिन मरूँगा न, पूरा शहर रुक जाएगा। उस दिन रोना।"

शायर साब को अपने कमरे में ले जाने के लिए लड़कियों में लड़ाइयाँ होतीं। जब लड़कियाँ लड़कर थक जातीं तो एक नंबर तय होता।

एक लड़की शायर साहब को लेकर गई। उसने जाते ही अपने कपड़े खोल दिए। शायर ने उठकर उस लड़की के कपड़ों को एक-एक करके ऐसे उठाया जैसे एक बूढ़ी औरत गिरा हुआ एक-एक फूल चुनती है। फिर उन कपड़ों को इकट्ठा करके उस लड़की के हाथ में दे दिया और आँख बंद करके बिस्तर पर लेट गया। लड़की ने प्यार से उसके माथे को चूम लिया। वो शायर की शक्ल में कुछ ढूँढती रही। शायर ने पूछा, "क्या ढूँढ रही है?"

लड़की बोली, "अपना खोया हुआ शहर।"

शायर ने उसको गले लगा लिया। रात भर वो लड़की कुछ बड़बड़ाती रही। उसको खुद नहीं पता था कि उसके अंदर इतनी बातें थीं। सुबह होने पर जब लड़की की आँख लगी, शायर कमरे से इतने हल्के से गया कि किसी को खबर नहीं हुई। जब लड़की सोकर उठी तो उसको एक कविता मिली।

उस कविता में रात, उसका खोया हुआ शहर, वो पूरी लड़की थी। लड़की कविता को अपने सीने से लगाकर बहत देर तक रोती रही। उसने उस कविता को कमरे में रखे भगवान के पास रख दिया। जैसे वो कविता नहीं नये भगवान हों। जब रोज अगरबत्ती जलाती तो उस कविता को एक बार छूकर देखती।

शायर का जादू कुछ ऐसा था कि जब एक लड़की के साथ सो लेता तो अगली बार वो उसके लिए झगड़ा नहीं करती। कविता प्यास मिटा सकती है, ऐसा उस पुरानी हवेली की कई लड़कियाँ मानने लगी थीं।

कस्टमर आते-जाते लेकिन शायर का खयाल वहाँ टिका रहता। शायर का जब एक हवेली से मन भर जाता तो वो दूसरी हवेली जाता और वहाँ का हो जाता। जब साथ के दोस्त नौकरी, घर-परिवार में लगे थे तब शायर इस दुनिया को अपनी कविता से समझने में लगा था। इस दुनिया को समझने की कोशिश जब भी हुई है, हर खोज यहीं पर आकर रुकी है कि ये दुनिया रहने लायक नहीं है। यहाँ आदमी, आदमी बनकर नहीं रह सकता।

एक बार शायर को किसी कॉलेज में बोलने के लिए बुलाया गया। शायर ने कहा, "तुम लोगों पर बातों का कोई असर थोड़े होगा! कबीर, नानक, गाँधी की बात का असर नहीं हुआ तो मेरी बात का क्या होगा?"

लोगों को लगा कि शायद शायर आगे भी कुछ और बोलेगा। इतना बोलकर वो स्टेज से उतर गया। लोगों में खलबली मच गई। लोग उसके पीछे पड़ गए

कि कुछ बोलो, बताओ, हमें सुनना है।

"सुनना है लेकिन करना कुछ नहीं है। रहने दो तुम्हारे बस का नहीं सुनना।" ये कहकर शायर वहाँ से भाग खड़ा हुआ। जिसने उसको बुलाया था उसको बहुत डाँट पड़ी। कॉलेज के प्रिंसिपल ने आकर वही बातें दोहराईं जो एकदम बासी थीं। लोग शायर को सुनना चाहते थे।

इस बदसूरत दुनिया में खूबसूरती वही तलाश सकता है जो इस दुनिया को एक डीएसएलआर कैमरे की नजर से देखे, जो झोपड़पट्टी, गरीब के पाँव, नाले तक में खूबसूरती ढूँढ सके।

एक समय के बाद शायर को लोगों ने कवि सम्मलेन में बुलाना छोड़ दिया क्योंकि वो सच बोलता था। दुनिया को सच बोलने का वादा चाहिए, सच नहीं।

शायर ने अब कहानियाँ लिखना शुरू किया। वो उन लड़कियों की कहानी सुनता और उसे लिखकर अगले दिन किसी मैगजीन में औने-पौने दाम में बेच आता। उन लड़कियों की कहानी में केवल लड़की नहीं होती, तमाम लड़के होते, दुनिया होती। लेकिन इस तरह की कहानियों से भी शायर का मन भर गया।

एक दिन शायर को एक बच्चा मिला। तब उसको खयाल आया कि उसने इस दनिया को ऐसे देखना बंद कर दिया है जैसे ये दनिया आज ही बनकर तैयार हुई हो। उसने बच्चों की कहानियाँ लिखीं। बच्चों की कहानियाँ लिखते हुए वो घंटों बैठकर रोता। उसकी कहानियाँ पढ़ते हुए बच्चे खूब हँसते। बच्चों की कहानियाँ इतनी चल निकलीं कि हर जगह बस शायर का ही नाम था। इस दुनिया को बच्चों की नजर से ही झेला जा सकता है शायद!

वो जब कभी गलती से कोई कविता लिखता तो ठहाके मारकर हँसता और लोग कविता पढ़कर रोते।

शायर को एक दिन वो हवेली वाली लड़की सड़क पर मिली। शायर ने उसको पहचान लिया। उस लड़की के हाथ में वही पर्ची थी जो शायर ने उसे कभी लिखकर दी थी। शायर उसे घर ले आया। वो लड़की कुछ नहीं बोलती। उसको बस वो पर्ची में लिखी कविता याद थी। शायर अपनी लिखी कविता उसको सुनाता तो वो लड़की खुश हो जाती, उतनी देर के लिए ऐसा लगता कि वो ठीक हो गई है। शायर उसके लिए रोज एक कविता लिखता और वो खुश होती। हर एक पन्ने को सँभालकर रखती। मोहल्ले वाले शायर से नाराज थे कि कैसी औरत को वो मोहल्ले में ले आया है। उसी औरत पर लिखी कविता जब मोहल्ले वाले पढ़ते तो आह-वाह करते हुए हैरानी जताते कि मोहल्ले वालों की इतनी गहरी बातें शायर को आखिर पता कैसे चलती हैं?

ज्यादा दिक्कत होने पर शायर ने उस लड़की से शादी कर ली। शादी उसी हवेली से हुई जिसे छोड़कर वो लड़की भागी थी। उसकी सब सहेलियों को उस लड़की से जलन हुई कि उसके पास अब पूरा शायर था।

उस लड़की ने शायर के घर को ऐसे छुआ जैसे इस दुनिया की पहली औरत ने दुनिया को सजाया होगा। शायर की बेचैनी भी अब जाती रही।

वो एक दिन लिखने बैठा और कागज कोरा रह गया। इससे पहले कभी ऐसा कुछ नहीं हुआ था। लड़की ने कुछ पन्ने सिलकर एक रजिस्टर जैसा बना दिया था कि शायर के लिखे हुए पन्ने खोएँ नहीं। लेकिन रजिस्टर कोरा का कोरा ही रहा। शायर बँधे हुए पन्नों पर लिख ही नहीं पा रहा था। उसको तो अखबार की खाली जगहों या रद्दी कागजों पर लिखने की आदत थी।

ऐसे बिना शब्दों के कुछ दिन बाद ही लेखक को बेचैनी हुई। उसको समझ नहीं आ रहा था क्या हुआ। उसने बच्चों की कहानी लिखने की कोशिश की लेकिन वो भी नहीं आई। उसने अपने पुराने लिखे को देखा तो उसे लगा कि ये तो वो लिख ही नहीं सकता। उसके अंदर अब ऐसी कोई बात ही नहीं है कि वो कागज पर उतार पाए। शायर खाली हो गया था। हर लेखक कभी-न-कभी खाली होता है, लेकिन मानना नहीं चाहता। खाली हो जाना मौत जितना बड़ा ही सच है।

शायर सफेद कागज को देखता तो उसके पसीने छूटने लगते। वो घबराने

हवेली पहुँचा। उसको देखकर कुछ लड़कियाँ चौंकी तो कुछ खुश हुईं। शायर को सबने घेर लिया। शायर के पास सुनाने के लिए कुछ नहीं था। वो लड़कियाँ उसकी लिखी कविताएँ उसको सुना रही थीं। वो उन कविताओं को सुनकर रो रहा था। जैसे आदमी किसी करीबी के मरने पर फूट-फूटकर रोता है।

शायर ने जिनको उनके शहर याद दिलाए थे वो आज अपना उधार चुका रही थीं। रोते हुए शायर को देखकर आपस में लड़कियों में लड़ाई हो गई कि उसको कौन आज लेकर जाएगा। हवेली की सबसे कम उम्र की लड़की लड़कर उसको अपने कमरे में ले गई। उसने कहा, "मुझ पर कविता लिखोगे?"

शायर ने उस लड़की को ऐसे देखा जैसे वो लड़की न होकर कोरा कागज हो। उसने कई दिनों बाद कविता लिखी। लड़की ने शायर को अपनी बाँहों से बाँध लिया, जैसे कुछ जानवर अपने बच्चों को अपने मुँह में दबा लेते हैं।

जब लड़की ने उसको बाँधा हुआ था तब उसको घर की याद आई। घर पर बीवी उसका इंतजार करते हुए सो चुकी थी। शायर ने उस लड़की को ठीक वैसे ही पकड़ा जैसे कुछ देर पहले उस लड़की ने उसको पकड़ा था।

अगले दिन सुबह वो उठकर नहा-धोकर अपनी मेज पर लिखने बैठा और तब कहानी आई। वो शाम तक बैठकर लगातार लिखता रहा। उसकी बीवी जब शाम को चाय देने आई तो वो कहानी में खोया हुआ था। उसने बीवी से पूछा, "तुम कब आई? तुम तो हवेली में रहती हो ना?"

बीवी ने जो सुना उसको यकीन ही नहीं हुआ। वो चाय रखकर चली गई।

रात को जब शायर अपनी कुर्सी से उठा तो पूरा रजिस्टर फटा हुआ नीचे पड़ा था। सब पन्ने कोरे थे। वो बाहर निकलकर उस बच्चे को ढूँढने लगा जिससे मिलकर उसको बच्चों की सब कहानियाँ याद आई थीं। वो बच्चा मिला लेकिन वो इतना बड़ा हो चुका था कि खुद की सब कहानियाँ भूल चुका था।

शायर ने चाय की दुकान वाले एक बच्चे को पकड़ा लेकिन उस बच्चे के मन में दुनिया को लेकर इतनी कड़वाहट थी कि वो चाय के स्वाद के अलावा जिंदगी के सब स्वाद भूल चुका था।

शायर को समझ नहीं आ रहा था क्या करे। वो भागकर स्टेशन गया। पिछली ट्रेन छूट गई थी और अगली ट्रेन आने में समय था। उसने प्लेटफॉर्म पर बैठे हर आदमी, औरत, बच्चे को ध्यान से देखा। पूरी दुनिया की पिछली ट्रेन छूट चुकी थी और हर किसी को एक अगली ट्रेन का इंतजार था। जैसे ही उसको ये खयाल आया वो बहुत जोर-जोर से हँसने लगा, जैसे दुनिया

स्टेशन के बेंच पर एक लड़की दिखी, जिस पर शायर ने कभी एक कविता लिखी थी। वो शायर के कॉलेज में थी। उसने अपने बच्चे को शायर से मिलवाया।

शायर ने उस लड़की की आँखों में अपनी पुरानी कविता ढूँढी। कविता ने इन्हीं आँखों में आत्महत्या कर ली थी। उस दिन से वो आँखें बदल चुकी थीं। शायर ने जेब से दस रुपये निकालकर बच्चे की ओर बढ़ा दिए। बच्चे की आँखों में उसको एक साफ-सुथरी दुनिया दिखी। ऐसी दुनिया जिसको अभी पता भी नहीं था कि एक दिन इसको बर्बाद होना है। उसने बच्चे के सर पर हाथ फेरा और कहा, "खुश रहना, कोई रहने नहीं देगा, लेकिन फिर भी कोशिश करना।"

बच्चे को कुछ समझ नहीं आया। वो औरत अपने बच्चे को लेकर ट्रेन का इंतजार करने लगी। बच्चे के हाथ में शायर की लिखी किताब थी।

शायर लौटकर हवेली पहुँचा। लड़कियाँ लड़ीं, पर एक लड़की ने पैसे देकर शायर को अपने पास रखा। जब वो लड़की अपनी कहानी सुना रही थी तो शायर ने बीच में उसको टोका और कहा, "ये कहानी तो मैं कई बार सुन चुका हूँ।"

लड़की बोली, "हमारी सबकी कहानी एक ही तो है। कहानी कोई नई थोड़े होती है, बस कहने वाला नया होता है।"

शायर ने लड़की से कागज माँगा, पर लड़की के पास कागज नहीं था। उसने अपनी पीठ सामने कर दी। शायर ने पीठ पर अपना एक आँसू रख दिया। लड़की को तुरंत नींद आ गई। इतनी गहरी नींद में वो आखिरी बार तब सोई थी, जब एक लड़के के साथ भागी थी।

शायर रोज हवेली जाता और धीरे-धीरे हवेली की सब लड़कियाँ एक कविता पाकर अमीर हो गईं। शायर जितना अपने आप को खाली कर रहा था, रोज उतना ही भरता भी जा रहा था।

एक दिन जब वो सुबह घर पहुँचा तो घर पर बीवी के साथ किसी को देखा। उसको गुस्सा नहीं आया। उसने उस दिन बीवी को महीनों बाद प्यार किया। वो प्यार इतना गहरा था, जैसे वो अपनी बीवी के साथ नहीं, किसी और की बीवी के साथ हो। बीवी ने उस दिन घर छोड़ दिया। जाने से पहले वो माफी माँगती रही। शायर हैरान होता रहा। महीनों बाद वो अपने घर की छत पर गया। पड़ोस वाले घर से मियाँ-बीवी के झगड़ने की आवाज आ रही थी। एक बेटा अपनी माँ को मार रहा था। एक लड़की घर छोड़ने की तैयारी में थी। कोई फाँसी का फंदा बनाकर सही समय का इंतजार कर रहा था। उसने आसमान में देखा, चाँद उसको पुराना लगा। उसको पूरी दुनिया घिसे हुए

अगले दिन जब उसने दरवाजा खोला तो कोर्ट का सम्मन आया था, उस पर अश्लील कहानियाँ लिखने का आरोप लगा था।

कोर्ट में जज के सवालों पर वो ठहाके मारकर हँसता रहा। कोर्ट की हियरिंग के दिन शहर की गुमनाम हवेलियों में रहने वाली लड़कियाँ कोर्ट पहुँचीं। हर लड़की के हाथ में पैसे और कविताएँ थीं। मोहल्ले वालों ने भी मिलकर केस किया था कि शायर से मोहल्ले का माहौल खराब हो रहा है इसलिए उसको इस मोहल्ले से बाहर निकाला जाए।

लड़कियाँ केस जीत गईं। मोहल्ला हार गया। शायर जीता या हारा इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। केस का फैसला आते ही उसने अपना घर शहर के एक इज़्ज़तदार आदमी को बेच दिया। मोहल्ले में अब सब कुछ पहले जैसा ही था, लेकिन मोहल्ले का माहौल अब सही हो गया था। ऐसा कुछ लोग कहते हैं।

घर से मिले हुए पैसे उसने हवेली की लड़कियों में बाँट दिए। अब हवेली ही उसका घर था। हर नई लड़की शायर में अपने उस छोड़कर भागे हुए प्रेमी को ढूँढती।

–

शायर की किताबें खूब बिक रही थीं। गालियाँ भी मिलतीं और गालियों से ज्यादा प्यार मिलता। हवेली पर चिट्ठियों के अंबार लग जाते। उसके बारे में सुनकर दूसरे शहर की हवेलियों में रहने वाली लड़कियाँ आतीं। शायर के पास बैठकर रोतीं और चली जातीं। जो मिलता उसको वो कहता, "बस थोड़े दिन और, सब ठीक हो जाएगा!"

शायर ने दुनिया के बड़े लेखकों की कहानियाँ पढ़ रखी थीं कि वो कैसे मरे थे। वो उनके जैसे नहीं मरना चाहता था। एक समाज की इससे बड़ी हार क्या होगी कि जहाँ कोई लेखक वहाँ के बड़े लेखक जैसी मौत न चाहे।

वो एक साधारण-सी मौत चाहता था। वो उन लड़कियों को मजाक में कहता, "देखना जिस दिन मरूँगा न, पूरा शहर रुक जाएगा।"

लड़कियाँ उसकी बातों पर हँसतीं और अगले कस्टमर के पास ऐसे चली जातीं जैसे कोई रोज सुबह उठकर मुँह धुलने जाता है।

शरीफ लोग अपनी शरीफ महफिलों में शायर का लिखा सुनाकर तालियाँ बटोरते लेकिन इन महफिलों में शायर को नहीं बुलाते।

एक बार शायर को शहर की एक अमीर औरत ने बुला लिया। महफिल के सारे लोग शराब के नशे में धुत्त थे। अमीर औरत के अलावा बाकी सब लोग शायर की बात पर वाह-वाह कर रहे थे। अमीर औरत अपने चश्मे को बार-

चलने से पहले वो शायर को छोड़ने नीचे तक आई और बोली, "आपको अपनी कहानी सुनानी है।"

शायर ने कहा, "तुम तो हवेली में रहती थी ना, यहाँ कब आई? तुम्हारी कहानी में कुछ नया नहीं है।"

उस औरत ने शायर की जेब में पैसे भर दिए और जाते-जाते बोली, "आपकी कविताओं में भी अब नया कहाँ है कुछ!"

शायर को ये सुनकर झटका लगा। जैसे वो किसी नींद से जगा हो। शायर ने वो पैसे लाकर इस हवेली की औरतों को दे दिए।

उस रात शायर सोया नहीं। नशा वो पहले ही छोड़ चुका था। उसने हवेली में अपनी पड़ी हुई सब कविताएँ उठाकर पढ़ीं। उसकी जो किताब हवेली में पड़ी थी, उसने घबराकर उस किताब को पलटकर देखा और बेचैन होकर इधर-उधर घूमने लगा। लड़कियों को समझ नहीं आ रहा था कि शायर को क्या हुआ! उसने अपना लिखा हुआ एक-एक पन्ना फाड़ दिया और कमरा बंद करके लिखने बैठ गया।

सुबह जब लड़की ने दरवाजा खटखटाया तो शायर ने दरवाजा नहीं खोला। लड़की ने खाने के समय खाना खिसका दिया। शाम को खाली प्लेट

दरवाजे के बाहर मिली। ये सिलसिला एक हफ्ते तक चला। जब एक हफ्ते बाद शायर निकला तो ऐसे लग रहा था जैसे उसकी उम्र दस साल कम हो गई हो।

नहाकर वो सो गया। उसने एक लड़की को उस अमीर औरत का पता बताया और कहा कि ये रजिस्टर उस अमीर औरत को भिजवा दे।

उधर उस अमीर औरत के घर शायर की पहली पूरी किताब पहुँची। वो अमीर औरत उस रजिस्टर को पढ़ते ही भागते हुए उस हवेली में आई। शहर की नई और पुरानी हवेली मिलकर एक हो गई। शायर गहरी नींद से कभी नहीं उठा।

उस शायर को आखिरी बार देखने के लिए लाइन लग गई। शहर की हर एक हवेली की औरतों के लिए धरती पर एक जगह खाली हो गई। उस खाली जगह में एक दुनिया मर चुकी थी। उन लड़कियों का शहर एक बार फिर से खो गया था।

जो भी लड़की शायर से मिलने आती, उसके हाथ में एक पर्ची होती। उनका अपना चला गया था। वो आदमी चला गया था, जिसने औरत कौन है से ज्यादा ये समझा कि वो सब औरतें थीं। शायर के हाथ को आखिरी बार सब लड़कियाँ ऐसे छू रही थीं, जैसे संगम में नदियाँ एक-दूसरे को छूती हैं। छकर कछ देर तक अपने अंदर लहर महसूस करती रहीं।

धंधे का समय हो गया था लेकिन उस दिन कोई भी लड़की धंधे के लिए तैयार नहीं थी। शायर ने उन सबको एक रात के लिए ही सही लेकिन मुक्त कर दिया था।

अमीर औरत ने उस किताब को छपवा दिया। आज लोग उस शायर को इज़्ज़त से याद करते हैं। बैठकर आँसू बहाते हैं कि उसको कभी समझा नहीं गया।

उसकी आखिरी किताब के पहले पन्ने पर लिखा था- उन सभी शायरों-लेखकों के नाम जो कुत्ते की मौत मरे और मरते रहेंगे!

डैडी आई लव यू

कहते हैं कि किसी को उसके सपनों से समझना चाहिए। तूलिका के सपने हर महीने बदल जाते थे। कभी उसको समंदर किनारे एक कैफे खोलना था, तो कभी बनारस में विदेशियों के हिसाब से एक ट्रैवल ग्रुप। अगले ही महीने उसको नौकरी करनी होती थी। दो महीने बाद आदिवासियों के बीच रहना था।

आदिवासियों के बीच रहते हुए ही उसको पहाड़ों पर घूमने भी जाना था। फिर पैसे खत्म हो जाने पर न्यूज पेपर और मैगजीन के लिए आर्टिकल भी लिखने होते। देखा जाए तो अपने दोस्तों को एकदम सही करियर एडवाइस देने वाली तूलिका का खुद का हिसाब-किताब उलझा हुआ था। लड़कियों के साथ उसको अच्छा नहीं लगता था। एक ही सहेली थी उसकी, वो भी उसकी छोटी बहन। वो बहुत जल्दी-जल्दी नंबर बदलती रहती। पैर तो जैसे एक जगह ठहर ही नहीं सकते।

दिल्ली आए उसको दो हफ्ते हो गए थे। वो करीब छह महीने बाद दिल्ली यह सोचकर लौटी थी कि इस बार करियर पर ध्यान देगी और साल में बस दो हफ्ते घूमने का प्लान करेगी।

दिल्ली की एक हाई राइज बिल्डिंग की बड़ी बालकनी में तूलिका अपने मोबाइल को लगातार स्क्रॉल किए जा रही थी। घर में हर एक चीज सलीके से रखी हुई थी। उसने कुछ चार-पाँच लाइन की एक रैंडम कविता अपने सोशल मीडिया पर डाली। लोगों के रिऐक्शन आने शुरू हो गए।

- आपको किताब लिखनी चाहिए।

- इतना अच्छा कोई कैसे लिख सकता है?

ऐसे तमाम कॉमेंट आना शुरू हो गए। लोगों के कॉमेंट देखकर उसको कोई खुशी नहीं हो रही थी। उसने खीजकर एक फोन किया, "बेबी कहाँ रह गए?"

उधर से दबी हुई आवाज आई, "यार, वाइफ की शॉपिंग खत्म ही नहीं हो रही।"

तूलिका ने हड़काते हुए कहा, "नहीं आना है तो भी बताओ मैं अपना कुछ और प्लान बना लूँगी।"

"बोला न, आऊँगा।"

तूलिका ने फोन काटकर संजोत को फोन किया। संजोत एक मैगजीन में

सीनियर जर्नलिस्ट था। आखिरी बार किसी बात पर तूलिका की उससे लड़ाई हो गई थी। संजोत ने उसको मनाने की बहुत कोशिश की थी लेकिन तूलिका ने बात करना बंद कर दिया तो कर दिया।

तूलिका का अचानक कॉल देखकर संजोत खुश हुआ। संजोत अभी यह बता भी नहीं पाया था कि वो अभी ऑफिस की एक जरूरी मीटिंग में है।

"खाली हो?"

"न हाय न हेलो!" संजोत ने अभी यह कहना शुरू ही किया था कि तूलिका ने बीच में काटते हुए कहा, "एड्रेस भेज रही हूँ। आ जाओ।"

उसने फोन रखकर अपनी टीम से कहा, "एक इमर्जेंसी है, जाना पड़ेगा।"

वो तुरंत चल दिया। रास्ते में उसने एक गुलाब का फूल, एक बोतल वाइन खरीद ली। तूलिका के घर का एड्रेस आ चुका था। संजोत से तूलिका की मुलाकात करीब छह महीने में एक बार होती थी। जब तूलिका मुश्किल में होती तो वो उसको छोटा-मोटा फ्रीलांसिंग का काम दिला दिया करता।

संजोत और तूलिका की उम्र में काफी फर्क था। संजोत एक मैगजीन में सीनियर जर्नलिस्ट था। शौक के लिए साथ ही कभी-कभी किताबों को ट्रांसलेट किया करता। संजोत सभी पुराने बड़े शायरों की बहुत इज़्ज़त किया करता। अक्सर ही किसी बंदी को कोई शेर व्हॉट्सएप करके अंदाजा लगाने

बात का ध्यान रखता कि शेर किसी भी बड़े शायर का न हो, बल्कि किसी गुम हुए शायर का हो, जिससे पता चल सके कि उर्दू शायरी में उसकी कितनी गहरी दिलचस्पी है।

मसलन एक बार उसने दिल्ली की एक उभरती हुई लेखिका को मैसेज भेज दिया- 'तुम राह में चुप-चाप खड़े हो तो गए हो, किस-किस को बताओगे कि घर क्यों नहीं जाते।' (अमीर कजलबाश)

संजोत उम्मीद लगाए बैठा था, इतने में उस उभरती हुई बड़ी लेखका का मैसेज आया- 'सॉरी!'

संजोत को ऐसे सॉरी की आदत थी। तुरंत ही उसने पलटकर कहा, "गलती से चला गया था।"

ऐसी छोटी-मोटी दिल फेंक हरकतों के अलावा संजोत के बारे में कहा जा सकता था कि वो आदमी ठीक था।

दरवाजे पर दो बार घंटी बजाने के बाद दरवाजा खुला। तूलिका ने दरवाजा खोलते ही कहा, "दाढ़ी अच्छी लगती है तुम पर। कटवा क्यों ली?'

संजोत ने उस खूबसूरत घर पर नजर फेरकर अंदर आते हुए कहा, "नई

गर्लफ्रेंड को गड़ती बहुत थी।"

"बंद कर दो ये काम संजोत, किसी दिन पकड़े जाओगे। पूरी दिल्ली में तहलका हो जाएगा।"

संजोत अब आराम से सोफे पर बैठकर सिगरेट जलाकर, तूलिका की तरफ बढ़ा चुका था। उसको कहीं पर ऐशट्रे नहीं दिख रहा था।

"मैंने छोड़ दी है।" तूलिका ने किचन से कटोरी में थोड़ा पानी रखते हुए कहा।

संजोत ने अब पहली बार तूलिका को अपनी आँखों में भरा, "पतली हो गई हो।"

"क्यों, नहीं हो सकती?"

संजोत ने उठकर सामने रखे दो ग्लास उठाकर वाइन डालकर तूलिका की तरफ बढ़ाए, "चीयर्स टू लाइफ!"

"ये बच्चों जैसे 'चीयर्स टू ये, चीयर्स टू वो' क्या करते हो? तुम कब बड़े होगे संजोत? पचास साल के होने वाले हो।" तूलिका ने पहला सिप लेते हुए कहा।

संजोत ने इस बात का जवाब देना ठीक नहीं समझा। एक सिगरेट सुलगा

"मिला था बंदा।"

"कहाँ मिला था?"

"छोड़ो न कहाँ मिला था, तुम साले खोजी पत्रकार!"

"आ तो नहीं जाएगा।"

"आ भी सकता है, फिलहाल तो अपनी बीवी के साथ शॉपिंग कर रहा है।"

"कितना टाइम है अपने पास?" संजोत ने ग्लास खाली करते हुए पूछा?

तभी तूलिका के मोबाइल पर 'करन डैडी 5' नाम से मैसेज आया- 'सॉरी यार! आज नहीं आ पाऊँगा, आई विल कम इन मॉर्निंग। लव यू, बाय!'

संजोत की नजर भी मैसेज पर गई। वो मैसेज देखकर हँसा और बोला, "तू ये डैडी नाम से नंबर क्यों सेव करती है?"

"संजोत... तुम्हें इसलिए नहीं बुलाया है कि तुम इतने सवाल पूछो।"

अगले आधे घंटे संजोत ने कोई सवाल नहीं पूछा। अगले एक घंटे तूलिका ने कोई जवाब नहीं दिया। वो फिसलकर एक पुराने समय में गए और उस समय को ताजा करके वापस आ गए। संजोत थोड़ा और ठहरना चाहता

था। तूलिका ठीक पुराने समय की तरह उस आधे घंटे के लिए संजोत का नाम भूल गई। वो उतनी देर उसको डैडी बुलाती रही। शुरू में संजोत को ये थोड़ा अजीब लगता था लेकिन धीरे-धीरे उसकी आदत हो गई थी।

तूलिका को संजोत की सब बातें पता थीं, लेकिन तूलिका क्या सोच रही है, अगले ही पल क्या बोलकर नाराज हो जाएगी, कभी कुछ पता नहीं चलता था।

"आज यहीं रुक जाऊँ?" संजोत ने टीवी ऑन करते हुए कहा। उसने न्यूज चैनल लगाने के लिए रिमोट का बटन दबाया।

"टाटा स्काई चल नहीं रहा।"

"अखबार पढ़ती हो या वो भी छोड़ दिया?"

"तुम जैसे लोग हैं मीडिया में ऐसा क्या छूट जाएगा अगर नहीं पढ़ूँगी तो?"

संजोत अब तूलिका की कोई भी बकवास सुन सकता था क्योंकि उसको उम्मीद थी कि वो आज वहीं रुकने वाला है।

संजोत और तूलिका ने वाइन की बोतल खत्म करके समय को एक बार और ताजा करने की कोशिश की लेकिन संजोत कुछ ज्यादा ही थका हुआ था और वो ऐसी मुलाकात के लिए तैयार भी नहीं था।

"इतना टाई मत करो, मर जाओगे।" तूलिका ने कपड़े पहनते हए कहा।

"अभी तो रात बाकी है।" संजोत ने सोफे पर पड़े-पड़े कहा।

"सॉरी! रात में नहीं, वो एक-दो बजे सुबह जल्दी आ जाता है।" ये सुनकर संजोत का मूड ऑफ हो गया।

उसने अपने आप को सँभालते हुए कहा, "तूलिका।"

तूलिका ने ध्यान नहीं दिया तो संजोत ने फिर एक बार कहा, "तूलिका!"

तूलिका ने इस बार पहले से और कम ध्यान देते हुए कहा, "बकवास शुरू तुम्हारी? ये प्यार-मोहब्बत का नाटक करके बोर नहीं होते?"

संजोत ने पिछली बार की तरह सोच लिया था कि अब इस लड़की से कभी नहीं मिलूँगा लेकिन वही बात है कि हाथी निकल जाता है और पूँछ रह जाती है। और बची हुई पूँछ पूरे हाथी को वापस खींच लेती है।

तूलिका सोफे पर ही रही। संजोत जाने से पहले तूलिका को गले लगाने के लिए आगे बढ़ा लेकिन तूलिका उतना आगे नहीं बढ़ी। दरवाजे की तरफ अकेले बढ़ते हुए संजोत ने अपने आप को तमाम गालियाँ दीं। वो दरवाजा बस खोलकर बाहर निकालने ही वाला था कि तूलिका ने कहा, "कहीं घूमने चलते हैं।"

संजोत की दो मिनट पहले दफ्न हुई उम्मीदें फिर से जिंदा हो गईं, "कब?"

"कल।"

"इतनी जल्दी?"

"मैं तो कल चली जाऊँगी। तुम आ रहे हो तो बताओ।"

"कहाँ, कितने दिन के लिए?" संजोत अब लौटकर सोफे के पास आ चुका था।

"मुझे पहुँचने से पहले पता कहाँ होता कि कहाँ के लिए चली थी। तुम आ रहे हो तो बताओ कहीं-न-कहीं तो पहुँच ही जाएँगे, दुनिया बहुत बड़ी है।" तूलिका अब अपने कपड़े सही कर चुकी थी। उस दौरान संजोत ने अपने दिमाग में सब हिसाब लगा लिया था कि ऑफिस में बहाना क्या मारना है।

तूलिका ने दरवाजा आधा खोल दिया, "ठीक है फिर।"

संजोत के पास ज्यादा सोचने का समय नहीं था। उसने चलने से पहले आखिरी बार तूलिका को गले लगाने के लिए आगे बढ़ा, "कल सुबह प्रोग्राम कन्फर्म करता हूँ।"

उसने तूलिका के माथे पर किस करने के लिए अपना चेहरा आगे बढ़ाया। तूलिका ने उसे झटक दिया, "इतनी बार मना किया है माथे पर नहीं। मेरा

संजोत को फिर एक बार बुरा लगा लेकिन आगे का प्लान खराब न हो इसलिए उसने अपने आप को तुरंत कंट्रोल कर लिया।

तूलिका ने दरवाजा बंद करने से पहले लिफ्ट आने का इंतजार नहीं किया। वो बाथरूम में जाकर बहुत देर तक अपने माथे को धोती रही। बाथरूम में जितने भी फेसवाश थे उसने सब लगाकर अपने माथे को धुला। माथा धुलते हुए 30 साल की तूलिका 15 साल की हो गई। वो उस सुंदर घर से हटकर बरेली के अपने सरकारी घर में पहुँच गई जहाँ बाथरूम में शीशा नहीं था। घर में दिवाली के दिनों जैसे झालरें चमक रही थीं। शीशे पर उसकी रौशनी पड़ रही थी।

घर को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे कि इस घर में नई-नई शादी हुई हो।

तूलिका और उसकी बहन एक कमरे में थे। उनके कमरे से सटे हुए कमरे में उसके डैडी और मम्मी थे। कमरे के बीच में एक दरवाजा था जिसके आगे अलमारी रखकर उसको बंद कर दिया गया था। दरवाजे के चारों तरफ तमाम अखबार लगाने के बाद भी पास वाले कमरे की आवाज इस कमरे तक आती।

तूलिका और उसकी बहन एक-दूसरे को ऐसे चिपकाकर सोतीं जैसे आस-

पास कोई तूफान चल रहा हो और अगर वो एक-दूसरे को पकड़कर नहीं रखेंगी तो दूसरा उड़ जाएगा। घर में नई मम्मी की अभी पहली ही रात थी।

तूलिका की माँ को मरे हुए कुल छह महीने हुए थे। घर में खाली हुई जगह भर चुकी थी। खाली हुई जगह सिर्फ चीजों से नहीं भरती, नई महक और आवाज से भी भरती है। घर में अब एक नई महक थी। माँ की महक खो रही थी जिसको दोनों बहनें सोते हुए एक-दूसरे से लिपटकर बचाने की कोशिश करती थीं। उनके आखिरी दिनों के कपड़े दोनों ने सँभालकर रख दिए थे ताकि कभी-कभार उस महक में अपनी माँ को ढूँढ सकें।

नई माँ बुरी नहीं थी लेकिन ये दो लड़कियाँ अब इतनी बड़ी हो चुकी थीं कि किसी नये को अपनी जिंदगी में आने नहीं देना चाहती थीं।

रात में पड़ोस वाले कमरे से आती हुई आवाजें इन दोनों को तब भी सुनाई पड़तीं जब वो दूसरे कमरे में नहीं भी होतीं। कुछ आवाजों ने मन में ऐसा घर कर लिया था कि रोज रात में तूलिका को वो आवाजें सुनाई पड़तीं। धीरे-धीरे छोटी बहन ने आदत डाल ली लेकिन तूलिका के मन में घर हमेशा खाली ही रहा। जैसे-जैसे घर में नई महक बढ़ती जा रही थी, तूलिका की जगह कम होती जा रही थी।

सुबह उठने पर पापा सबसे पहले तूलिका के माथे पर अपने होठ रखते। तूलिका नहाते हुए घंटों अपने माथे को धुलती। उसको अपने माथे से नई

उसके माथे की महक कम कर रही है।

अपने माथे पर परफ्यूम लगाकर वो सोने चली आई।

सुबह जब करन घर पहुँचा तो उसको जली हुई सिगरेट के बचे टुकड़े वाली कटोरी के नीचे दबा हुआ एक नोट मिला- 'सॉरी! एकदम से जाना पड़ा। नंबर पर कॉल मत करना। मैंने नया नंबर ले लिया है। थैंक्स फॉर बीइंग नाइस!'

इस नोट के नीचे उसने अपने होंठों पर लिपिस्टिक से निशान बनाकर रख छोड़े थे।

बस की खिड़की वाली सीट पर बैठी तूलिका बरेली वाले घर पहुँची। उसके पास कुल मिलाकर बस इतने ही पैसे थे जितने में वो बरेली पहुँच पाती। वही घर जिसमें हर बार जाने पर उसकी जगह पिछली बार से कम होती।

पापा की तबीयत खराब थी। बहन भी आ चुकी थी। घर में कोई भी पुरानी महक नहीं थी। छोटी बहन बाहर से पीएचडी करने के बाद एक कॉलेज में प्रोफेसर हो चुकी थी। जिस लड़के से वो शादी करने वाली थी वो भी साथ आया था। छोटे भाई का प्लेसमेंट एक बड़ी कंपनी में हो चुका था। छोटा

भाई दूसरी माँ से था। तूलिका उसको बहुत प्यार करती थी। तूलिका की छोटी बहन अब वो तूफान की पुरानी रातें भूल चुकी थी। पिताजी भी उन दिनों को ऐसे याद करते थे जैसे पिछले जन्म की बात हो।

सभी के पास कुछ बातें, लोग, शहर ऐसे होते हैं जो पिछले जन्म के लगते हैं।

पापा ने सबको अपने पास बैठाया। वो बड़ी मुश्किल से अपने बिस्तर पर हिलडुल पा रहे थे। कमरे में एक वकील भी बैठा था।

"मैंने अपनी वसीयत बना ली है।" पापा ने जैसे अपनी लड़खड़ाती आवाज में कहा। छोटी बहन ने काटते हुए कहा, "कुछ नहीं होगा आपको, पापा।"

उसने आगे बढ़कर पापा के हाथ को पकड़ लिया। उसकी आँखों में आँसू आ गए। छोटा बेटा और मम्मी, दोनों चुप थे। तूलिका ने एक-दो बार अपनी आँखों पर हाथ मला, ये चेक करने के लिए कि कहीं उसको भी आँसू तो नहीं आ गए।

पापा ने वकील को इशारा किया। वकील ने बोलना शुरू किया- "घर के तीन फ्लोर थे। तीनों बच्चों के नाम एक-एक फ्लोर कर दिया गया।"

वकील अभी ये बोल ही रहा था कि तूलिका बोली, "मुझे इस घर से कुछ भी नहीं चाहिए।"

कमरे से बाहर चला गया। पापा ने वकील को आगे बोलने का इशारा किया।

"पुश्तैनी जमीन और घर, बीवी के नाम रहेगा। आगे उसकी मर्जी है, वो जिसको देना चाहे।"

वकील ने पन्ना पलटा, "फिक्स्ड डिपॉजिट और गहने जिनकी कीमत होगी करीब 80 लाख रुपये, ये सब कुछ तूलिका को मिलेगा।"

कमरे में पहले से काफी सन्नाटा था। अब बस पंखे की आवाज ही सुनाई पड़ रही थी। कमरे से एक-एक करके सब लोग निकल गए। अब कमरे में बस पापा और तूलिका बचे। तूलिका अपने पापा के पास आई। उसके पास शब्द नहीं थे। वो लोग जो लिखते-पढ़ते हैं उनके पास अक्सर ही शब्द खत्म हो जाते हैं।

"कैफे का नाम सोच लिया था तुमने?" पापा ने बड़ी मुश्किल से कहा। वो इतना बोल चुके थे कि हाँफ रहे थे। तूलिका ने हाँ में सिर हिलाया।

"मुझको तो वहाँ सब फ्री में मिलेगा न?" वो हँसे, तूलिका रोई।

"आप तबीयत सही कर लो, पापा।"

पापा ने तूलिका के कटे हुए बालों पर हाथ फेरा और कहा, "तुम्हारी मम्मी को भी छोटे बाल पसंद थे।"

अगले पंद्रह मिनट दोनों चुप रहे। तूलिका ने आँखें पापा से हटाते हुए कहा, "आप मम्मी को रोक सकते थे, पापा। मैं आपको कभी माफ नहीं कर पाऊँगी।"

तूलिका ने यह कहकर जब अपना चेहरा पापा की तरफ किया तो देखा कि वो गहरी नींद में हैं। तूलिका के पीछे वाली दीवार पर एक पुरानी तस्वीर लगी थी। ये तस्वीर तब की थी जब उसकी छोटी बहन पैदा नहीं हुई थी। तस्वीर में तीन लोग थे।

तूलिका ने कैफे कभी नहीं खोला।

कुछ साल बाद तूलिका ने अपनी साइकोलॉजिस्ट के साथ टीनएजर्स के लिए एक क्लीनिक खोला। उसमें उन लोगों की बात ध्यान से सुनी जाती थी, जो इस दुनिया से उम्मीद छोड़ चुके होते थे। तूलिका अपना वो सपना जी रही थी जो उसने कभी देखा ही नहीं था। कुछ सपने हमारे इतने भीतर दबे होते हैं कि पता ही नहीं चलता कि वो हैं। कुछ सपने आवाज नहीं करते।

तूलिका ने एक क्लिनिक से शुरू किया था और पिछले तीन साल में अब उसके ऐसे तीन क्लीनिक हो गए। कई सारे स्कूल और कॉलेज के बच्चे अब

नदी पार करने वाले तीन तरह के लोग होते हैं। पहले वो जो पार हो जाते हैं और पलटकर नहीं देखते। दूसरे वो जो पार होने के बाद दूसरों को पार कराते हैं। और तीसरे वो जो नदी हो जाते हैं।

तूलिका रोज कोशिश करती है फिर भी कुछ बच्चों को वो नहीं रोक पाती। इतनी बड़ी दुनिया में एक भी चीज ऐसी नहीं जो दुनिया छोड़ने से ठीक कुछ लम्हे पहले इतनी जोर से याद आए जिसको थामकर रुका जा सके।

ये बात शुरू में तूलिका समझ नहीं पाती थी लेकिन फिर धीरे-धीरे उसने अपने आप को समझा लिया कि अपनी जिंदगी से सभी हिस्सों की मरम्मत नहीं की जा सकती है। अंदर के कुछ रास्ते हमेशा वर्क इन प्रोग्रेस ही रहते हैं।

तूलिका के हर क्लीनिक में मेज पर उसकी वही तस्वीर लगी हुई है जिसमें तीन लोग हैं। ये तस्वीर ही उसकी उम्मीद थी।

तूलिका ने अपने हिस्से का घर कभी लिया नहीं। संजोत से अब उसकी मुलाकात नहीं होती। अपने पापा से उसकी बात मैसेज से होती है। वो उसको वॉइस नोट भेजते हैं और तूलिका उसका जवाब भी वॉइस नोट में देती है।

पापा की आवाज एक दिन शाम से बंद हो गई थी। वो बहुत कोशिश करके भी कुछ बोल नहीं पा रहे थे। अपने पापा के होंठों पर तूलिका ने अपना माथा रखा। उनसे ठीक वैसी ही महक आई जैसी उसको अपनी मम्मी के पास से आती थी। उनके होंठों की ठंडक ठीक वही थी जैसी कि उसकी माँ के होंठों की थी, जब पंद्रह साल पहले उन्होंने अत्महत्या की थी।

अपनी दूसरी माँ को पकड़कर वो खूब रोई। उसने इतने सालों में पहली बार ही उनको छूआ था। उनको गले लगाकर रोते हुए उसे लगा कि पापा की सारी महक उनमें आ गई है।

पूजा-पाठ के बाद, दिल्ली पहुँचकर उसने अपना मोबाइल खोलकर वॉइस मैसेज रेकॉर्ड किया, "मैंने आप को माफ कर दिया डैडी, आई लव यू!" और अपने पापा के नंबर पर भेज दिया।

मैसेज भेजते ही उसने देखा कि घर पहुँचने की हड़बड़ी में वो देख नहीं पाई और उसने पापा का आखिरी वॉइस नोट सुना ही नहीं था। उसने उस वॉइस नोट को प्ले किया तो लड़खड़ाती आवाज में सुनाई दिया।

"माफ...कर...देना...बेटा!"

कविता कहाँ से आती है!

पुराने लखनऊ के रहने वाले खान साहब एक सुबह गुजर गए। खान साहब के मरने पर न भीड़ इकट्ठा हुई, न ही बेटे फूट-फूटकर रोए। न ही अखबार में कोई खबर आई। मोहल्ले के सब लोग मिलाकर उनके जनाजे में जाने वाले कुल जमा 30 लोग थे। घर में उनके बिस्तर भर जगह खाली हो गई। खान साहब ने अपने जीते जी बच्चों को सेटल कर दिया था। बीवी को गुजरे हुए 10 साल से ज्यादा हो गए थे। बड़ा बेटा हामिद अपनी हार्डवेयर की दुकान चलाता था। खान साहब जब बहुत बोर हो जाते थे तो उस दुकान के गल्ले पर बैठ जाते थे। उनके पुराने दोस्त भी ज्यादा बचे नहीं थे। दो बेटियाँ थीं जिनकी शादी कर वह बहुत पहले ही फारिग हो चुके थे। जिम्मेदारी के नाम पर तो बस यही था कि पोते को स्कूल छोड़ आना और ले आना। बेटे को संस्कार उन्होंने ऐसे दे रखे थे कि अब भी महीने में कुछ पैसे वह अपने आप पिताजी के तकिये के नीचे रख देता। उन पैसों का कोई हिसाब नहीं होता था। खान साहब के पास ऐसा कुछ नहीं था कि वह कोई वसीयत लिखते। जो था सामने था। खान साहब को फिल्में देखने का शौक था लेकिन अब पुराने लखनऊ में उनकी पसंद की फिल्में लगती ही नहीं थीं। वैसी फिल्में अब बनती भी नहीं थीं। कभी-कभार टीवी पर अगर वह कोई बलराज

फिल्म टीवी में नहीं, उनकी आँखों में चल रही होती।

महीने भर में खान परिवार को खान साहब के बिना रहने की आदत हो गई। घर में जो उनके बिस्तर से जगह खाली हुई थी वह अब पोते के खेलने की जगह हो गई। अपने आखिरी दिनों में खान साहब ने कुछ भी बोलना या बात करना लगभग बंद ही कर दिया था। हफ्ते में एक बार वह अपने पुराने बचे हुए कुछ दोस्तों से मिलने बाराबंकी जाया करते थे। सुबह 8 बजे निकल जाते और शाम को करीब 8 बजे तक घड़ी देखकर घर वापस आ जाते। लौटते हुए कुछ ताजी सब्जियाँ और कुछ फल लाना वह कभी न भूलते।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि खान साहब की जिंदगी में ऐसी एक भी बात नहीं थी कि जिसकी कहानी बने या कहानी सुनाई जाए। कहानियाँ असल में वहीं पड़ी होती हैं जहाँ हम उनको रखकर भूल चुके होते हैं। किसी अलमारी में बिछे अखबार की तहों के नीचे, किसी किताब के मुड़े हुए पन्ने पर, किसी बिस्तर की बेचैन करवटों पर, किसी के जाने के बाद में बची हुई खाली जगह में।

एक दिन, हामिद की दुकान पर एक बूढ़ी औरत खान साहब को पूछती हुई आई। इससे पहले मैं यह बात भूल जाऊँ, आपको बता देना चाहता हूँ कि हामिद ने लखनऊ यूनिवर्सिटी से बीए की पढ़ाई की थी। उसका आगे भी

पढ़ने का मन था लेकिन घर की स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह आगे पढ़ पाता।

हामिद और मैं बीए में एक साथ ही थे। हम दुनिया के तमाम लेखकों से लेकर लखनऊ की लड़कियों तक की ढेर सारी बातें करते। एक उम्र में लड़कियों की बातें खत्म नहीं होतीं। जब हम अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में राही मासूम रजा और साहिर की पॉपुलरिटी के किस्से सुनते तो हमें लगता कि काश कि हम भी कुछ ऐसा लिख दें कि लखनऊ यूनिवर्सिटी की सभी लड़कियाँ हम पर जान छिड़क दें।

हमने इसी चक्कर में शायरी पढ़ना और लिखना शुरू कर दी। हम कवि सम्मेलनों में जाने लगे और बड़े शायरों को अलग से मिलने पर हम पूछते कि जनाब शायरी कैसे करते हैं? कविता कैसे बनती है?

एक बार ऐसे ही एक मुशायरे से पहले हमें खुमार बाराबंकवी साहब मिल गए। हम लोगों ने उनको अलग से पकड़ लिया कि गुरुदेव हमें बताएँ कि शायरी कैसे बनती है? उन्होंने हमसे कहा कि कैसे बनती है ये तो खुदा जाने। फिर वो कुछ देर सोच में डूबे रहे और अपना एक शेर हमें कागज पर लिखकर दे दिया।

हाल-ए-गम उनको सुनाते जाइए

शर्त ये है मुस्कराते जाइए

वो कागज का टुकड़ा हमारे लिए कुरान और गीता की तरह था। हामिद और मैं अब दिन-रात गम की तलाश में थे कि जल्दी से हमारे पास ज्यादा गम हो जिसको हम शायरी में ढाल सकें। लेकिन वही बात है, अगर ये सब इतना आसान होता तो कोई भी शायरी नहीं कर लेता।

हम दोनों कवि सम्मेलन और मुशायरों में शायर से मिलने के चक्कर में बहुत से काम फ्री में कर देते। जब हम कवि सम्मलेन से पहले कवियों को शराब पीते देखते तो सोचते कि शायद सारी शायरी किसी शराब की बोतल में मिले। हम चुपके से पीते और शायरी नहीं मिलती तो अपने सिर दर्द को लेकर दुखी होते।

हमारी न जाने कितनी शामें इस सवाल के जवाब में बीतीं कि आखिर कविता आती कहाँ से है!

इस सवाल का सही जवाब हमें किसी किताब में किसी कवि से मिलकर नहीं मिला। आखिरकार थककर हमने इसका जवाब ढूँढना बंद कर दिया। इसीलिए शायद हमारी जिंदगी के कई जरूरी जवाब एक थकावट की पैदाइश हैं। जवाब ढूँढना बंद कर देना एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब लोग सवाल बदलकर अपने आप को छोटा-मोटा धोखा देते रहते हैं।

कविता लिखने के चक्कर में ही हमने एक-दो बार प्यार भी किया। सोचा कि यहाँ से शायद गम मिले और यह हिंदी फिल्मों और इस दुनिया का सबसे ज्यादा आजमाया हुआ तरीका भी था। प्यार करने के लिए हमने जो लड़कियाँ चुनीं, वो भी आपस में सहेलियाँ थीं। हमें लगा कि अगर प्यार करना ही है तो ऐसे करना चाहिए जो आसानी से हो जाए ताकि हम जल्द से जल्द प्यार से अपना पीछा छुड़ाकर उस गम को पा सकें, जिससे कविता आती है।

अब अगर प्यार होना और प्यार से पीछा छुड़ाना इतना ही आसान होता तो पूरी दुनिया शायर होती। हम अपने दौर में जब पूरी तरह प्यार में डूबे हुए थे तो हमने एक दिन सोचा कि इन लड़कियों के बिना हम कैसे रहेंगे! इस खयाल ने हमें बहुत दिनों तक परेशान किया। लेकिन हम दोनों के लिए शायर बनना ज्यादा बड़ी बात थी बनिस्बत इसके कि हम प्यार में होते हैं। ठीक वैसे ही जैसे एक बार मनोहर श्याम जोशी ने कहा था कि युवा लेखक थे हम और हमारे घर में रोटियाँ पकने से ज्यादा महत्वपूर्ण यह होता था कि दिमाग में कहानियाँ पकें।

हमने जो ब्रेकअप किया, हालाँकि उस समय उसको ब्रेकअप नहीं बेवफाई बोला जाता था। एकदम से हम दोनों ने उन दोनों लड़कियों से बात करना बंद कर दिया। रोने के बाद उनकी भरी हुई आँखें हमें लिखने के लिए बेचैन तो करतीं, लेकिन जब भी हम लिखने बैठते हैं तो सारे खयाल हमें नकली

लिखते तो हमें खुद ही लगता कि नहीं यार अभी कविता आई ही नहीं, अभी हम कविता बना रहे थे। कविता जब आती है तो खुशबू वाले फूल जैसी होती है और जब बनाई जाती है तो उस फूल की प्लास्टिक कॉपी जैसी लगती है।

हामिद जब एक बार ऊब गया तो उसने कविता लिखनी छोड़ दी। उसको प्यार करने और कविता लिखने में एक काम चुनना था, उसने प्यार चुना। फिर कुछ साल बाद उसे प्यार करने और घर को चलाने में एक चीज चुननी थी, उसने घर की जिम्मेदारी को चुन लिया। मैं अब सरकारी नौकरी की तैयारी करना शुरू कर चुका था। साथ ही मैंने पोस्ट ग्रेजुएशन का फॉर्म भी डाल दिया था। लखनऊ में एडमिशन मिलने में कोई दिक्कत नहीं थी तो दोनों काम साथ में चल रहे थे। हामिद ने अब खान साहब के साथ मिलकर हार्डवेयर की दुकान को ही अपनी शायरी मानकर काम करना शुरू कर दिया था। उसको अपनी दो बहनें दिखती थीं, जिनकी शादी करनी थी।

मेरा दो साल तैयारी के बाद भी कहीं नहीं हुआ तो मैंने साथ ही पीएचडी के लिए अप्लाई कर दिया। कुछ तो जान-पहचान थी और साथ ही पीएचडी में ये मौका था कि किसी को कहना नहीं पड़ता था कि खाली बैठा हूँ। साथ में अब भी सरकारी नौकरी की जमकर तैयारियाँ चल रही थीं।

मुझे अब तक कुल साढ़े चार बार सच्चा प्यार हो चुका था। जो प्यार चल रहा होता मैं उसको आधा प्यार बोलता। हर नई लड़की के जाने का गम पहले वाली लड़की से ज्यादा होता, लेकिन इतना नहीं होता कि कविता की एक भी सच्ची लाइन उतर सके।

हामिद से जो मुलाकात पहले रोज हुआ करती, वो होने में अब महीने बीत जाते। उसको अपनी हार्डवेयर की दुकान से नफरत थी, लेकिन वो किसी तरह एक-एक दिन काट रहा था। अब उसने मुशायरे में जाना छोड़ दिया था। उसको सब कविताएँ नकली लगतीं।

हम जब कभी मिलते तो पुराने दिनों को याद करके हँसते। हँसते-हँसते वो उदास हो जाता। एक बार उसने कहा, "यार सोच रहा हूँ अपना नाम बदल लूँ।"

मैंने पूछा, "नाम बदलने से क्या होगा?"

"होगा कुछ नहीं। कम-से-कम हामिद नाम से जो अच्छे दिन बीते हैं, लगेगा कि वो हामिद कोई दूसरा था और दुकान पर बैठकर रुपये का हिसाब करने वाला आदमी कोई और है।"

इस बात का कोई सही जवाब मेरे पास कभी नहीं था। हम चुप हो जाते, हम सिगरेट पीते, दो-चार कप चाय पीते और हर चलने से पहले एक ही

हर बार मुलाकात पिछली बार से ज्यादा दिनों के बाद होती। हामिद ने कभी अपना नाम नहीं बदला। उसने काम में मन लगाया और छोटी-सी दुकान से काम बढ़ाकर एक बड़ी दुकान कर ली। अब जब हम कभी कुछ खाते-पीते तो पैसे हामिद देता। मेरी पीएचडी हुई और जुगाड़ कुछ ऐसा सेट हुआ कि मैं असिस्टेंट प्रोफेसर हो गया। जुगाड़ इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि जिस समय की ये बात है उस समय एक से एक अच्छे कैंडिडेट जुगाड़ न होने की वजह से कभी प्रोफेसर नहीं बन पाए।

मुझे शुरू में बड़ा खराब लगता था लेकिन एक समय के बाद मैंने अपने मन को समझा लिया कि मेरा सलेक्शन जुगाड़ से नहीं, मेरे टैलेंट की वजह से हुआ है। सलेक्शन होते ही मेरी शादी तय कर दी गई। क्योंकि जिन्होंने जुगाड़ लगाया था उनकी भतीजी की उम्र शादी वाली हो चुकी थी। बढ़िया आदमी थे वर्ना अपने परिवार के आगे बड़े भाई का कौन सोचता है।

मेरी शादी हो गई। मेरी बीवी वैसी ही थी जैसी कोई भी लड़की होती है। लेकिन मुझे ये बर्दाश्त नहीं हुआ कि मुझे नौकरी दिलाने के बदले मेरा सौदा कर दिया गया था। वो नौकरी जो मुझे रुतबा दे रही थी। इसलिए मुझे अच्छी भी लगती थी। एक बार असिस्टेंट प्रोफेसर बन गया तो उसके बाद बाकी के कुछ सालों में मैं अपने कॉलेज और यूनिवर्सिटी की पॉलिटिक्स भी

सीख गया।

जिंदगी में सब कुछ था लेकिन फिर भी कुछ अधूरा था। हामिद की जिंदगी अधूरी थी लेकिन घर-बार में उसके पास जिंदगी के खालीपन के बारे में सोचने की फुरसत नहीं थी।

मुझे कॉलेज में बहुत ज्यादा खाली टाइम मिलता। बच्चा होने के बाद बीवी के पास इतना समय नहीं था। मैं कभी उसमें अपनी प्रेमिका जैसा कुछ नहीं ढूँढ पाया। हम वैसे ही थे जैसे मेरे पिताजी की शादी थी। मेरे पिताजी की शादी वैसी ही थी जैसे मेरे दादाजी की शादी थी। मुझे नहीं मालूम कि यह कहानी कहाँ से चली आ रही थी लेकिन यह कहीं आगे जाती हुई दिखती नहीं थी।

एक बार फिर से मैं कविता की तरफ लौटा। इस बार जो कविताएँ आईं उनका गम असली था। इस बार अपनी कविता में दर्द डालने के लिए मुझे बहुत सोचना नहीं पड़ा। कविताएँ जो मैंने कुछ लोगों को सुनाईं तो उनको भी वो अच्छी लगीं। मैंने हामिद को बताया भी कि अब मैंने फिर से कविता लिखना शुरू कर दिया है। वह शायद अपने काम में बहुत बिजी था, बड़ी थकी हुई आवाज में बोला, "लिखो भाई जान, आप ही लिखो। कोई तो लिखे।"

उसने न वो कविता पढ़ने के लिए माँगी, न मैंने उसको कविता पढ़ने के

आ गया कि यह सही में अच्छी कविता है।

कुछ ही दिनों में वह कविता हिंदी की एक प्रख्यात मैगजीन में छपी। उस कविता की तारीफ में एक छोटा-सा टुकड़ा भी छपा कि पूरा हिंदी जगत मुझ में एक नई सँभावना देख रहा है। इसके बाद एक के बाद एक मैंने धड़ल्ले से अगले एक साल में ढेर सारी कविताएँ लिखीं जो कई मैगजीन में छपीं। मुझे अब पूरी तरह से यकीन आ चुका था कि मैं अच्छी कविताएँ लिखने लगा हूँ।

इस बीच मै कई जगह कविता सुनाने भी गया। उनके बने हुए कुछ वीडियो ठीक-ठाक चल पड़े। एक-दो बार टीवी पर भी कविता सुनाने के लिए बुलाया गया। मैं सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव था। सोशल मीडिया पर मेरी एक अलग दुनिया थी। मैंने एक-दो बार हामिद को वहाँ पर ढूँढा लेकिन वो मिला ही नहीं। उसकी दुनिया में शायद सोशल मीडिया की जगह नहीं थी।

मैंने अपना एक वीडियो हामिद को भेजा। कुछ दिन बाद उसको कॉल करके पूछा कि कविता कैसी लगी। वह बोला, "भाई, ऊपर वाला आपसे कविता लिखवा ले रहा है। यही कितनी बड़ी बात है। अच्छा-खराब तो मेरी क्या समझ है?"

मुझे ऐसा लगा कि हामिद मेरे कविता लिखने से खुश नहीं था। हो सकता

है कि उसको मेरी कविताएँ वो दिन याद दिलाती हों जिन्हें वो याद नहीं करना चाहता हो।

एक समय के बाद मैंने भी उसको कविता भेजना बंद कर दिया। मुलाकात हुए एकाध साल से ज्यादा हो चुका था। खान साहब गुजरे हैं तो उसका फोन आया। उसने आने के लिए नहीं बोला, बस बताया। मरने के बाद की तमाम व्यवस्था करने में बहुत व्यस्त था।

मुझे कवि सम्मेलन में जाना था तो मैं उस दिन जा नहीं पाया। खान साहब के मरने के तीन महीने बाद मुझे एक दिन अचानक से ध्यान आया कि हामिद से मिलना चाहिए। इधर तीन महीने से मैं कोई नई कविता लिख भी नहीं पाया था।

जब मैं हामिद की दुकान पर पहुँचा तो वह हमेशा की तरह व्यस्त था। मेरे जाते ही उसने दो कप चाय मँगवाई, साथ ही सिगरेट भी मँगवाई। जब वह दुकान के नौकर को सिगरेट का ब्रांड बता रहा था तो मैंने कहा कि मैंने छोड़ दी है। यह सुनकर वह बोला, "भाई जान, छोड़ तो हमने भी दी है। इतने सालों बाद मिल रहे हैं, पुराने दिनों की खातिर एक हो जाए।" मैं मना नहीं कर पाया।

जब लड़का चाय लेने गया तो हामिद ने गल्ले के पास से एक मैगजीन की कॉपी निकाली जिसमें मेरी कविता छपी थी। वह मैगजीन मेरी तरह बढ़ाते हुए बोला, "भाई यह कविता बहत अच्छी लिखी है। इस पर अपने ऑटोग्राफ दे दीजिए।"

उसने वह मैगजीन सँभालकर रखी थी, इस बात से मैं चौंक गया। मैंने न जाने कितने ऑटोग्राफ दिए थे लेकिन उस दिन मैगजीन पर ऑटोग्राफ देते हुए मेरे हाथ बहुत देर तक काँपे।

चाय और सिगरेट आने से पहले ही हमारी बातें खत्म हो चुकी थीं। सच पूछो तो मैं उसकी दुकान से चल भी दिया होता अगर उसने उस बूढ़ी औरत के बारे में ना बताया होता।

तो हुआ कुछ ऐसा था कि वह बूढ़ी औरत खान साहब को पूछते हुए दुकान में दो-तीन बार आई। उस बूढ़ी औरत को यकीन नहीं था कि अब खान साहब नहीं रहे। हर बार जब हामिद उनसे खान साहब से काम का पूछता तो वह कुछ बताती नहीं। हामिद को एक बार को लगा कि कहीं खान साहब ने कोई उधार तो नहीं ले रखा था। जब वह बार-बार आने लगी तो हामिद ने एक दिन परेशान होकर उसको डाँटकर भगा दिया।

हामिद ने दो कप चाय और लाने का इशारा किया। पानी पीकर अपने गले को कुछ देर तक खखारता रहा। एक दिन बहुत गंदा डाँट खाने के बाद उस औरत ने अपने पास से पाँच रुपये की सस्ती-सी नोटबुक हामिद के हाथों में

दे दी।

उस नोटबुक में खान साहब की लिखी हुई पचासों कविताएँ थीं। हामिद अपने अब्बा की हैंडराइटिंग खूब अच्छे से पहचानता था और उसको अब भी इतनी शायरियाँ और कविताएँ याद थीं कि वह यह जान सके कि उस नोटबुक में लिखी कविताएँ असली थीं, खालिस थीं, खान साहब की अपनी लिखी हुई थीं।

इतना बताने के बाद हामिद ने पास में ही रखी सुराही के पानी से अपना मुँह धोया और एक ग्लास पानी पिया। हामिद ने एक पाँच रुपये वाली नोटबुक वहीं गल्ले के पास से निकालकर मेरे सामने रखी। मैं वो नोटबुक पलट रहा था। उस नोटबुक के पहले पन्ने पर लिखा था- 'तुम ये शायद कभी न पढ़ो। वो सब कुछ जो कभी कह नहीं पाया लिख दिया। मेरे बच्चे, तुम्हारे लिए।'

मैं अभी नोटबुक पलट ही रहा था कि हामिद बोला, "यार कभी लगा ही नहीं कि अब्बा लिख भी सकते हैं।"

उसने सालों बाद यार कहा था उसने। मैंने सालों बाद यार सुना था। मेरी उम्र पीछे की तरफ लौट रही थी। मैं अब वो लड़का था जिसने एक भी कविता नहीं लिखी थी। हामिद वो लड़का हो गया था जो कविता लिखना

हामिद की आवाज से मेरा ध्यान टूटा, "भाई आपकी तो बहुत जान-पहचान होगी। अगर इसकी किताब छप जाती तो बढ़िया रहता।"

मुझे याद नहीं आ रहा था कि उसने कुछ देर पहले यार बोला भी था या नहीं। मुझे अब खान साहब की शायरी से ज्यादा उस बूढ़ी के बारे में जानना था। मैंने नहीं पूछा कि वह कॉपी भी उस बूढ़ी औरत के पास कैसे पहुँची।

"अम्मा के जाने के बाद से अब्बा से इतनी बात तो होती नहीं थी। घर से अम्मा चली जाती है तो घर का पुल टूट जाता है। खान साहब दिन भर में कुल मिलाकर अगर 15 शब्द बोल देते थे तो बहुत बड़ी बात हो जाती थी। मैं कसम खाकर बता रहा हूँ भाई कि मुझे यह डर भी लगा कि कहीं अब्बा ने इनसे शादी तो नहीं कर ली थी। पता चला कि कोई और भी भाई हो और क्या पता इनके पास कोई वसीयत भी हो।"

"तो ऐसा कुछ निकला?"

"नहीं, कुछ नहीं निकला। अब्बा महीने में एक-दो बार उनके यहाँ चले जाया करते थे। और जब मिलते तो उनसे खूब बातें करते। उनसे हम लोगों की बहुत तारीफ करते। मुझसे और मेरी बीवी से बहुत खुश थे। लेकिन उन्होंने कभी बताया नहीं। बाप लोग साला बोलते कहाँ हैं। इन बूढ़ी औरत से कोई उनका संबंध भी नहीं था। बस उनका किराया वगैरह दे दिया करते

थे, कुछ खर्चा-पानी दे देते थे। खान साहब बहुत दिन से इनके यहाँ नहीं गए तो उनको चिंता हुई और वह ढूँढते हुए यहाँ आईं। मुझे तो लगा था कि वो कुछ पैसे-वैसे ना माँगें।"

"उन्होंने कुछ भी नहीं माँगा?" मैं अब तक पूरी नोटबुक पलट चुका था।

"नहीं, कुछ भी नहीं। बस वह बताने आई थीं कि अगर कोई उनके लायक काम हो तो वह दिलवा दे। पिछले दस साल से खान साहब ने काम छुड़वा दिया था।"

हमारी स्पेशल चाय बनकर आ चुकी थी। हमने सिगरेट का एक कश लगाया। सिगरेट के धुएँ से एक बादल बनकर हवा में उड़ा और हमारी जिंदगी भर का पानी बरस गया। पानी तेज होता जा रहा था और लखनऊ नया। हम उस लखनऊ में थे जब एक दिन यूनिवर्सिटी में हम अपनी नोटबुक लेकर बैठ गए थे कि तब तक नहीं उठेंगे जब तक कविता लिख नहीं लेंगे। शाम तक हम दोनों की नोटबुक एकदम खाली थी। हम पूरे लखनऊ में घूम-घूमकर कविता ढूँढ रहे थे। साइकिल के पंचर बनाने वाले को धीमे-धीमे पंचर सही करते देख हमें लगता कि पंचर नहीं बना रहा बल्कि वो कविता लिख रहा है। और एक हम हैं कि कविता आ ही नहीं रही। सिगरेट खत्म हुई, हम वापस आए और फिर अगली सिगरेट जलाकर हम कुछ देर उस पुराने लखनऊ में ठहरे।

"फिर हआ क्या उनका?" मैंने सिगरेट खत्म करने के बाद पूछा।

"होना क्या था भाई जान, हर महीने उनका किराया और खर्चा दे देता हूँ। यह मान लेता हूँ कि खान साहब कहीं गए नहीं, गल्ले पर बैठे हैं। महीने में एक बार मिल लेता हूँ और हर बार जब मिलता हूँ तो पूछता हूँ कि खान साहब क्या-क्या बताते थे। हर बार कोई नई बात पता चल जाती है। अपने बाप को शायद मरने के बाद ही आदमी जान पाता है।"

चाय खत्म हो चुकी थी। बिलकुल कॉलेज के दिनों की तरह हामिद ने बिना पूछे तीसरी चाय मँगवा ली थी। अगली चाय हमने उसी खामोशी से पी, जैसे हम कॉलेज के दिनों में पीते थे।

हामिद ने अपने जीवन की सबसे सुंदर कविता लिख दी थी और मैं मैगजीन पर छपी अपनी नकली कविता को देखकर मुस्कुराने की कोशिश कर रहा था।

मैंने सुना था, ऊपरवाला मेहरबान होता है तब आदमी कविता लिख पाता है और जब ऊपरवाला बहुत मेहरबान होता है तब वो जीवन को कविता बना देता है।

हामिद ने अपने जीवन की वो इकलौती कविता लिख दी थी जिसको लिखने के लिए मैं उम्र भर तरसता रहा। उस दिन के बाद से मैंने कभी

कविता नहीं लिखी, क्योंकि मुझे नहीं पता कविता आती कहाँ से है और उसे भेजता कौन है!

भूतनी

कुछ आत्माएँ इतनी शापित होती हैं कि उनको भूत बनने के लिए मरने की जरूरत नहीं पड़ती। जिंदा आदमी भूत से परेशान होता है, लेकिन हमने ये नहीं सुना कि भूत किसी जिंदा आदमी से परेशान होता हो।

पुराने लखनऊ की एक भूतिया हवेली में भूत नहीं रहते थे। हर शहर में भूतिया हवेली होती है। हवेली न भी हो तो कोई घर, कोई खंडहर, कुछ तो होता ही है। वहाँ जो लोग रहते थे उनको आस-पास वाले भूत मानने लगे थे। वहाँ रहने वालों के चेहरे इतने गंदे और घिनौने थे कि आखिरी बार उनको एक विदेशी पत्रकार ने अपने डीएसएलआर के लेंस से देखा था।

ये वे लोग थे जिनके पास शीशे नहीं थे, लेकिन चेहरे थे। रहने को घर नहीं था, लेकिन हवेली थी।

इस हवेली में दिन भर में बहुत तरह के लोग आया करते। कभी कुछ भटके हुए प्रेमी जिनके पास प्रेम करने की कोई जगह नहीं होती। यहाँ की दीवार और जमीन पर वो प्यार लिखकर जाते, कभी-कभी बहाकर भी।

कभी कोई पुलिस वाला आता जो इस हवेली की आड़ में पैसे लिया करता या नये लखनऊ में रहने वाली कोई पुरानी वेश्या आती जिसके चेहरे की

कभी-कभार यहाँ कुछ उस उम्र के बच्चे भी आते जिनको लगने लगा था कि वो अब बच्चे नहीं रहे। वो भीख माँगने वाली किसी अधेड़ उम्र की औरत को पैसे देकर मर्द बनते। मर्द बनने से ठीक पहले वो उस औरत का नाम पूछते और वादा करते कि फलानी बाई, तुम्हारा नाम कभी नहीं भूलूँगा।

मर्द बनते ही वो उसका नाम भूल जाते। इस शहर में मर्द बनना इतना सस्ता था, लेकिन इसी शहर में मर्दाना कमजोरी का विज्ञापन शहर से सटी हर दीवार पर सस्ते पेंट से लिखा हुआ दिखता। पूरा शहर मिलकर भी भिखारी को जगह नहीं दे पाता। पूरे शहर की लाइटें मिलकर उसको रोशनी नहीं दे पातीं।

हवेली के अंदर वालों के लिए बाहर वाले भूत थे जो अपना चेहरा रंगकर बड़ी-बड़ी बातें करते थे। वो रोज इस शहर के हर चौराहे पर थूकते, इतना थूकते कि आसमान उसमें पानी मिलाकर पूरे शहर में बिखरा देता। वो बरसात में इस शहर पर ऐसे हँसते जैसे भूत नहीं उस दुनिया का भगवान हो जो लीला करके खुश होता है।

पिछले जाड़े में लखन काका के मरने के बाद कुल जमा यहाँ तीन लोग बचे थे। लखन काका इस हवेली में सबसे पुराने थे। जब वो आए थे तब हवेली

खंडहर नहीं हुई थी। कहने वाले तो ये भी कहते थे कि ये हवेली उन्हीं की थी। लड़के ने घर से निकाला तो अपने पुश्तैनी मकान में आकर रहने लगे। हवेली बड़ी थी लेकिन पैसा बिलकुल नहीं था। अब नाक ऊँची थी, माँगने भी किससे जाते! बस एक बार घर पर एक चालीस साल की सलमा बीबी भीख माँगने आईं तो काका ने उनको अपने यहाँ काम पर रख लिया। जब कोई और चारा नहीं बचा था तो हवेली का सामान एक-एक करके बेचने लगे।

सलमा के पति ने दूसरी शादी के बाद उनको घर से निकाल दिया था। उसके पति को वो दुनिया की सबसे बदसूरत औरत लगती। लखन काका को उस बदसूरत औरत में एक खूबसूरत बुढ़िया दिखती। ऐसा नहीं था कि सलमा बीबी लौटकर अपने बाप के घर नहीं गईं। पर दो दिन में ही उनको समझ आ गया कि वहाँ रुकना बेकार था।

सलमा बीबी ने बाहर एक-दो जगह झाड़ू-पोछे का काम पकड़ लिया और लखन काका का खयाल रखने लगीं।

अब तक इस हवेली में इंसान रहते थे। पैसे कम हो रहे थे। लखन काका अगर हवेली बेच देते तो अच्छे-खासे पैसे आ जाते और बाकी उम्र को सही से काट सकते थे। लेकिन वो कहते कि इस घर में इतनी यादें हैं, उनको कैसे बेच दें भला!

जातीं वो लोग अच्छे थे। अपना जूठा बचा हुआ खाना सलमा बीबी को दे देते। खाना देने वाली मेम साहब कभी समझ नहीं पातीं कि सलमा बीबी खाना कभी खातीं क्यों नहीं, हमेशा एक पॉलीथीन में भरकर ले जातीं। पूछने पर हर बार बहाना बना देतीं, "अभी मन नहीं कर रहा, मेम साहब।"

घर जाकर लखन काका के सामने भी बहाना बना देतीं, "आप खाय लो, हम तो मेम साहब के यहाँ खाय आयन हैं।"

सलमा बीबी को हवेली में अच्छा लगता। उनका पूरा खानदान मिलकर जितनी जगह में रहता, उतनी जगह में सलमा बीबी अकेले रहतीं।

एक बार उनकी मेम साहब ने उनको अपनी साड़ी दे दी थी तो सलमा बीबी ने अलग से पैसे देकर उसको प्रेस करवाकर पहने हुए अपने आप को शीशे में देखा। वो अपने भीतर हवेली की मालकिन की शक्ल ढूँढने लगीं। उस दिन उन्होंने लखन काका को बहुत प्यार किया। वो मेम साहब बन गई थीं और लखन काका मेम साहब के पति।

उस साड़ी को उन्होंने सँभालकर रख लिया। जब किसी के यहाँ कोई त्योहार या बर्थडे वगैरह होता तो वही एक साड़ी को वो ऐसे पहनकर जातीं जैसे वो शादी का जोड़ा हो।

लखन काका की उम्र 70 पार हो चुकी थी। काका का चलना-फिरना लगभग बंद हो गया था। ऐसे ही एक दिन सुबह उन्हें एक सरकारी कागज मिला। उनके भाई और बेटे ने मिलकर उनसे हवेली खाली करने के लिए कई बार कहा था। लड़के को ये तो बर्दाश्त था कि बाप बिना पैसे के रहे लेकिन उसको ये बर्दाश्त नहीं था कि घर में एक काम वाली बाई रहती है।

कागज पढ़ते ही लखन काका ने तब तक गाली देना जारी रखा जब तक खाँसते-खाँसते उनके मुँह से खून नहीं आ गया। उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वो कोर्ट तक जा पाते। कोर्ट में केस लड़ना तो बहुत दूर की बात थी।

उन्होंने सलमा बीवी को अपने भाई के घर भेजा कि एक बार वह आकर आमने-सामने बैठकर बात कर लें। भाई ने सलमा बीबी को देखते ही गाली देते हुए घर से निकाल दिया। लखन काका ने एक बार सलमा बीबी को अपने बेटे के घर भी भेजा। उसने भी सलमा बीबी को धक्के मारकर घर से बाहर निकाल दिया। वो अपने बाप से मिलने नहीं आया।

दो जगह से इतनी बेइज़्ज़ती कराने के बाद भी सलमा बीबी ने कभी लखन काका को भला-बुरा नहीं कहा, बल्कि हर बार वही समझाती रहीं कि कहीं फँस गए होंगे। कुछ काम आ गया होगा। बोला तो दोनों ने है कि जल्दी आएँगे।

लखन काका को पता था कि सलमा बीबी उसे झूठ बोल रही हैं, लेकिन कछ झूठ इसीलिए बोले जाते हैं कि एक सच की इज़्ज़त बची रहे।

न भाई आया न बेटा आया, लेकिन कुछ दिन बाद कोर्ट का दूसरा कागज भी आ गया, जिस पर लिखे हुए का कुल इतना मतलब था कि अगर जल्द ही जवाब न दिया गया तो यह हवेली खाली करनी पड़ेगी। तब लखन काका खुद रिक्शा लेकर अपने भाई के घर पहुँचे। लेकिन भाई ने पानी तक नहीं पूछा।

घर में अब इतना सामान बचा नहीं था कि जिसको बेचा जा सके। उस दिन भाई के यहाँ से लौटते हुए लखन काका को पता चला कि उनके बेटे ने सलमा बीबी पर हाथ उठाया था। लौटने के बाद सलमा बीबी का हाथ पकड़कर वह बहुत देर तक रोते रहे। सलमा बीबी को रोना नहीं आता था लेकिन लखन काका की आँखों से जिस रंग का पानी बह रहा था वह पानी ही तो वो इतने सालों से ढूँढ रही थीं। उस दिन सलमा बीबी को अपनी घटिया जिंदगी पर पहली बार मलाल हुआ कि लखन काका से वह कुछ साल पहले क्यों नहीं मिल पाईं।

जब पुलिस वाले घर खाली कराने आए तो उनकी गाड़ी के पीछे लखन काका का बेटा और उनका भाई, दोनों खड़े थे। ऐसे खड़े थे कि वो दिख नहीं रहे थे, छुपे हुए थे।

आस-पास ठीक-ठाक भीड़ जमा हो चुकी थी। पुलिसवाला जैसे ही आगे बढ़कर लखन काका को घर से बाहर निकालने लगा, सलमा बीबी को कुछ और समझ नहीं आया तो उन्होंने अपने कपड़े फाड़ दिए और उस पुलिस वाले पर लपकीं। उस एक सेकंड में सलमा बीबी एक साधारण औरत से एक देवी हो चुकी थीं। उनका यह रूप देखकर भाई और बेटा दोनों वहाँ से खिसक लिए। पुलिस वाले भी कुछ गालियाँ बुदबुदाते हुए मोहल्ले से निकल गए।

जब भी पुलिस वाले आते सलमा बीबी ऐसे ही अपना कोई-ना-कोई रूप दिखाकर उनको भगा देतीं। जब काम पर भी जातीं तो उनको डर लगता कि इस बीच कोई आकर लखन काका को उस घर से निकाल न दे। इस घर को अपना मानने लगी थीं। तो क्या हुआ कि किसी कागज पर सलमा बीबी के नाम यह घर नहीं लिखा हुआ था। लखन काका की आँखों का पानी उनकी वसीयत थी।

धीमे-धीमे ऐसे ही लड़ते-लड़ाते, करते-कराते दो साल बीत गए। लखन काका का चलना-फिरना लगभग बंद हो गया। सलमा बीबी की ताकत भी अब पहले जैसी नहीं बची थी।

हवेली का दरवाजा तक बिक चुका था। रात में कभी आस-पास के मजदूर वहाँ आकर अपना चूल्हा जला लेते, बिस्तर लगा लेते और खाना बनाने के

भूला-भटका भिखारी वहाँ आकर बैठ जाता तो न लखन काका उसको भगाते, न ही सलमा बीबी कुछ कहतीं।

वह घर आस-पास के सारे बेघरों का ठिकाना हो गया। यहाँ पर आकर जो भी रहता उसका कोई-न-कोई घर तो था लेकिन उनको किसी-न-किसी वजह से घर से निकाल दिया गया था।

ऐसे लोग भी आकर वहाँ पर रहने लगे थे जो घर से भागे हुए थे। जो भी आता उससे जितना भी बन पड़ता, वह लखन काका और सलमा बीवी को दे दिया करता।

सुबह के वक्त यह पता नहीं होता कि शाम के वक्त का खाना कौन देगा। एक बार ऐसे ही कोई रिक्शावाला रात में वहाँ पर नशा करने बैठा। उसने जहरीली शराब पी थी। रात गए वह मर गया। सारे लोगों ने मिलकर उस रिक्शा वाले को उसी हवेली में गड्ढा खोदकर दफना दिया।

यह बात धीरे-धीरे पूरे मोहल्ले में फैल गई थी और पूरे मोहल्ले वाले इस घर को और इसमें रहने वालों को वहाँ से भगाने के लिए तरह-तरह की कहानियाँ बनाने लगे। किसी ने कहा कि यहाँ पर रात में वेश्याएँ आती हैं। किसी ने बताया कि यहाँ पर किसी प्रेत का साया है। जो भी यह घर

खरीदेगा उसके घर में लड़ाई हो जाएगी, बाप और बेटे अलग हो जाएँगे। जितने मुँह उतनी कहानियाँ।

कोर्ट के आदेश पर एक बार इस घर पर बुलडोजर भी चला तो बाहर का अहाता अब सड़क में जाकर मिल गया। लेकिन इस घर में रहने वाले तमाम लोगों ने भी ठान लिया था कि वह इस घर को नहीं छोड़ेंगे। यह घर नहीं, उनकी कब्र था और कब्र छोड़कर कोई नहीं जाता।

कोर्ट में फैसला हो चुका था कि अब यह घर लखन काका के भाई और उनके बेटे का है। पुलिस वाले को वो पैसा दे चुके थे। बिल्डर से उनकी बात हो चुकी थी।

जैसे ही पास के थाने में नया पुलिस थानेदार आया, उसको लगा यह तो सोने की खान है। उसने भाई और बेटे से एडवांस में एक लाख रुपये लिए। रात में थानेदार दारू पीकर आया और सलमा बीबी पर चढ़ गया। लखन काका वहीं सामने थे लेकिन कुछ कर नहीं सकते थे। सलमा बीबी के कपड़े जहाँ-जहाँ फटे थे, उन्होंने कभी उसको सिलवाने की जहमत नहीं उठाई। वो फटे हुए कपड़े इस शहर का अखबार थे। वह अखबार जो रोज हमारे सामने पड़ता है और हम पन्ना पलट देते हैं।

पुलिसवाला वहाँ अक्सर आने लगा। पुलिस के डर से जो रहने वाले लोग थे वहाँ से किसी और पुरानी हवेली की तलाश में निकल गए। अब हालत

सलमा बीबी ने सब कुछ झेलते हुए भी घर नहीं छोड़ा। ज्यादा-से-ज्यादा वह थोड़ी देर के लिए अपने मोहल्ले के बाहर भीख माँगने निकल जातीं। एक पुरानी कहावत है कि भेष से भिक्षा मिलती है। उस थानेदार ने इस घर का बिजली-पानी कटवा दिया था। सलमा बीबी को याद ही नहीं था कि वह आखिरी बार नहाईं कब थीं। उनके सपनों में गरम रोटियाँ आती थीं। रोटियाँ इतनी गर्म होती थीं कि जब लखन काका और सलमा बीबी उसको हाथ लगाते तो उनके हाथ जल जाते।

लखन काका ने आखिरी साँस लेने से पहले सलमा बीबी से अगले जन्म में मिलने का वादा किया। इस उम्मीद में कि शायद स्वर्ग और नर्क के बीच कोई पतली गली हो।

लखन काका को इसी हवेली में जलाया गया। बहुत मिन्नत करने पर आधा लीटर तेल मिला। उनकी लाश सही से जल भी नहीं पाई। लखन काका के मरने के बाद हवेली सूनी हो गई। सलमा बीबी जब हवेली के अंदर से बाहर देखतीं तो उनको लगता कि बाकी की पूरी दुनिया में भूत रहते हैं। वो बाहर निकलतीं तो उनको डर लगता।

लखन काका के जाने के बाद पुलिस वाले ने उन्हें उठाकर जेल में डलवा

दिया कि साली बीच शहर में धंधा करती है। सलमा बीबी ने जेल में जाकर भर पेट खाना खाया। भर पेट खाने की वजह से पेट में दर्द हुआ, लेकिन वो दर्द मीठा था।

जब पुलिस वाला उन पर केस बनाकर हवेली से अलग कर रहा था तो सलमा बीबी के शरीर का एक-एक रोआँ बद्दुआ दे रहा था। जेल से निकलने पर उनको पता चला कि उनके जेल में आने के दो दिन बाद ही उस पुलिसवाले का एक्सिडेंट हो गया था। जिस बिल्डर ने जमीन खरीदी थी, उसने अभी कुछ ही पैसा दिया था कि उसको किसी ने गोली मार दी थी। इस हवेली की जमीन पर फिर से एक केस हो गया था। यानी लखन काका के भाई और बेटे ने बिल्डर के परिवार पर केस कर दिया था।

कुछ दिन बाद सलमा बीबी हवेली पर ऐसे लौटीं जैसे थोड़े दिन के लिए कहीं घूमने गई हों। वो रोज सोने से पहले तब तक आसमान में गाली देतीं और थूकती रहतीं जब तक नींद नहीं आ जाती। लखन काका का बिस्तर वो वैसे ही लगातीं जैसे वो रोज आकर वहाँ चुपचाप सो जाते हों।

दिन भर वो इधर-उधर भीख माँगतीं और एक रुपये देने वाले को लाख रुपये की दुआएँ देतीं- "सुखी रहो!"

सुख एक रुपये का सिक्का था लेकिन दुनिया की जेब पहले से इतनी भरी हुई थी कि वो सिक्का जल्दबाजी में कहीं छूट गया था। सलमा बीबी ने जीते

कहानी ने हवेली पर किसी को कब्जा करने नहीं दिया।

शुगर डैडी

कोई भी मरने से पहले एक आखिरी चिट्ठी क्यों लिखता है?

इसका जवाब मुझे नहीं मालूम। मैं ये क्यों लिख रहा हूँ, मुझे नहीं मालूम। अपनी 52 साल की जिंदगी में मैंने कुछ चीजें कभी सोची ही नहीं। सुसाइड और पैसा उनमें से एक था। मैं एक बड़ी मीडिया कंपनी में सीईओ हूँ। इतना पैसा कमा चुका हूँ कि आज रिटायर हो सकता हूँ। बीवी और बच्चे अब मेरे साथ नहीं रहते। मुझे उनकी याद कभी-कभी आती है। हर पंद्रह दिन में मैं अपनी बेटी के साथ लंच पर जाता हूँ, फिल्म देखता हूँ, लेकिन कोई खुशी नहीं होती। ऑफिस में मैं सबका बॉस हूँ इसलिए मेरे ज्यादा दोस्त भी नहीं हैं। जो मुझसे मिलते हैं, वो सब या तो मुझे इम्प्रेस करना चाहते हैं या फिर मुझे मक्खन लगाना चाहते हैं। मैंने भी कभी ये किया था, पर मुझे अब ऐसे दोनों तरीके के लोगों से नफरत है।

बिजनेस अच्छा चल रहा है। मेरे टॉप बॉसेस मुझे साउथ एशिया का पूरा असाइनमेंट देना चाहते हैं लेकिन अब मन भर गया है। मन भरने की तीन वजहें हैं- तीन लड़कियाँ, जिनको मैंने डेट किया। तीनों लड़कियों की उम्र मुझसे बहुत कम थी। आजकल की भाषा में ऐसे रिश्ते को 'शुगर डैडी' कहा जाता है। मुझे ये तब तक पता नहीं था जब तक मैं खुद एक शुगर डैडी नहीं

पहली लड़की हमारे ऑफिस में इंटर्न थी। उससे मेरी मुलाकात उसके ऑफिस के आखिरी दिन हुई। आजकल के बड़े मैनेजमेंट कॉलेज वालों के तमाम तरह के चोचले होते हैं। तीन लोगों को मेरे साथ एक हफ्ता असिस्ट करने का प्रोजेक्ट दिया गया था। हफ्ते भर के लिए मेरी हर मीटिंग में उन्हें बैठना था और एक हफ्ते बाद उन्हें एक प्रेजेंटेशन देनी थी।

बाकी दोनों लड़कों के तो मुझे नाम भी याद नहीं क्योंकि वो मुझे इम्प्रेस करने की जरूरत से ज्यादा कोशिश कर रहे थे। इस लड़की ने एक बार भी ऐसी कोई कोशिश नहीं की। कनिष्का की प्रेजेंटेशन बहुत सधी हुई थी। मैंने प्रेजेंटेशन के तुरंत बाद ही अपनी कंपनी के एचआर को जॉब ऑफर देने के लिए बोल दिया। मुझे बाद में बताया गया कि उसने हमारी कंपनी के ऑफर को रिजेक्ट कर दिया। जब वो अपना सर्टिफिकेट लेने आई तो उसने मुझसे मिलने के लिए समय लिया।

मैं एक मीटिंग से दूसरी मीटिंग के बीच में जा ही रहा था कि मेरी सेक्रेटरी ने उससे दो मिनट के लिए मिलने के लिए कहा। जो मीटिंग मेरे शेड्यूल में नहीं होती ऐसी मीटिंग्स को मैं अक्सर मना कर देता हूँ लेकिन पता नहीं क्या सोचकर मैंने कनिष्का को समय दे दिया।

बैठने के साथ ही बोली, "आई एम सॉरी!"

"फॉर व्हॉट?"

"मैंने जॉब ऑफर को मना कर दिया।"

"इट्स ओके!"

मुझे लगा कि शायद उसे कुछ और कहना है लेकिन उसने कोई ऐसी बात नहीं की। उसने चलने से पहले अचानक पूछा कि क्या वो मेरे टच में रह सकती है? मैंने उससे अपना नंबर दे दिया और ये भी बता दिया कि मुझे फालतू के फॉरवर्ड मैसेजेज से नफरत है। ये सुन वो हँसकर बोली, "मुझे भी।"

इस बात के दो महीने बाद तक उसका कोई मैसेज या कॉल नहीं आया। एक दिन अचानक उसका फोन आया। रात के करीब दस बज रहे थे। वो रो रही थी। रोने की वजह क्या थी ये उसने नहीं बताई। हालाँकि जैसा मैं हूँ, मैं फोन काट देता। लेकिन उस दिन पता नहीं क्या सोचकर मैंने उसे घर बुला लिया। घर आने के बाद वो बहुत देर तक कुछ नहीं बोली। मैंने कॉफी बनाकर जैसे ही उसके सामने रखी, वो बोली, "बहुत भूख लगी है।"

मैंने फ्रिज में चेक करके उसको कुछ खाने को दिया। जल्दी से खाने के बाद वो कुछ नॉर्मल हुई और बोली, "आई एम सॉरी! आपको परेशान

ये सुनकर मैं चाहता तो बोल सकता था कि हाँ बहुत परेशान किया, आगे से कभी ऐसे कॉल मत करना। लेकिन पता नहीं क्यों मैं कुछ बोल नहीं पाया। वो मेरी गोद में सिर रखकर लेट गई। मेरे हाथ उसका सिर सहलाने लगे। रात भर हम ऐसे ही पड़े रहे। हमारी कोई बात नहीं हुई। मेरे हाथ नहीं भटके।

सुबह उठकर मैंने अपने लिए कॉफी बनाई तो वो उठ चुकी थी। अब जाकर मैंने उसका चेहरा ध्यान से देखा। मेरे कमरे में लाइब्रेरी, अवॉर्ड और शराब की बोतल, तीनों की अलमारी को वो अपने मन से अलट-पलटकर देखती रही।

कॉफी का सिप लेते हुए उसने पूछा, "आप कभी बोर नहीं होते?"

ये वो सवाल था जो कभी किसी ने मुझसे नहीं किया था। जबकि मुझे पता था कि मैं हर चीज से बोर हो चुका हूँ। मैंने उसको टालने के लिए कहा, "हाँ होता हूँ, जब कोई ऐसे सवाल करता है तो बहुत बोर होता हूँ।"

जवाब सुनकर वो बहुत जोर से हँसी।

"कल रात यहाँ आने की कोई खास वजह?"

"आप मुझे जानते नहीं है न... इसलिए।" उसने बड़े ही आराम से कॉफी का आखिरी घूँट लेते हुए कहा।

मैं ऑफिस जल्दी पहुँचता था। इसलिए मैं तैयार होने के लिए चला गया। जब तक मैं तैयार होकर कमरे से निकलता वो जा चुकी थी। उसने टेबल पर एक छोटा-सा नोट छोड़ा था- 'थैंक्स फॉर नॉट आस्किंग एनी क्वेश्चन!'

उसकी हैंडराइटिंग बहुत अच्छी थी। मुझे दिन में कई बार उसका खयाल आया। शाम को जब मैंने उसको फोन किया तो उसने फोन नहीं उठाया। मैंने मैसेज टाइप करके डिलीट कर दिया। कई दिन गुजर गए। मैं उसके बारे में लगभग भूल ही चुका था कि फिर एक दिन वो सीधे मेरे दरवाजे के बाहर थी। उसकी हालत से लग रहा था जैसे कई रात से शायद वो सोई नहीं थी।

उसको दरवाजे पर देखकर मुझे गुस्सा तो बहुत आया लेकिन उसकी हालत देखकर मैं कुछ बोला नहीं। वो घर में घुसते ही मुझे गले लगाकर बहुत देर तक रोती रही। मैंने उसे चुप कराने की कोशिश नहीं की।

मैंने तब तक खाना नहीं खाया था। उसके खूब रो लेने के बाद उसने जी भर के खाना खाया। खाने के बाद वो खुद ही अपने बारे में बताने लगी कि उसके अब तक कितने अफेयर रह चुके हैं, क्यों वो लंबे समय तक किसी की दोस्त नहीं रह पाती, आदि। मैं कुछ देर तक तो उसे सुनता रहा, फिर उसको बीच में रोककर मैंने कहा, "मुझे नहीं जानना ये सब।" फिर वो पूरी रात कछ नहीं बोली।

वो अक्सर आने लगी। मैं उसे कभी मना नहीं करता। वो मेरे घर में एक अजनबी की तरह आती, ज्यादा-से-ज्यादा एक दिन रुकती और चली जाती। उसके कॉलेज का आखिरी साल चल रहा था।

एक-दो बार मैं उसके साथ क्लब भी गया। उसने न जाने कब मेरी जिंदगी में जगह बना ली। वो अगर दस दिन तक नहीं आती तो मैं उसे आने के लिए पूछता। वो कभी मेरा फोन नहीं उठाती थी। जब वो मेरे पास होती तो भी उतनी देर किसी का फोन नहीं उठाती। वो जहाँ भी रहती, पूरी रहती।

वो बहुत अच्छा गाना गाती थी। जब वो गाती मैं उसकी गोद में सिर रखकर लेट जाता। वो जब होती तो मुझे नींद बहुत गहरी आती। वो जब होती तो ठहरने का मन होता। मुझे उसकी सबसे अच्छी बात यही लगती थी कि उसने कभी मुझसे कोई पर्सनल सवाल नहीं किया। फिर एक दिन उसने जाने से पहले मेरे माथे पर प्यार रखते हुए कहा, "मैं अब नहीं आऊँगी।"

मैं उससे चिल्लाकर पूछना चाहता था कि क्यों? लेकिन मैंने पूछा नहीं और उसने बताया भी नहीं। मुझे उसकी आदत हो गई थी। उसके जाने के बाद मैंने कई बार उसे फोन किया लेकिन कभी उसका फोन नहीं उठा। जब मुझे यकीन हो गया कि अब वो कभी नहीं आएगी, तब मैंने अपने आप को

समझाया कि फालतू में अब किसी को भी इतनी जगह देनी ही नहीं कि कोई परेशान कर पाए।

कनिष्का के जाने के बाद एक खाली जगह हो गई थी। मुझे किसी की जरूरत है, ये बात कनिष्का से ही मुझे पता चली थी। मैं अपनी उम्र के आस-पास वाली कई औरतों से मिला, लेकिन उनमें कोई नई बात नहीं थी। जिंदगी को लेकर इतनी निश्चितता से मुझे परेशानी होती है। मुझे उनके जवाब-सवाल सोचने का नजरिया सब कुछ पता था। मैं जितना और लोगों से मिलता उतना ही कनिष्का को मिस करता। नहीं प्यार नहीं था, मेरे जैसे लोगों को प्यार नहीं होता। बस हमें प्यार के खयाल का इंतजार होता है।

मैंने एक डेटिंग एप्प पर अपना प्रोफाइल डाला। एप्प पर लॉगइन करते ही मुझे लग गया कि ये मेरी दुनिया नहीं है कि तभी सुप्रिया का मैसेज आया। उसकी उम्र कुल 28 होगी। उसने पहला मैसेज यही भेजा- 'आई एम लुकिंग फॉर एक शुगर डैडी, वुड यू बी इंटरेस्टेड?'

मैंने शुगर डैडी को गूगल किया तो सबसे पहले जो सर्च रिजल्ट मेरे हाथ लगा वो ये था- 'A rich older man who lavishes gifts on a young woman in return for her company or sexual favours.'

मुझे सुप्रिया का पहली ही बार में इतना डायरेक्ट होना अच्छा भी लगा और फिर ये भी लगा कि कहीं मैं पर्वर्ट तो नहीं होता जा रहा। मैंने सुप्रिया से

आने के बाद सबसे पहला सवाल यही पूछा, "आप पहले कभी शुगर डैडी रहे हैं?"

कनिष्का ने कभी एक भी पर्सनल सवाल नहीं पूछा था। वहीं सुप्रिया ने पहला सवाल ही पर्सनल पूछा। मैंने ईमानदारी से जवाब दिया, "नहीं, पहली बार है।"

इसके बाद उसने पहली बार की वजह नहीं पूछी। अगर उसने पूछी होती तो शायद हमारी बातचीत कभी आगे बढ़ी ही नहीं होती। उस रात हम उसी होटल में रुके। मैंने उससे पूछा कि क्या उसको पैसे की जरूरत है, इसलिए उसको ये सब करना पड़ रहा है? उसने जो जवाब दिया, मुझे वैसे जवाब की उम्मीद नहीं थी। उसने कहा, "मेरी उम्र के लोग मुझे समझ नहीं आते और मेरे पास समझाने का टाइम नहीं है। मुझे मजा आता है, बड़े होटल में रुकना, महँगे गिफ्ट्स लेना।"

अगले दिन मैंने उसे एक ज्यूलरी दिलाई। वो ऐसे खुश थी जैसे किसी बच्चे को खिलौना मिल गया हो। उसने खुशी में ज्यूलरी शॉप में सबके सामने ही मेरे होंठों पर प्यार रख दिया। मुझे थोड़ा अजीब लगा, लेकिन अच्छा भी बहुत लगा। इतना बेफिक्र मैं आखिरी बार कब था, मुझे याद भी नहीं।

अगले तीन महीनों में मैंने उसको लाखों रुपये के गिफ्ट दिए होंगे। हम एक बार बाहर घूमने भी गए। सुप्रिया से एक बार मेरी दिलाई हुई ज्यूलरी खो गई तो वो बहुत देर तक रोती रही। यकीन मानिए, मुझे पहली बार सुप्रिया पर तब शक हुआ कि कहीं वो मुझे बेवकूफ तो नहीं बना रही। लेकिन इस बात से ज्यादा कुछ फर्क भी नहीं पड़ता था क्योंकि मैं बेवकूफ बनना अफोर्ड कर सकता था।

ऐसे ही जब मैं अपनी बेटी के साथ एक संडे लंच कर रहा था तो मैंने सुप्रिया को किसी मेरे जैसे ही आदमी के साथ देखा। मेरा मूड ऑफ हो गया। मुझे यकीन नहीं आ रहा था कि मेरे साथ भी ऐसा हो सकता था। जबकि कमिटमेंट का न उसका कोई वादा था, न मेरी कोई उम्मीद। अगली बार जैसे ही सुप्रिया मिलने आई, मैंने घुमा-फिराकर उससे उस दिन की बात पूछ ली।

काश कि उस दिन उसने सच बोल दिया होता!

उसने सच नहीं बोला और मैंने अपने दिमाग में वो रिश्ता वहीं खत्म कर दिया। वो रोने लगी। मैंने उसको कोई वजह नहीं बताई। उसके जाने से पहले मैंने उससे बस यही पूछा कि तुम्हारा असली नाम सुप्रिया है भी या नहीं? वो मेरे इस सवाल से और भी ज्यादा रोने लगी। वो अपना असली नाम बताने ही वाली थी कि मैंने उसे रोक दिया और घर से निकल जाने को

मैं कभी-कभी सोचता हूँ तो समझ नहीं आता कि मेरे इतना गुस्सा होने की वजह क्या थी? जबकि उसने कुछ भी गलत नहीं किया था। खैर, आपसे इतना कुछ बताने की असली वजह है, अपर्णा। अपर्णा मुझे अपनी ही हाउसिंग सोसाइटी में मिली थी। मेरे जैसा आदमी अगर चाहता तो किसी भी टीवी की हीरोइन या मॉडल की लाइन लग जाती, उसको अपर्णा से प्यार क्यों हुआ होगा, इसकी कोई एक ठीक वजह पर हाथ नहीं रखा जा सकता।

अपर्णा न रोती थी, न सवाल पूछती थी, न ही उसके पास पैसे की कोई कमी थी। वो मेरे काम की फैन थी। अपर्णा से पहले की दो लड़कियों ने मुझे बहुत कुछ सिखा दिया था। मैंने अपने आप को ये बात समझा ली थी कि मुझे इन रिश्तों से सिवाय इस्केप के कुछ नहीं चाहिए था और यहीं मुझसे गड़बड़ हो गई।

अपर्णा ऐसी लड़की थी जिससे बस प्यार किया जा सकता था। वो घंटों चुप बैठ सकती थी। मेरी माँ के अलावा वो पहली लड़की थी जिसने मुझे रोते हुए देखा था। मैं उसके हाथ को छूता तो ऐसा लगता जैसे मेरा कुछ अधूरा हिस्सा पूरा हो गया। जब वो मेरे माथे पर प्यार रखती तो ऐसा लगता जैसे दुनिया में कुछ गलत है ही नहीं। उसको मेरे सॉल्ट-पेप्पर बाल इतने

पसंद थे कि उसने अपने बाल भी वैसे ही करा लिए थे।

अपर्णा मुझसे शादी करना चाहती थी लेकिन मुझे ये मंजूर नहीं था। आप शायद ये सोचें कि मुझे अपनी इमेज की चिंता थी, लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं था। हमारी उम्र में पच्चीस साल का फर्क था। एक-न-एक दिन ऐसा आता कि मैं नहीं रहता। मैं उसको ये दुख और दुविधा नहीं देना चाहता था। प्यार को अगर समय की स्केल पर रखकर बाँट दें तो मिलने से पहले और बाद का स्केल मैटर नहीं करता। मेरे बाद भी कोई मेरे प्यार में रहे, मैं इतनी बड़ी सजा किसी को नहीं देना चाहता।

मुझे उम्मीद है कि मेरी बेटी मुझसे नफरत नहीं करती। मैं अपनी बीवी का सबसे अच्छा तो नहीं लेकिन दोस्त हूँ, ये बहुत बड़ी कमाई है। मैं प्यार के बदले इतना महँगा सौदा नहीं करना चाहता। मैंने अपर्णा को अपनी जिंदगी से जाने दिया। वो हमेशा बोलती रही कि उसे अब कभी सच्चा प्यार नहीं होगा। मुझे उसकी इस नासमझी पर हँसी आई। पहले से तय कर लेना कि अब सच्चा प्यार नहीं होगा, इस जीवन की असीम सँभावनाओं का अपमान है।

"आपको कुछ और कहना है?" मेरे सामने बैठी एक 23 साल की फीमेल रिपोर्टर ने अपना रिकॉर्डर बंद करते हुए कहा।

मैंने बहुत देर तक अपने पेन को हाथ में घुमाकर सोचते हुए कहा, "ज्यादा

रिपोर्टर ने कुछ देर सोचा और कहा, "सच में बस तीन ही थीं?"

मैं चाहता तो झूठ बोल सकता था लेकिन पता नहीं क्यों मेरा सच बोलने का मन किया, "नहीं।"

"फिर कितनी थीं?"

"आपकी रिपोर्ट पर इससे क्या फर्क पड़ेगा?" मैंने सामने ग्लास में रखा पूरा पानी एक बार में पी लिया।

"कोई फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन फिर भी..."

अपनी सीट से उठकर मैं सामान समेटने लगा। रिपोर्टर अब भी बैठी थी। मैं चलने ही वाला था कि उसने पूछा, "तीनों में से किसी से बात नहीं होती?"

"आप शाम को क्या कर रही हैं? घर पर ड्रिंक्स पर मिलें?"

उसने मेरी आँखों में देखते हुए कुछ देर सोचा और बोली, "एड्रेस प्लीज!"

झूठी कहानियों से सच्ची कहानियों का रास्ता खुलता है। मैं अकेला था, सच था। मेरी बीवी-बच्चे मुझे छोड़ चुके थे, सच था। कुछ लड़कियाँ मेरी

जिंदगी में आई थीं, सच था। लेकिन वो तीन ही थीं, ये सच नहीं था।

मेरे सामने एक लंबी शाम थी। मुझे मालूम था कि उस यंग रिपोर्टर को नये एडवेंचर पसंद थे, वो अपनी मर्जी से मेरे साथ शाम बिताने को तैयार थी।

'गुफ्तगू बंद न हो, बात से बात चले

सुब्ह तक शाम-ए-मुलाकात चले

हम पे हँसती हुई ये तारों भरी रात चले…'

अली सरदार जाफरी की ये लाइनें मेरी जिंदगी का एक ऐसा सच थीं जिनको पुराने कैसेट की तरह बार-बार चलाना मुझे सुकून देता था। जिंदगी छोटे-मोटे फुटकर भर सुकून की तलाश ही तो है।

कमरा

उसकी पूरी जिंदगी एक कमरा थी। उसने तीस साल की उम्र तक प्यार को छूकर नहीं देखा था। प्रमिला की तीस साल की उम्र में विकलांग कोटे से सरकारी नौकरी लगी और उसकी जिंदगी उस पल से हमेशा के लिए बदल गई। जिस प्रमिला को कोई पूछता भी नहीं था उससे शादी के लिए लाइन लग गई थी। प्रमिला को एकदम से मिला ये अटेंशन बहुत अच्छा लग रहा था।

प्रमिला पोलियो की वजह से लचककर चलती थी। वो काफी सुंदर थी। पढ़ने में कोई बहुत तेज नहीं थी इसलिए उत्तर प्रदेश की क्लास-2 की नौकरी में सलेक्शन पा तो गई लेकिन उम्र लगभग तीस साल हो चुकी थी।

एक से एक दूर के रिश्तेदार घर पर आना शुरू हो गए थे। प्रमिला का लचकता हुआ पैर जैसे अब उनकी नजर से गायब हो चुका था।

प्रमिला की ज्वॉइनिंग जिस डिपार्टमेंट में हुई थी उसमें अच्छी-खासी ऊपरी आमदनी का स्कोप था। रोज कहीं-ना-कहीं से रिश्ते आते ही थे।

अभी प्रमिला की ज्वॉइनिंग में समय था। प्रमिला घर में बैठे-बैठे इतना बोर हो चुकी थी कि वो अपनी ट्रेनिंग को लेकर अच्छी-खासी उत्साहित थी।

कोई बाबू से, तो कोई मास्टर से। कुछ लड़कियों ने घर से बगावत करके मुंबई, बंगलुरु में नौकरी कर ली थी। प्रमिला उनको अपनी हीरोइन की तरह देखती थी। बारहवीं के बाद से कॉलेज सिर्फ पेपर देने जाना या फिर दो-चार शादियों में चले जाना। घर से जाने के नाम पर वो बस इतना ही निकल पाती थी।

नौकरी लगने पर जो सबसे पहला खयाल उसके मन में आया वो यही था कि अब बस ये शहर और ये घर छूट जाए। रिजल्ट आने के दिन उसने पाँच पराठे खाए। ऐसे वो कभी दो से ज्यादा नहीं खा पाती थी। अचानक से उसकी भूख बढ़ गई थी। उस दिन पहली बार उसे अपना घर छोटा लगा। ऐसा लगा जैसे घर में उसकी जगह थोड़ी बढ़ गई हो। अचानक ही उसे अपना कमरा स्टोरनुमा लगा।

वो जब फिल्मी गाने और सीन देखती तो चाहती थी कि कोई उसको भी ऐसे टूटकर प्यार करे जैसे हीरो-हीरोइन करते हैं। अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ी प्रमिला सरकारी नौकरी पाते ही मोहल्ले की रोल मॉडल बन चुकी थी।

अखबार वालों ने जब उसका इंटरव्यू लिया और पूछा कि इस सफलता के पीछे आपकी प्रेरणा कौन है? तो उसने कहा कि वो खुद है। इस जवाब को

पढ़कर अम्मा बड़ा नाराज हुई थीं। उनको लगा था कि ये भी बाकी लोगों के जैसे घिसा-पिटा जवाब देगी। प्रमिला अपनी फोटो अखबार में देखकर बहुत खुश थी।

शादी के लिए पहले जिन विकलांग लड़कों के रिश्ते आते थे, वो अब आने बंद हो गए थे। अब ऐसे रिश्ते आने शुरू हो गए थे जिसमें लड़के या तो अच्छे परिवार से थे या खुद कभी सरकारी नौकरी करने का सपना पाल चुके थे। इसलिए सरकारी नौकरी वाली बीवी से अपना सपना पूरा करना चाहते थे।

प्रमिला ने रिश्तों से तंग आकर घोषणा कर दी कि अव्वल तो उसे अभी शादी नहीं करनी, दूसरा कि वो अगर शादी करेगी भी तो अपनी मर्जी से।

अम्मा ने ये सुनकर तीन दिन तक बात नहीं की थी और मन-ही-मन भगवान को कोसा था कि इससे बढ़िया तो इसकी नौकरी लगी ही न होती।

प्रमिला ट्रेनिंग के दिन का इंतजार कर रही थी। जाने से पहले तैयारी में जितने अच्छे कपड़े हो सकते थे, वो प्रमिला ने खरीदे।

कायदे से सरकारी नौकरी की कहानियाँ उसी दिन खत्म हो जाती हैं जिस दिन इम्तिहान का रिजल्ट आ जाता है, लेकिन असली जिंदगी में ऐसा नहीं होता।

प्रमिला नैनीताल पहँची, ये शहर उसको स्वर्ग जैसा लगा। नैनीताल की ठंडी हवा जब उसके चेहरे पर पड़ी तो उसको लगा कि वो प्यार करने के लिए तैयार है।

प्रमिला के घरवाले जैसे ही छोड़कर गए उसको खयाल आया कि बचपन से लेकर उस दिन तक ये शायद पहला मौका है जब वो बिना किसी घरवाले के अकेली है। वो आजादी के इस खयाल को च्युइंगम के जैसे बहुत देर तक चबाकर खुश होती रही। प्रमिला को खुशी थी कि यहाँ कम-से-कम पढ़े-लिखे लोग आएँगे। यहाँ वो सबके बराबर थी। ना कोई कम था ना कोई ज्यादा।

ट्रेनिंग के पहले दिन ही उसको समझ में आया कि बैच में जो एसडीएम बने हैं और पुलिस में हैं वो यहाँ के अपर कास्ट हैं, बाकी अन्य हैं। प्रमिला बाकी अन्य में भी खुश थी क्योंकि उसके लिए यही बहुत बड़ी बात थी। यहाँ उसकी दोस्ती नये लोगों से हुई। उनमें एक थी प्रियंका जिसने शादी के बाद तैयारी की थी। दूसरा था बैच का टॉपर मुदित। इन तीन लोगों का ग्रुप बन गया। वो जहाँ भी जाते थे, ध्यान रखते कि प्रमिला पीछे न छूट जाए। कई बार कोई पहला पुरुष जब आपके आस-पास जगह बनाता है तो हम उसको ही प्यार समझ लेते हैं। प्रमिला ने मुदित की दोस्ती को प्यार समझा। मुदित खुले खयालों का लड़का था। प्रमिला के साथ घूमने-फिरने में कई बार वो

लाइन क्रॉस हुई जिसको प्रमिला ने फिल्मों में देखा था। कई बार जब सुंदर सपना चल रहा होता है तो उसमें सवाल-जवाब करके उसे तोड़ना नहीं चाहिए। प्रमिला ने भी नहीं तोड़ा, ना सवाल पूछा।

मुदित और प्रमिला की पोस्टिंग की लिस्ट आ चुकी थी। ट्रेनिंग के आखिरी दिन प्रमिला ने मुदित की आँखों में देखते हुए पूछा, "अब कैसे मिलेंगे?"

मुदित ने लगभग बात टालते हुए कहा, "प्रम्मू, ट्रेनिंग अलग थी, पोस्टिंग अलग है। प्लान नहीं करते। मिलना लिखा होगा तो मिल लेंगे।"

प्रमिला ने जो सवाल पूछा नहीं था उसका जवाब भी उसे मिल चुका था। प्रमिला को शिकायत नहीं थी। मुदित से जो कुछ भी मिला वो उस पुरानी मुरादाबाद की जिंदगी से बहुत ज्यादा सुंदर था। प्रमिला सुंदर चीजें बिगाड़ना नहीं चाहती थी। जितना मिला उतने में वो खुश थी।

पोस्टिंग के बाद नये शहर में आई। नया काम सीखने में समय लग रहा था। प्रमिला के घरवाले इस बात को देखकर हैरान थे कि जब सरकारी गाड़ी से प्रमिला उतरती है तो कैसे ड्राइवर और चपरासी उसको सलाम करते हैं।

नये काम में जब भी प्रमिला थकती उसको मुदित की और अपनी ट्रेनिंग के दिनों की याद आती। ट्रेनिंग के दिन उसके लिए कॉलेज के जैसे थे।

प्रमिला के घर वाले उसके पास रहने आ गए थे। वो उनके सवालों से

वो दब्बू लड़की अब अधिकारी बन चुकी थी, जो दिन भर में सैकड़ों जोड़-तोड़ देखते हुए हर बीतते दिन के साथ समझदार होती जा रही थी।

अब जब भी घरवाले प्रमिला से शादी की बात करते तो वो उनको जवाब देने लगी थी। घर वालों को समझ आ गया था कि लड़की हाथ से निकल गई है।

प्रमिला को एक दिन खबर मिली कि मुदित की शादी हो रही है। उसने अपने मन में एक घाव बना लिया। वो घाव जो हर कोई कभी-न-कभी बना लेता है। समय के साथ घाव भरता रहा। बैच के दोस्तों की एक-एक कर शादी होने लगी। सब अपनी जिंदगी में बिजी होते जा रहे थे। प्रमिला भी काम के बाद इतना थक जाती कि शाम को लौटने के बाद पंखा देखते हुए कब नींद आ जाती, याद नहीं रहता। संडे काटने में दिक्कत होती। टीवी पर कहानियाँ देखते हुए उसे अपनी खुद की कहानी आर्ट फिल्म जैसी लगती, जिसमें कोई एक सीन अटक गया हो।

प्रमिला की दूर की मौसी की लड़की इरा उसको अपनी प्रेरणा मानती थी। वो उसके यहाँ गाइडेन्स लेने आई। उसके आने से प्रमिला की ठहरी जिंदगी में नई हवा आई। शाम को घर आने की वजह मिली। वैसे भी, वो घर पर रहती तो उसकी जबरदस्ती शादी कर देते। इरा को प्रमिला में एक नया

मकसद मिला। इरा दिन भर पढ़ती करती। शाम को दोनों बहनें दुनिया भर की बातें करतीं।

इरा को प्रमिला कभी ज्यादा पीने नहीं देती। एक-दो बार ऐसा भी हुआ कि खूब पीने के बाद इरा ने प्रमिला को ऐसे छुआ जैसे वो बहन नहीं इस दुनिया का आखिरी घूँट पानी हो। प्रमिला ने इरा को रोका लेकिन इतना जोर से नहीं जिसे रोकना बोला जाए। अगले दिन सब कुछ ऐसा नॉर्मल था जैसे कुछ हुआ ही नहीं। प्रमिला के दिमाग में ये सब चल रहा था। वो जब ऑफिस पहुँची तो खबर मिली कि मुदित का ट्रांसफर इसी शहर में हो गया है। इससे पहले कि वो अपने दिमाग में घुमड़ रहे तूफान को शांत करती, ऊपर से एक जरूरी काम आ गया।

नौकरी की अच्छी बात यही है कि ये कभी-कभी दुखी होने की फुरसत नहीं देती। प्रमिला को काम करते हुए रात के आठ बज गए। वो ऑफिस से निकल रही थी कि मुदित का फोन आया- "घर का एड्रेस बोलो प्रम्मू, आ रहा हूँ।"

प्रमिला खुश थी या नहीं, ये ठीक से कह नहीं सकते। उसने अपना एड्रेस तुरंत भेज दिया। घर पहुँचते ही प्रमिला को अपना ठीक से सजा हुआ घर बिखरा-बिखरा दिखा। जो चीजें इरा ने अपने हिसाब से इधर-उधर रख दी थीं, प्रमिला ने उनको फिर से वहीं सजा दिया।

मुदित घर आकर ऐसे मिला जैसे कि वो टेनिंग के दिनों में मिला करते थे। उस रात मुदित वहीं रुका। इरा को रात भर नींद नहीं आई। प्रमिला को रात भर नींद नहीं आई। मुदित बहुत दिनों बाद गहरी नींद सोया। सुबह इरा के उठने से पहले प्रमिला ने मुदित को जाने के लिए कहा तो वो कुछ समझ नहीं पाया कि आखिर इस लड़की को एकदम से हुआ क्या।

इरा को सुबह नींद आई थी। प्रमिला उसको कमरे में उठाने पहुँची और इरा को पकड़कर बहुत देर तक रोती रही। उसको रोता देखकर इरा को खुशी तो नहीं हुई लेकिन किसी बात की तसल्ली हुई। उन्होंने एक-दूसरे को ऐसे सँभाला जैसे टोकरी में सब्जियाँ एक-दूसरे को सँभालती हैं।

प्रमिला ने मन-ही-मन सोच लिया था कि अब मुदित से मिलना ही नहीं है। मुदित अक्सर ही मीटिंग में उससे टकराता। प्रमिला जब भी अपना कंट्रोल छोड़कर कुछ बात बोलती तो मुदित कहता, "इस दुनिया में कुछ भी पूरा नहीं मिलता, टुकड़ों में ही मिलता है। हर टुकड़ा अपने आप में पूरा होता है।"

ये वाक्य, मुदित की बात के जैसे पूरा नहीं था। प्रमिला से ज्यादा अधूरापन शायद ही कोई समझता हो। उसकी सारी लड़ाई उस अधूरेपन को पूरा करने की ही तो थी। प्रमिला चाहती थी कि इरा की उससे भी अच्छी नौकरी

लग जाए। इसलिए वो रोज शाम को उसको आकर पढ़ाती।

बीच में प्रमिला को अपने ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट दोबारा जाना पड़ा तो वो इरा को लेकर गई। वहाँ के माहौल ने इरा की भूख जगा दी। अगले साल के पेपर में इरा का सलेक्शन हो गया। प्रमिला खुद से ज्यादा इरा के सलेक्शन से खुश थी। इरा ने अपना बैच टॉप किया था, उसको एसडीएम का प्रोफाइल मिलता।

प्रमिला और इरा इसी खुशी में पहली बार विदेश घूमने गईं। उनको देश से बाहर निकलकर एक-दूसरे की बाँहों में बाँहें डालकर बिंदास घूमना ऐसा लग रहा था जैसे तितली को पहली बार उड़ने वाला पर लगता है। उन्होंने एक-दूसरे के साथ इतनी तस्वीरें खींचीं जैसे ये उनका हनीमून हो।

उधर इरा का सलेक्शन होते ही घर पर रिश्तों की बाढ़ आ गई। उसको एक से एक आईएएस, बड़े बिजनेसमैन के रिश्ते आने लगे।

जिस दिन इरा अपने घर जा रही थी, उस दिन प्रमिला को अपना घर एकदम खाली लगा। उस खालीपन में पास अपना कोई ना देखकर उसने मुदित को बुलाया। चूँकि मुदित का परिवार साथ था तो वो रात भर नहीं रुक सकता था। वो बस उतनी ही देर के लिए आया जितनी देर में कम-से-कम बातें हो सकती हों।

उधर इरा घर पहँचकर भी उदास थी। उसको कछ कमी लग रही थी। जब भी कोई उसकी शादी की बात करता तो वो गुस्सा हो जाती। जब वो गुस्सा होती तो दोष प्रमिला को दिया जाता कि बिटिया तो हमारी तेज पहले से ही थी। उसका सलेक्शन तो कहीं से भी हो जाता। प्रमिला ने ही बिगाड़ दिया।

इरा दो दिन में ही घर पर थक गई। जिंदगी में वो पल कभी-ना-कभी आता ही है जब अपने ही घरवालों से भागने के अलावा और कुछ सूझता नहीं। दो दिन बाद ही इरा के प्रमिला के पास लौट जाने की वजह से घर वाले, रिश्तेदार काफी नाराज हुए। प्रमिला तो वैसे भी घर वालों की मर्जी से शादी ना करके आवारा घोषित कर ही दी गई थी, इरा को बरगलाने का इल्जाम भी प्रमिला के सिर था।

लौटने पर इरा एकदम हल्की हो चुकी थी। अबकि बार जब वो लौटी तो घर-परिवार को पीछे छोड़ आई थी। प्रमिला का जिस दिन ट्रांसफर हुआ वो बहुत खुश हुई कि अब उसको मुदित से मुक्ति मिली।

ट्रेनिंग के बाद इरा की पोस्टिंग हुई। प्रमिला पर काम की जिम्मेदारियाँ बढ़ीं। दोनों को कई बार ऐसा लगा कि उनको बच्चा गोद ले लेना चाहिए। उनको लेकर तमाम तरीके की बातें वैसे भी प्रचलन में थीं। दोनों नौकरी में इतना बिजी थीं कि हर संडे भी मिल पाना संभव नहीं था। प्रमिला ने जब इरा के साथ ट्रांसफर की अर्जी डाली तो उसकी बात तो खैर क्या सुनी

जाती, मजाक ही बनाया गया।

उसके बैच के कुछ अधिकारियों ने प्रैक्टिकल होने की सलाह भी दी, लेकिन प्रैक्टिकल लोग कहाँ कुछ नया करते हैं! हर कुछ सोच-समझकर गुणा-भाग करके चलने वाले जीवन को चख कहाँ पाते हैं!

इस समस्या का एक ही इलाज था कि इरा और प्रमिला एक-दूसरे से शादी कर लें। बहुत सोच-समझकर दोनों ने ऐसा फैसला किया। इस पर घर वालों ने तंत्र-मंत्र और झाड़-फूँक सब कर लिया। सरकारी महकमें में पढ़े-लिखे समझदार लोग हँसे। मगर प्रमिला और इरा मजबूत हुईं। देश में अब तक ऐसा कानून आ चुका था कि ऐसी शादियाँ हो सकती थीं।

इरा और प्रमिला के अलावा हर किसी को दिक्कत थी। तमाम लोगों ने समझाया कि जो करना है करो लेकिन शादी करने की जरूरत क्या है। इरा और प्रमिला के लिए इस फैसले को ढोना आसान नहीं था। जैसे ही शादी की डेट तय हुई, प्रमिला के हेड ऑफ डिपार्टमेंट ने उसको समझाया, "प्रमिला, करियर के लिहाज से बहुत गलत कर रही हैं आप।"

इससे ज्यादा ना तो एचओडी बोला करते हैं न सुनना चाहते हैं। फैसला हो चुका था। शादी में कोई नहीं आया। वो दोस्त भी नहीं जो जिंदगी भर साथ देने का वादा किए बैठे थे। घरवालों को खैर आना भी नहीं था।

समझ नहीं पा रही थीं कि ये लड़ाई आखिर है ही क्यों? दोनों की कहानियाँ यूपी भर में फैल चुकी थीं। उनकी हर बात को इस बात से समझा जाता कि अरे मैडम तो वो हैं। आधे से ज्यादा लोग 'वो' शब्द भी सही से नहीं बोल पाते। ये दोनों वैसे भी मिसाल देने के काम आती ही थीं, अब भी आ रही थीं।

पाँच साल बीते, जैसे हर शादी के साथ होता है। जैसे हर कहानी के साथ होता है, दे लिव्ड हैपिली ईवर आफ्टर जैसा कुछ होता नहीं। एक-दूसरे से दूर रहते हुए, काम में घुसे हुए, दुनिया को जवाब देते हुए दोनों उम्र से पहले बूढ़े होते जा रहे थे। प्यार उनके लिए एक तारीख जैसा रह गया था कि अगली बार कब मिलेंगे। लाख नियम हों कि पति-पत्नी को साथ पोस्टिंग मिलेगी, ऐसा हर बार संभव नहीं हो पाता।

इस बीच फिर ऐसा हुआ कि मुदित की पोस्टिंग इरा के शहर में पड़ी। उधर प्रमिला ने बोरियत में कुछ नये लोगों से दोस्ती की। दोनों की नई दोस्तियाँ हुईं। दोनों से लाइन भी क्रॉस हुई। दोनों ने एक-दूसरे को बताकर दुख को मिटाया कि गलती दोनों से हुई है।

बात कहीं आगे बढ़ नहीं रही थी। इरा जब तीन दिन की छुट्टी पर घर आई तो उसने बात शुरू की, "प्रम्मू, मुझे लगता है अलग हो जाना चाहिए।"

प्रमिला को इस सवाल की उम्मीद तो थी लेकिन इतनी जल्दी नहीं।

"यार एक लंबा करियर है, लोग चार तरह की बातें करते हैं।"

प्रमिला को कायदे से समझाना चाहिए था लेकिन हर रिश्ता एक एक्सपायरी डेट के साथ आता है। उन्होंने आखिरी बार एक-दूसरे को चखा और अलग हो गए। अलग होने पर पहले से ज्यादा मजाक बना। इरा ने अलग होने के एक महीने के भीतर दूसरी शादी कर ली। ऐसी शादी जिसमें घर वाले, डिपार्टमेंट, शहर, दुनिया, सब खुश थे। प्रमिला उस शादी में नहीं आई।

उसके दोस्तों के पास समय बस इतना था, जितने में बात न हो पाए।

प्रमिला को उस दिन पहली बार लगा कि उसके घर के कमरे से दुनिया कितनी अच्छी दिखती थी। वो दुनिया जिसको उसने देखा नहीं, बस जिसकी कहानियाँ सुनी थीं।

उधर इरा की लव मैरिज में सब कुछ अच्छा था, लेकिन सिर्फ कुछ दिनों के लिए। ना चाहते हुए भी कोई पुरानी बात सामने आ जाती जिसका जवाब इरा देना नहीं चाहती थी। इरा के पति ने केवल इस वजह से शादी की थी क्योंकि वो बड़ी अधिकारी थी। वजह सही हो तो भी, न हो तो भी, वजह एक दिन खो जाती है।

इधर प्रमिला ने अपनी जिंदगी ऐसे शुरू की जैसे वो नई-नई पैदा हई हो। अब उसके चारों तरफ एक दीवार थी जिसमें कोई नहीं आ सकता था।

एक साल बाद एक दिन सुबह उसके दरवाजे पर इरा खड़ी थी। उसने खुद जाकर चाय बनाई। इरा को उस सुबह और चाय में वही स्वाद आया जो सालों पहले तब आया था जब वो पहली बार प्रमिला के यहाँ आई थी।

प्रमिला को पकड़कर इरा बहुत देर तक रोती रही। प्रमिला की आँखों में आँसू नहीं आए।

"सब दोबारा शुरू नहीं कर सकते?" इरा ने पूछा।

प्रमिला उठकर धीरे-धीरे किचन में जाते हुए बोली, "तेरे लिए आज मैं खाना बनाऊँगी।"

अगले दो दिन प्रमिला और इरा ने ऐसे जिया जैसे वो कभी अलग हुई ही नहीं थीं। अगर पता हो कि दुनिया दो दिन में खत्म हो जाएगी तब शायद लोग दो दिन जी पाएँ, वरना पूरी जिंदगी उन दो दिनों के इंतजार में बीत जाती है।

स्टेशन पर इरा को छोड़ने से पहले प्रमिला ने इरा को गले लगकर विदा करने से पहले कान में कहा, "बस अब मत आना।"

प्रमिला की आँखों में आँसू की एक भी बूँद नहीं थी। घर आकर वो इस खुशी के साथ ऑफिस गई, जितनी खुशी से वो अपने ऑफिस के पहले दिन गई थी। अपने आप को पूरा करने के लिए उसे किसी और की जरूरत नहीं थी। उसने इस दुनिया को एक कमरा मान लिया था, जिसकी खिड़की में उसको कुछ नये सपने देख पाने का विश्वास था।

60 सेकंड

मेरे पास आत्महत्या करने की कोई एक वजह नहीं है। अब तुम भी खुद को ध्यान से देखो, तुम्हारे पास भी आत्महत्या करने की एकाध वजह तो होगी। झूठ मत बोलो। हर किसी के पास आत्महत्या करने की कोई-ना-कोई वजह होती है। दिक्कत क्या है कि आदमी सबसे ज्यादा झूठ अपने आप से बोलता है। अपने आप को सबसे ज्यादा समझता है। असल में जब वो दूसरे को भी कुछ समझा रहा होता है तो अपने आप को मन-ही-मन समझा रहा होता है। खैर, मैंने सोचा है कि आज अपने आप से झूठ नहीं बोलूँगा। मुझे मालूम है मुश्किल काम है। इतना ही आसान होता तो आज से पहले न जाने कितनी बार कर लिया होता।

जब मैंने पहली बार आत्महत्या करने का सोचा था तो मेरी उम्र 12 साल थी। क्लास में सब बच्चों के सामने एक टीचर ने जब मुझे जीरो नंबर दिया और एक थप्पड़ लगाया, तो उस दिन मेरा घर लौटने का मन नहीं किया। मैं स्कूल से उस पुल की तरफ गया जहाँ से ट्रेन निकला करती थी। हर शहर के पुल की एक कहानी होती है कि वहाँ से बहुत लोग आत्महत्या कर चुके होते हैं। खास करके प्रेमी जोड़े, जो साथ में आत्महत्या करके पूरे शहर से अपना बदला लेते हैं।

मुझे मंदिर की तरह लगती थी। जैसे वो मरे हुए लोग इकट्ठा होकर मुझे अपने साथ लूडो खेलने के लिए बुला रहे हों।

मैंने स्कूल में बोलना कम कर दिया था। मैं उस पुल तक कई बार गया लेकिन अपने मन को पूरी तरीके से बना नहीं पाया। जैसे ही मैं कूदने वाला होता कोई बीच में आ जाता। जैसे कि एक बार वह भिखारन अपने बच्चे को अपने सीने से चिपकाए हुए मेरे पास आ गई। मुझे उस भिखारन पर गुस्सा आया लेकिन फिर लगा कि मैं तो मरने वाला हूँ, तो मैंने तुरंत अपनी जेब के सारे पैसे उसको दे दिए। उसने मुझे लंबी उम्र की दुआ दी। मुझे दुआ एक गाली के जैसी लगी। मैंने सोचा कि अब यह जल्दी जाए तो मैं चैन से मर सकूँ।

उस भिखारन को जब मैं पैसे दे रहा था, ठीक उसी समय पहली बार मेरी नजर उसके पैर पर गई। उसके पैर की तीन उँगलियाँ नहीं थीं। कई बार हमें वो कहानियाँ याद आती हैं जो हमने पहले कभी नहीं सुनीं। कई बार हमें वो लोग याद आते हैं जिनसे हम कभी नहीं मिले। तभी मुझे ध्यान आया कि एक बार मैंने यह कहानी सुनी थी कि मोहल्ले की वह लड़की जो पुल के नीचे कूदने आई थी। उसको ट्रेन ने जब सही से टक्कर नहीं मारी तो वो जिंदा बच

गई, मगर उसका पैर हमेशा के लिए कट गया। जबकि उसकी बहन जो उसको बचाने गई थी, उसको बचाने में ट्रेन के सामने आ गई और वह कटकर मर गई। सुना तो मैंने यह भी था कि जो लड़की मरने गई थी उसके पेट में उसकी क्लास के किसी लड़के का बच्चा था। सुना तो यह भी था कि इस लड़की को मर जाना चाहिए था। मुझे उस लड़की की कोई शक्ल याद नहीं आती। बाद में वह मोहल्ला छूट गया।

इसके बाद मेरी नजर भिखारन के बच्चे पर गई। वो जोर-जोर से हँस रहा था। उसके हँसने की वजह से मुझे अपना इरादा टालना पड़ा। मैं जब भी मरने का सोचता, मुझे उस बच्चे की आवाज बचा लेती।

इस घटना के कई साल बाद तक मुझे कभी मरने का खयाल नहीं आया। अगली बार मैंने जो आत्महत्या की कोशिश की तब मैं 17 साल का था। सब कुछ ठीक था। मैं इंजीनियरिंग की तैयारी करने के लिए रोज कोचिंग जाता। जब मैं क्लास में अंदर घुसने के लिए एक लंबी लाइन का हिस्सा होता तो मुझे लगता था कि मैं किसी ऐसी सड़क पर हमेशा के लिए फँस गया हूँ जहाँ के ट्रैफिक जाम से मुझे कभी मुक्ति ही नहीं मिलेगी।

एक दिन कोचिंग के लिए जब मैं भर पेट नाश्ता करके चला तो बाहर मौसम पर नजर गई। उस दिन मौसम बहुत अच्छा था। कुछ दिन होते हैं जब न बहुत ज्यादा गर्मी होती है न बहुत ज्यादा ठंड। नवंबर का वह कौन-

लिए बहुत अच्छा लगा। मैं उसी पल कूदने ही वाला था कि एक ठंडी हवा आकर मेरे चेहरे से टकराई। उस ठंडी हवा के साथ ही मुझे वो दिन याद आए जब खुशी मुझसे आकर ऐसे ही टकराई थी, एकदम धीरे से। मैंने सोचा कि चलो अब जब मर ही रहा हूँ तो थोड़ा लंबी-लंबी साँसें ले लूँ। उस दिन के पहले अपनी साँस पर कभी इतना ध्यान नहीं दिया था। हर एक लंबी साँस के साथ मुझे इस दुनिया में कुछ दिन और रुकने का मन किया। फिर मैंने यह भी सोचा कि नहीं यार इतनी जल्दी मरने में कुछ रखा नहीं है। कोचिंग के एक साल बाद मेरा एडमिशन किसी अच्छी जगह नहीं हुआ जिसको मैं चीख-चीखकर अपने मोहल्ले में बता सकूँ। लेकिन तब मेरा मरने का मन नहीं किया। जहालत झेलनी पड़ती है ना जब हर कोई आपको देखकर आपकी हर बात पर आपको जज कर रहा होता है। मैं हर एक उस आदमी से मिलना चाहता था जो मुझे हेय दृष्टि से देखता था। यह करने में एक अलग ही सुख था। एक ऐसा सुख कि जाओ साले नहीं मरता क्या कर लोगे!

जिंदगी में ऐसे बहुत लोग मिले जिन्होंने मुझको बार-बार इस बात की याद दिलाई कि मैं किसी काम का नहीं हूँ। मेरी इस दुनिया में कोई जगह नहीं है। मैं इस दुनिया में फिट नहीं हूँ। लेकिन इन सारी बातों से मेरा मरने का और मन नहीं करता था। मैं चाहता था कि एक दिन उनकी छाती पर ऐसे ही मूँग

दलकर मैं चिल्लाता रहूँ कि जाओ साले कर क्या लोगे, मैं तो जिंदा रहूँगा!

अच्छा यह मरने वाली बात न ही मैंने अपनी किसी प्रेमिका को बताई, न ही किसी दोस्त को। मुझे लगता था कि ये लोग भी मरना चाहते हैं, बस मुझे बता नहीं रहे हैं। इस बीच मरने का खयाल आना बंद हो गया। लेकिन मुझे यह खयाल जरूर आता था कि अगर किसी दिन मरने का मन कर गया तो मैं मरूँगा कैसे! मुझे बचपन से ही एक्वेरियम बहुत अच्छे लगते थे। मैं उन मछलियों के साथ तैरना चाहता था।

नहीं, फाँसी लगाने का खयाल मुझे कभी नहीं आया, क्योंकि मुझे ऐसा लगता था कि फाँसी लगाना एक बहुत ही अश्लील मौत है। अश्लील इसलिए कि जिस घर में कोई फाँसी लगा लेता है उस घर में न कोई रहना चाहता है, ना बाद में उस घर को कोई खरीदना चाहता है। जाते-जाते मैं अपने आस-पास वालों को परेशान नहीं करना चाहता था। मैं चुपचाप जाना चाहता था, जैसे कि एक बिल्ली चुपके से किसी घर में जाती है। मुझे चूहे की मौत चाहिए थी, इससे पहले कि किसी को पता चले, बिल के अंदर ही काम हो चुका हो। मैंने उन लोगों को हमेशा खुशनसीब माना जो नींद में चल बसे।

अपने ऑफिस से लौटते हुए जब मैं रास्ते में उस भिखारी को देखता था जिसका आधा शरीर गल चुका था तो मैं सोचता था कि ये जिंदा क्यों है, मर क्यों नहीं जाता! एक बार मैं उसके पास पैसा देने के बहाने गया और मैंने

वह बोला, "क्योंकि मौत नहीं आती। आपके जैसा कोई रोज आ जाता है और थोड़ी-सी जिंदगी मेरे कटोरे में रख देता है।"

क्या जिंदगी को एक कटोरे में रखा जा सकता है? हम सब कहीं-न-कहीं अपने उसी कटोरे की वजह से तो जिंदा नहीं हैं! कटोरा मुझे जेब जैसा लगा जो खाली होने से ठीक पहले भर जाती है। कटोरा मुझे उम्मीद जैसा लगा जो रोज आदमी अपने आप को दे देता है। कटोरा मुझे भूख जैसा लगा। कटोरा मुझे कहानी जैसा लगा जो आदमी अपने आप को सुनाता है।

अखबार में मैं आत्महत्या की खबरें ऐसे पढ़ता जैसे कि वो कोई लाइव क्रिकेट मैच हो। मुझे हमेशा से ही मौत में एक रोमांच दिखता था। ये बातें मैं किसी से कर नहीं पाया। अपने डॉक्टर से भी नहीं, अपने साइकोलॉजिस्ट से भी नहीं। साइकोलॉजिस्ट मुझे हमेशा बोलता है कि आपको जो बातें अंदर-ही-अंदर खाए जा रही हैं, उन्हें लिख लीजिए, आराम मिलेगा। उसकी इस बात से मुझे खीज मचती। मैंने ये बातें एक बार कागज पर लिखीं भी, बहुत हल्का लगा। फिर पता नहीं क्या सोचकर मैंने वो कागज जला दिया। कागज जलते ही मुझे फिर भारी लगने लगा।

अपनी इस आदत से जब मैं बहुत परेशान हो गया तो मैंने सोच लिया कि

आज मैं लौटकर अपनी बीवी को यह सब कुछ बता दूँगा। दुनिया में कोई एक तो होना चाहिए न जिसको हमारे बारे में सब कुछ पता हो, सब कुछ। वो एक आदमी जिस दिन खो जाता है उस दिन आदमी ऐसे भी मर जाता है। दुनिया में करीब आठ सौ करोड़ लोग हैं, इतनी बड़ी दुनिया में एक भी आदमी ऐसा न हो जो हमारे बारे में सब कुछ जानता हो! यह बात मुझे अक्सर उदास कर देती थी। मैं गिनती के लोगों के लिए वो दूसरा आदमी था जिसको सब कुछ पता था।

जब मैं मुंबई के वर्ली सी-लिंक से होकर गुजर रहा था तो सामने सूरज बहुत खूबसूरती से डूब रहा था। इतना खूबसूरत जैसे कि आज दुनिया का पहला दिन हो और सूरज पहली बार डूब रहा हो। सी-लिंक पर गाड़ी रोकना मना है। मैंने अपनी गाड़ी धीमे कर ली। मैंने लौटकर सी-लिंक के तीन चक्कर लगाए जब तक कि सूरज डूब नहीं गया। इसके बाद मैं रोज की तरह ही अपने घर आया। मेरी बीवी भी अपने ऑफिस से आ चुकी थी। मेरा बच्चा नीचे खेलने जा चुका था। मैंने गैस पर धीमी आँच पर चाय चढ़ा दी और अपने आपको समझाया कि मैं क्या फालतू का काम करने वाला था। चाय बनाते वक्त खिड़की से मेरे बच्चे के खेलने की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। वो आवाज धीमी होकर भी इतनी तेज थी कि मुझे इस दुनिया में रोक रही थी।

मुझको चाय बनाता देख बीवी भी थोड़ा हैरान हुई और बोली भी, "सब

कुछ नहीं, बस ऐसे ही चाय बनाने का मन किया।"

इसके बाद हमने रोज के जैसे ही कुछ रेगुलर बातें कीं। एक घर खरीदने का सोचा। बच्चे के लिए एफडी करने का सोचा। नेटफ्लिक्स और अमेजॉन पर छूट गईं फिल्मों को देखने का सोचा। फिर यह भी सोचा कि हर बार दिवाली पर घर नहीं जा पाते, इस बार पहले से ही टिकट करा लेते हैं। त्यौहार पर मुंबई में अच्छा नहीं लगता है, इस बार पक्का घर जाएँगे। मैं चाय पीते-पीते ही ट्रैवल एप्प पर दिवाली के टिकट देखने लगा।

बहुत दिनों बाद अपनी बीवी को बहुत जोर से गले लगाया। उसको गले लगाते ही मुझे अपनी सारी पुरानी प्रेमिकाओं की एक-एक चीज याद आने लगी। मैंने उन यादों को रोका नहीं, उनको आने दिया।

एकदम से कुछ बचपन के अजीब से दृश्य सामने पड़ने लगे। वो पहली बार बहुत जोर से साइकिल से गिर जाना। छठी क्लास का वो फुटबॉल मैच भी याद आया जब मैंने एक गोल किया था। इस बीच माँ की लोरी भी सुनाई पड़ने लगी जिसे सुने हुए न जाने कितने साल हो गए। लोरी याद आई तो माँ याद आई। माँ याद आई तो पिताजी याद आए। यह भी याद आया कि उन्होंने अपनी औकात से ज्यादा मुझ पर खर्च किया था। एकाध बार को

छोड़ दो तो कभी उन्होंने यह एहसास भी नहीं दिलाया। शादी याद आई और दोस्तों का नाचना याद आया। मनाली में हनीमून की वह सर्द रात याद आई।

बीवी को गले लगाए हुए मुझे अपने तमाम पेंडिंग काम याद आए। वो काम जो सालों से पेंडिंग हैं और सालों तक पेंडिंग रहेंगे शायद। अब कप में चाय बहुत थोड़ी-सी बची थी। इतने में मुझे अपने बच्चे की आवाज दोबारा सुनाई पड़ी। उसने घंटी बजाई, मैंने दरवाजा खोला। उसने आते ही मुझे अपने गले लगा लिया और उसके गले लगाते ही मुझे बहुत ठंडा-ठंडा लगा। जैसे एक मछली दूसरी को गले लगा रही हो। वो क्या बोल रहा था, मुझे सही से समझ में नहीं आ रहा था, लेकिन उसकी आवाज धीरे-धीरे कम होती जा रही थी।

उसको गले लगाते हुए मेरी आँखें बंद हो जाती थीं। मैंने अपनी आँखें खोलने की तमाम कोशिश की लेकिन खुल ही नहीं रही थीं। मैंने जोर से साँस लेने की कोशिश की लेकिन साँस आ ही नहीं रही थी। किसी अननोन नंबर से मोबाइल पर फोन भी बजता दिखाई पड़ रहा था, लेकिन सब कुछ धुंधला हो गया था।

अपनी बीवी से कहा कि शायद मेरी तबीयत सही नहीं है, मैं कुछ देर आराम करता हूँ। मैं जब अपने कमरे में बेड पर लेटने जा ही रहा था, ऐसा लगा जैसे मेरे पैर में एक झटका लगा हो और मैं अपने कमरे में गिर गया हँ। गिरने पर मैंने पाया कि मेरे कमरे में ये इतना पानी क्यों भरा हुआ है! इससे पहले कि मैं कुछ कर पाता या समझ पाता, पानी तेजी से बढ़ता हुआ मुझको खा गया।

मैंने सुना था कि आदमी पानी में कूदने के बाद 60 सेकंड के अंदर मर जाता है। गलत सुना था। मैं उन 59 सेकंड में जीना चाहता था, एक-एक सेकंड को एक-एक साल की तरह।

आदमी की 'बिसात' ही कुछ ऐसी है कि वो उम्मीद नहीं छोड़ता। उम्मीद नहीं होती तो लोग सुसाइड लेटर लिखकर नहीं जाते, धीरे से चुपचाप मर जाते। गुमनाम मर पाना हमारे समय की सबसे बड़ी लग्जरी है।

अगले दिन अखबार और टीवी में खबर थी– सी-लिंक पर बढ़ती हुई आत्महत्याओं को देखते हुए सुरक्षा के इंतजाम कड़े किए जाएँगे। पिछले तीन महीनों में ये अत्महत्या की 11वीं वारदात थी। 40 साल के कॉर्पोरेट एग्जीक्युटिव ने लगाई छलांग। बताया जाता है कि वो बहुत ही खुशमिजाज था। खबर लिखे जाने तक अत्महत्या की वजह का कोई खुलासा नहीं हुआ है।

मछलियाँ चूहा बन गई थीं।

मेरी गुमनाम जिंदगी को गुमनाम मौत नहीं मिली!

गुमशुदा

**On 7th June 2006, Swadesh Deepak left home for his routine morning walk, and went missing. All attempts to trace him by his friends and family have failed. (Wikipedia)*

विकिपीडिया पर सब कुछ सच नहीं होता। विकिपीडिया को एडिट किया जा सकता है लेकिन सच को एडिट नहीं किया जा सकता।

बिल्ली रास्ता काट ले तो कुछ नहीं होता लेकिन अगर एक लेखक रास्ता काट ले तो क्या होता है! ओजस प्रधान का रास्ता स्वदेश दीपक ने काट लिया था। जान-बूझकर कोई लेखक कभी रास्ता नहीं काटता। वो तो बस अच्छे शिकारी के जैसे घात लगाकर बैठा रहता है और कहानियाँ अपने आप आकर फँसती चली जाती हैं। 'ओजस प्रधान' की कहानी भी ऐसे ही आकर फँस गई थी।

स्वदेश दीपक नाम के एक लेखक थे। आप चाहें तो गूगल कर सकते हैं। लेकिन छोड़िए गूगल करके कुछ भी सही नहीं मिलेगा। कुछ लोग उन्हें बड़ा लेखक मानते हैं और कुछ अजीब।

ओजस और स्वदेश दीपक दोनों एक ही साल (1942) में पैदा हुए थे।

मनोहर कहानियाँ में पढ़कर ओजस प्रधान ने स्वदेश दीपक के बारे में जाना था।

कहानी पढ़ने के साथ ही ओजस प्रधान ने इस लेखक के बारे में जानने की कोशिश शुरू कर दी। उस कहानी में कुछ इतना पर्सनल था कि ओजस को ये यकीन हो गया थे कि शायद वह स्वदेश दीपक को जानता है।

ऐसा कई बार होता है न कि लेखक हमारे बारे में वो बातें लिख देता है जो हम कहीं भीतर बहुत गहरे दबाए बैठे थे। कुछ लेखक ये काम इतनी आसानी से कर देते हैं कि लगता है लेखक हमारे पड़ोसी या कोई बिछड़ा हुआ दोस्त है।

ओजस कुछ दिन तक अपने से मिलने वाले हर आदमी को शक से देखता कि कहीं कोई उसका दोस्त स्वदेश दीपक नाम से उसकी कहानी तो नहीं लिख रहा। ओजस प्रधान को भी यह शक हो गया। जालंधर के हिंदी अखबारों में जब भी वो स्वदेश दीपक की कहानी पढ़ता, हर बार उसको यह लगता कि स्वदेश दीपक उसी के मोहल्ले में रहते हैं। उसी के ऑफिस में जाते हैं। उसी के दोस्तों के साथ उठते-बैठते हैं। उसी की तरह जिंदगी से परेशान होते हैं। उसी की तरह रोज घर से भागने का सोचते हैं।

ओजस प्रधान जालंधर के अखबार के ऑफिस में कहानी का टुकड़ा लेकर गया। अखबार के ऑफिस में सन्नाटा था। उसको लगा कि वो कहीं गलत जगह आ गया है। वो एडिटर के कमरे में गया। एडिटर ने मुँह उठाकर भी नहीं देखा।

"मुझे शिकायत करनी है।" ओजस ने घबराते हुए कहा।

एडिटर ने अपनी कुर्सी पर पीछे टेक किया और एक कागज आगे बढ़ा दिया- "इस पर शिकायत लिख दीजिए।"

एडिटर फिर से अपने काम में व्यस्त हो गया। जैसे ही ओजस के हाथ में कागज आया, वो घबरा गया। वो बहुत देर तक सोचता रहा कि वो क्या शिकायत लिखे। एक-दो लाइन लिखने के बाद उसे लगा कि उसकी जिंदगी इस लायक तो है कि उस पर कोई कहानी लिख रहा है। कितने लोग तो तरसते ही रह जाते हैं कि कोई उनकी जिंदगी पर कहानी लिखे।

वो अपनी शिकायत पूरी नहीं लिख पाया। उसने शिकायत वाले कागज पर कुल तीन-चार लाइनें ही लिखी थीं। अखबार में स्वदेश दीपक की अगली कहानी छपी जिसकी शुरुआती लाइनें हू-ब-हू वही थीं। ओजस प्रधान ने वो कहानी डरते-डरते पढ़ी और अपने आस-पास देखा कि कहीं कोई उसको देख तो नहीं रहा। अपनी कहानी पढ़कर उसको कहीं-न-कहीं खुशी मिलती और एक डर ये भी था कि कहीं कहानी के पात्र का नाम ओजस प्रधान न

इसके बाद से स्वदेश दीपक को ढूँढ-ढूँढकर पढ़ना ओजस की एक आदत बन गई। उनकी कहानियाँ पढ़ते हुए वह अपने बारे में जानता। जिंदगी बीतती रही, स्वदेश दीपक ने बहुत क्रिटिकली एक्लेम प्ले लिखे, कुछ शॉर्ट स्टोरी की किताबें लिखीं। उनके प्ले 'कोर्ट मार्शल' के 4 हजार से ज्यादा मंचन हुए हैं, फिर भी उस आदमी को जितनी मकबूलियत मिलनी चाहिए थी, उतनी नहीं मिली।

ओजस ने यह बात किसी को भी नहीं बताई थी कि उसकी जिंदगी पर इतनी सारी कहानियाँ लिखी जा चुकी हैं।

हम लोगों को जानते हैं, उनकी कहानियों को नहीं।

ओजस अपनी जिंदगी में बिजी हो गया और समय ने आगे बढ़कर जिंदगी का एक बहुत बड़ा हिस्सा खा लिया। एक समय के बाद उसको स्वदेश दीपक के बाइपोलर डिसऑर्डर के बारे में पता चला। ठीक उसी समय जब उनका इलाज चंडीगढ़ के पीजीआई में हो रहा था। ओजस अपने किसी रिश्तेदार को मिलने वहाँ पहुँचा हुआ था। स्वदेश दीपक को किसी से मिलने की इजाजत नहीं थी। ओजस के मन में एक ही सवाल था कि क्या वो उसे जानते हैं? वह बहुत देर तक अस्पताल में टहलता रहा कि शायद कोई एक

मौका मिले और वह स्वदेश दीपक से मिलकर यह बात बोल पाए।

ओजस स्वदेश दीपक के कमरे के बाहर घात लगाकर बैठ गया। जब स्वदेश दीपक को उनके कमरे से टेस्ट के लिए ले जाया जा रहा था तब ओजस जान-बूझकर उनके सामने पड़ा। उनकी आँखें मिलीं। तभी एक सफेद साड़ी वाली औरत ने ओजस को डाँटा, "हटो रास्ते से, मेरे और स्वदेश के बीच में मत आओ।"

ओजस उस औरत की आवाज के डर से रास्ता छोड़कर खड़ा हो गया। पलक झपकने के बाद उस औरत की जगह उसे एक नर्स दिखी। स्वदेश दीपक अब आगे निकल चुके थे।

वो भागकर उनके पीछे गया, "आप कहाँ जा रहे हैं?"

स्वदेस दीपक थोड़ा-सा पलटे, मुस्कुराए और कुछ बोलते, इससे पहले ही नर्स ने जवाब दिया, "दिखता नहीं टेस्ट के लिए जा रहे हैं!"

ओजस वहीं पर बैठा स्वदेश दीपक का इंतजार करने लगा। सफेद साड़ी वाली औरत उसके पास आकर बैठ गई।

"मुझे तुम्हारी सब कहानी पता है।" उस औरत ने आकर ओजस के कान में कहा। ओजस पसीने-पसीने हो गया। किसी से भी अगर कोई आँखों में आँखें डालकर कह दे कि मुझे तुम्हारी सब कहानी पता है। ये बात किसी

ओजस घबराकर वहाँ से भाग गया। फिर कुछ देर बाद वो पलटकर आया तो वो औरत वहाँ नहीं थी।

वो स्वदेश दीपक के कमरे के आस-पास में टहलता रहा। जब नर्स दरवाजा खोलकर निकली तो उसे वही औरत स्वदेश दीपक से बात करते हुए दिखी। उसने दरवाजे पर कान लगा दिए। अंदर से उस औरत के हँसने की आवाज आ रही थी।

"तुम मेरे सामने से हट जाओ, तुम सामने से जाती क्यों नहीं? मुझे नहीं जाना मांडू। जब ठीक हो जाऊँगा तब पक्का मांडू चलेंगे।"

स्वदेश दीपक की आवाज लड़खड़ा रही थी। ओजस उनकी बात ध्यान से सुन नहीं पा रहा था। ओजस के रिश्तेदार को डिस्चार्ज कर दिया गया और अब ओजस के पास अंदर रहने का कोई तरीका नहीं था।

कुछ साल तक वो स्वदेश दीपक की कहानी का इंतजार करता रहा। दुकान वाले के पास जाकर बार-बार पूछता, "स्वदेश दीपक की अगली किताब कब तक आएगी?"

उसको कोई जवाब नहीं मिलता।

स्वदेश दीपक साल 1990 से 1996 तक बिस्तर और अस्पताल में रहे। सात साल बाद उनकी कलम चली। उन्होंने जो किताब लिखी उसका नाम था- 'मैंने मांडू नहीं देखा'।

ओजस ने किताब आते ही पढ़ डाली और एक गहरी उदासी में डूब गया। उसको पहली बार स्वदेश दीपक पर गुस्सा भी आया कि सब सच लिखने की क्या जरूरत थी। उसको गुस्सा ये भी था कि सात साल तक वो उसी अस्पताल में इलाज कराता रहा लेकिन उसका नाम क्यों नहीं लिखा। ओजस का खुद भी एक लंबा इलाज चला था। जब भी कोई उसको अस्पताल में मिलने आता तो वो भूल जाता कि लोग उससे मिलने आए हैं। जो उससे मिलने आता वो उसको ही बीमार समझकर बातें करने लगता। धीरे-धीरे लोगों ने आना छोड़ दिया।

उसका एक पुश्तैनी बिजनेस था और दो लड़कों ने उसको सँभाल लिया था। ओजस की अब अपने परिवार में कोई बहुत ज्यादा जरूरत रह नहीं गई थी। ज्यादा जरूरत बची नहीं थी। यह सवाल उसको हमेशा घेरे रहता था। वह जिंदगी में बस एक बार स्वदेश दीपक से मिलकर अपनी पूरी जिंदगी का हिसाब माँगना चाहता था।

लेखक तो किरदार की ऐसी की तैसी कर देता है लेकिन अगर कभी किरदार का दिमाग फिर जाए तो वो छपी हुई कहानी तो बदल नहीं सकता

यही वजह है कि लेखक एक समय के बाद खुद को लेखक न मानकर किरदार मानना शुरू कर देता है, उसको खुद नहीं पता होता कि कहानी कहाँ जाएगी।

ओजस ने स्वदेश दीपक के बारे में छपी हुई हर बात को अपनी एक फाइल में नोट करके रख लिया था। उसके पास हर एक छोटी-से-छोटी बात की खबर थी। मसलन कि वह भी जानता था कि वह अक्सर प्ले के मंचन में खुद जाते हैं। उसने एक-दो बार यह भी नोट किया था कि प्ले शुरू होने के कुछ ही देर बाद वो प्ले छोड़कर निकल जाते हैं। थिएटर के बाहर पास वाली चाय और सिगरेट की टपरी पर आसमान में देखते हुए सिगरेट सुलगाते रहते हैं।

ओजस को ऐसे मौके मिले, वह चाय की टपरी तक भी गया लेकिन जैसे ही स्वदेश दीपक उसके सामने पड़ते और कुछ एक सेकंड को ही सही जब उसकी आँखें स्वदेश दीपक की आँखों से टकरातीं तो वह सारे सवाल भूल जाता। उसका सारा गुस्सा हवा हो जाता। स्वदेश दीपक की आँखें ही उसको अपनी आँखें लगती थीं। जब वो आसमान में देखते और सिगरेट का एक कश अंदर लेते, वह भी ठीक वैसे ही उतनी ही ऑक्सीजन अंदर खींचता।

एक दिन नहाने के बाद जब वो बाल बाँधे हुए अपनी शक्ल शीशे में देख रहा था तो उसको अपनी शक्ल स्वदेश दीपक से मिलती हुई नजर आई।

थिएटर में जान-पहचान निकालकर एक बार तो उसने मुलाकात का समय भी फिक्स कर लिया था। जैसे-जैसे वह दिन करीब आ रहा था, वैसे ही ओजस की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। उसको डर था कि कहीं स्वदेश दीपक कुछ ऐसी बातें ना बता दें कि वह उनके सामने नंगा हो जाए। डॉक्टर तो फिर भी लिहाज करते हैं लेखक नहीं करते, और अच्छे लेखक तो बिलकुल भी नहीं करते।

ओजस तय समय पर घर से तैयार होकर निकला लेकिन स्वदेश दीपक के घर के मोड़ से ही वापस लौट आया। उस दिन जब वो घर लौटकर आया तो उसने उनकी सब किताबें दुबारा पढ़ीं और जब घर में सब सो रहे थे तो उसने वो सारी किताबें जला दीं। यहाँ तक कि बाजार में जब भी वो उनकी कोई किताब देखता तो उसे खरीदकर फौरन जला देता। अब वो उनकी अगली किताब का इंतजार कर रहा था। क्योंकि वो अपनी कहानी का अंत जानना चाहता था। वह किताब जो आई नहीं।

7 जून को ही ओजस प्रधान ने यह हिम्मत कर ली कि वो उनके घर के पास वाली चाय की टपरी से पकड़ लेगा। स्वदेश दीपक अपने चिर-परिचित अंदाज में सिगरेट के कश ले रहे थे। ओजस वहीं पास में खड़ा हो गया और उसने पूछा, "क्या हम एक-दसरे को जानते हैं?"

स्वदेश दीपक ने उसके बोलने के कुछ सेकंड बाद उसकी शक्ल को देखा। कुछ देर तक देखते रहे और बोले, "अब कुछ याद नहीं रहता। आप याद दिलाइए, शायद याद आ जाए।"

ओजस प्रधान को थोड़ा-सा गुस्सा भी आया और थोड़ी खीज भी हुई कि उसकी पूरी जिंदगी ये आदमी उसकी कहानी लिखता रहा और अब बोल रहा कि कुछ याद नहीं रहता। किरदार किताब से निकलकर लेखक से पहली बार मिल रहा था। उसने अपनी सिगरेट जेब से निकालकर स्वदेश दीपक को दी। यह वह ब्रांड थी जो स्वदेश दीपक पीते थे।

सिगरेट देखकर वो रुके और पीते हुए कुछ नहीं बोले। ओजस को लगा कि अब शायद लंबी बात हो पाए लेकिन स्वदेश ने जैसे ही अपनी सिगरेट खत्म की तुरंत चलने लगे, "मैं थोड़ा जल्दी में हूँ। फिर कभी मिलते हैं।"

ओजस ने पूछा, "कहाँ मिलना सही रहेगा?"

"जब कभी प्ले हो आप आ जाइए, मैं बाहर ही मिल जाऊँगा।"

"मैं माफी चाहता हूँ मुझे मालूम है कि आप जल्दी में हैं लेकिन मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ।"

स्वदेश दीपक ने पास खड़ी एक सफेद साड़ी वाली औरत को इशारा किया, "बस एक मिनट में आ रहा हूँ।"

"जी जल्दी पूछिए, मुझे मांडू के लिए निकलने में देर हो रही है।"

ओजस ने हिम्मत करके पूछ लिया, "आपको ऊब होती है? आपकी कहानियों के अंत में इतना अँधेरा क्यों होता है? सब सुख चुनते हैं, आप हमेशा दुख क्यों चुनते हैं?"

स्वदेश दीपक ने एक और सिगरेट जला ली।

"आप कब से पढ़ रहे हैं मुझे?"

"1957 से, जब आप स्वदेश दीपक नहीं, बल्कि सुदेश भारद्वाज के नाम से लिखते थे।"

"फिर तो आपको जवाब पता है, मैं 1957 से ही ऊबा हुआ हूँ। इस दुनिया से, शहर से, घर से, कॉलेज से ऊबकर पहले अपनी कहानियों की दुनिया में जाता था लेकिन अब उनसे भी मन ऊब चुका है। मैं इतना ऊब चुका हूँ कि अपना लिखा हुआ भी पूरा नहीं देख पाता। पहले ऊबता था तो दोस्तों को चिट्ठियाँ लिखता था। अब इतना ऊब चुका हूँ कि एक सिगरेट खत्म नहीं होती कि दूसरी जलाने का सोच लेता हूँ। अब शायद मांडू जाकर ही मेरी ऊब मिटे।"

गुस्सा भी कर रही थी। उस औरत की उम्र कुछ ज्यादा नहीं लग रही थी। मैंने ध्यान से देखा, ये वही औरत थी जो अस्पताल में थी।

जब कोई छोटा बच्चा तितली को पकड़ने की कोशिश करता है और नाकाम हो जाता है, तो वही बच्चा जब बड़ा हो जाता है तो तितली देखकर सोचता है कि एक बार बचपन में जाकर उस तितली को पकड़ लेना चाहिए। वह तितली बार-बार पास आती है, बुलाती है और आगे बढ़ने पर तरह-तरह की कलाबाजी खाकर फिर से दूर हो जाती है।

हम सबकी जिंदगी में ऐसी तितलियाँ होती हैं जो कभी बुलाए तो हम चाहकर भी मना नहीं कर पाएँगे।

पहली औरत होती है, और दूसरी मौत। दूसरी जाने दीजिए आपको पता है वो कौन है।

"मैं आपके साथ चलूँ?" ओजस ने स्वदेश दीपक से पूछा।

"सफर लंबा है, थक तो नहीं जाओगे?"

"लंबा सफर करके पहुँचा हूँ, लंबे सफर का डर नहीं है।"

“तो भटकने का है?” स्वदेश दीपक ने आँखों में आँखें डालकर पूछा।

“भटकने का भी नहीं, मुझे पहुँचने का डर है। मैं गलत पते पर पहुँचते-पहुँचते अब ऊब चुका हूँ।”

स्वदेश दीपक की चाय खत्म हो चुकी थी। सिगरेट का पैकेट भी खाली था। उन्होंने दो पैकेट सिगरेट खरीदी। ओजस ने भी सिगरेट के दो डब्बे खरीदे।

स्वदेश दीपक ने अपनी जेब से सिगरेट का डिब्बा ओजस की ओर बढ़ाते हुए कहा, “मुझसे चीजें खो जाती हैं। तुम सँभालकर रख लो।”

ओजस ने स्वदेश दीपक की तरफ अपना हाथ बढ़ाया और कहा, “मेरा नाम ओज…”

उस औरत ने बात को बीच में ही काट दिया और कहा, “मुझे नाम याद नहीं होते, मैं तुम दोनों को एक ही नाम से बुलाऊँगी।”

तीनों तब से एक लंबे सफर पर हैं। ओजस प्रधान के गायब होने की खबर किसी अखबार में नहीं छपी। घर वाले भी थाने में रिपोर्ट करके भूल गए।

स्वदेश दीपक के दोस्तों को अब भी लगता है कि स्वदेश दीपक कहीं नहीं गए हैं और वो हर बार नाटक के मंचन में चुपके से आते हैं। हर मंचन के बाद दर्शकों के बीच में उनके दोस्त उनको खोजते हैं लेकिन उनके दोस्त भूल

कुछ उदास लोग उन्हें बड़ा लेखक मानते हैं और कुछ अजीब। अजीब इसलिए नहीं कि वो लिखते अच्छा थे, बल्कि इसलिए क्योंकि एक दिन वह सुबह घर से निकले और फिर कभी लौट के नहीं आए। ये बात वो अपनी किताब में बहुत पहले लिख चुके थे। यह कहानी लिखे जाने तक उनके बारे में कोई ठोस जानकारी उपलब्ध नहीं है।

स्वदेश दीपक ने अपनी जिंदगी का अंत अपनी कहानी की तरह लिखा था। उनको ये नहीं पता था कि उनके कुछ पाठक उनका और उनके लिखे किरदारों का साथ कभी नहीं छोड़ने वाले थे। उन्होंने एक बार ये लाइन लिखकर काट दी थी, इसीलिए ये कभी छपी नहीं- ‘हर आदमी तभी तक नॉर्मल है जब तक कि समाज उसे पागल घोषित नहीं कर देता।’

विंडो सीट

मुझे एक लड़की ने बताया था कि मुंबई में जो लड़कियाँ हीरोइन बनने आती हैं वो तीन तरीके की होती हैं। पहली जिनमें बहुत टैलेंट होता है लेकिन वो कॉम्प्रोमाइज नहीं करतीं, इनका कुछ नहीं होता।

दूसरी जिनमें कोई टैलेंट नहीं होता, वो मुंबई के ग्लैमर के पीछे भागते हुए आई होती हैं। रास्ते में उनको जो भी मिलता है स्पॉटबॉय से लेकर डायरेक्टर तक, वो हर जगह कॉम्प्रोमाइज कर लेती हैं, इनका भी कुछ नहीं होता।

तीसरी जिनमें टैलेंट होता है और उनको पता होता है कि कॉम्प्रोमाइज कहाँ करना है, इनमें से कुछ लड़कियाँ हिरोइन बन पाती हैं।

उस लड़की ने जब मुझे यह बात बताई थी तब हमारी कोई जान-पहचान नहीं थी। इन्फैक्ट मैं तब तो उसका नाम भी नहीं जानता था।

हमारी मुलाकात एयरपोर्ट पर हुई थी। देर रात की फ़्लाइट थी। फ़्लाइट जयपुर से मुंबई आ रही थी। जब हम एयरपोर्ट पर सिक्योरिटी चेक की लाइन में थे तो मुझे पता नहीं क्यों ऐसा लगा कि मैंने इस लड़की को कहीं देखा है। दिमाग पर बहुत जोर डालने के बाद याद आया कि इसको मैंने म्यजिक वीडियो में देखा था। वह वीडियो बहत पॉपुलर हआ था। हालाँकि अगले ही मिनट में याद आया कि उस म्यूजिक वीडियो को आए हुए 12 साल बीत चुके थे।

फ़्लाइट में भी अच्छा-खासा समय बाकी था। मैं मुंबई से उसी दिन सुबह ऑफिस के काम से जयपुर आया था। दिन भर काम करके अच्छा-खासा पक चुका था। इसलिए अब लैपटॉप खोलकर या मोबाइल पर आँखें गड़ाने का बिलकुल भी मन नहीं था।

ऐसा होता है न कि जिसको आपने म्यूजिक वीडियो में हजारों बार देखा हो, वो सामने पड़ जाए तो आप उससे बातचीत शुरू करने के लिए कहेंगे क्या! यह कन्फ्यूजन रहता है कि तारीफ करें भी तो कैसे करें।

आप अपने दिमाग पर जोर मत डालिए क्योंकि मैं उस लड़की का नाम नहीं बताने वाला। ऐसे तमाम म्यूजिक वीडियो आए थे और अगर मैं नाम बताऊँगा तो आप उस तक पहुँच जाएँगे। मैं नहीं चाहता कि किसी अजनबी को बताई हुई ऐसी बात को नाम के साथ शेयर किया जाए।

मेरे अलावा एयरपोर्ट पर कुछ लोग और भी थे जो उसको पहचान रहे थे। लेकिन किसी की इतनी हिम्मत नहीं थी कि उसके पास जाकर कुछ बात करें।

उसके बारे में जितना कुछ इंटरनेट पर उपलब्ध था वो सब मैंने पढ़ लिया और मैं उसके पास पहुँचा। वह अपने मोबाइल की स्क्रीन पर सेल्फी वाला कैमरा खोलकर अपने बाल सही कर रही थी। सच पूछो तो उसको बाल सही करने की जरूरत नहीं थी, ऐसे ही बहुत अच्छी लग रही थी। पास से देखने पर मुझे यह समझ आया कि क्या सही में उस गाने को आए 12 साल बीत गए! कई बार चीजें पास से देखने पर दूर नजर आती हैं।

वह तो समझ गई थी कि मैं उसके पास बात करने आया हूँ। वह अब भी अपने मोबाइल में अपने बाल सही कर रही थी। मैंने इंतजार किया कि वो अपने बाल पहले सही से सही कर ले। खैर, उसने अपने चेहरे पर एक प्लास्टिक स्माइल मेरी तरफ दी।

मैंने स्माइल से थोड़ा-सा प्लास्टिक कम करके स्माइल उसे वापस कर दी। उसके पास वाली जगह खाली थी।

"क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ?"

उसने हाँ में सिर हिला दिया। ऐसा किसी स्कूल में सिखाया तो नहीं जाता लेकिन फिर भी शिष्टाचार कहता है कि अगर किसी से बात शुरू करनी हो तो तारीफ से करनी चाहिए। आगे की बात मुझे ही शुरू करनी थी।

"मैं आपका फैन हूँ!"

समझने के लिए शायद कि कोई म्यूजिक वीडियो वाली लड़की का फैन कैसे हो सकता है! जब वह मेरी आँखों में देख रही थी तो मेरी नजर उसके बोर्डिंग कार्ड पर गई। मेरी और उसकी फ्लाइट सेम थी। तभी अनाउंस हुआ कि हमारी फ्लाइट एक घंटा लेट हो गई थी। अनाउंसमेंट सुनते ही मैंने अपने आप से कहा लेकिन इतना जोर से कहा कि उसे भी सुनाई पड़ा, "क्या यार, ये हमेशा लेट होती है!"

उसने मेरी यह बात सुनी और पूछा, "तो मिस्टर फैन, आप मेरे कितने बड़े वाले फैन हैं?"

अच्छा, मैं उसका ऐसा कोई बड़ा वाला फैन नहीं था। वह तो तारीफ करनी थी, म्यूजिक वीडियो देखा था इसलिए बोल दिया बड़ा वाला फैन हूँ।

और कुछ नहीं सूझा तो मैंने कहा कि आप आजमाकर देख लीजिए।

"मैंने सोचा था कि मैं फ्लाइट में खा लूँगा, लेकिन मुझे बहुत भूख लग रही है। हम लोग कुछ साथ में खा सकते हैं?"

"मुझे इतनी भूख नहीं है लेकिन मैं साथ में बैठ जाऊँगी। आपके पास चार्जर है?"

“आपका आईफोन है न?”

“हाँ।”

“मिल जाएगा।”

अच्छा सच बताऊँ तो मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह मेरे साथ खाने के लिए आ जाएगी। मन-ही-मन में बहुत खुश था और यह मना भी रहा था कि फ़्लाइट थोड़ी और लेट हो जाए। हाँ अगर वह साथ आने के लिए मना कर देती तो शायद बात कुछ और होती। लेकिन अब बात कुछ और थी।

दो मिनट में हम फूड ज्वॉइंट पर आ चुके थे। उसने कहा कि आप ऑर्डर करिए मैं वॉशरूम से आती हूँ।

“कुछ तो खाएँगी आप?”

“कुछ पी लूँगी, आइस-टी।”

“कूल!”

मैं खुश था। दिनभर की थकावट मुझे महसूस नहीं हो रही थी। मैं अपने दिमाग में ही बना रहा था कि वह जब लौटकर आएगी तो मैं उससे बात क्या करूँगा। खयाल आया कि मैं थोड़ा-बहुत उसके बारे में और गूगल कर लूँ ताकि बातचीत का कोई सिरा मिले।

वो आई तो पहले से कछ ज्यादा फ्रेश लग रही थी। उसने अपना मोबाइल देने से ठीक पहले उसको फ़्लाइट मोड में किया। क्योंकि मैं फ्रिक्वेंट फ्लायर था तो मेरे पास चार्जर, एकाध एक्स्ट्रा वायर हमेशा रहते थे।

“तो आप बता रहे थे कि आप कितने बड़े वाले फैन हैं।”

इतनी डायरेक्ट बात सुनकर मैं थोड़ा-सा बैक सीट पर आ गया। मैं अपने आपको सँभाल ही रहा था कि इससे पहले वह बोली, “डोंट वरी, पुलिंग योर लेग, आई होप, यू डोंट माइंड!”

“बिलकुल भी नहीं, ऐसे थोड़ी आपका सबसे बड़ा फैन हूँ।”

यह सुनकर बहुत ही जोर से हँसी, उस हँसी ने हमारे बीच के अजनबीपन को थोड़ा-सा कम कर दिया।

“तो आप जयपुर की रहने वाली हैं?”

“नहीं, काम से आई थी।”

“कुछ शूट वगैरह?”

“हाँ ऐसा ही समझ लीजिए।”

हाँ ऐसा ही समझ लीजिए बोलते हुए उसने एक लंबी साँस ली। उस लंबी

साँस में बहुत कुछ था। इतना कुछ कि उसे लिखकर या बोलकर बताया नहीं जा सकता। मुझे अगला सवाल शायद पूछना नहीं चाहिए था।

"कोई म्यूजिक वीडियो का शूट था?"

"नहीं।"

"कोई फिल्म?"

"नहीं।"

"कोई सीरियल?"

"नहीं।"

"कोई ऐड?"

"कोई और बात करें? आपने आइस-टी बोल दी थी न?"

"हाँ मैं पता करके आता हूँ।"

मुझे लगा कि यह सवाल नहीं पूछना चाहिए था। मैंने अभी उसके बारे में जितना भी गूगल किया था उससे पता चला था कि उसका डिवोर्स हो चुका है, एक बच्ची है, उसको एक-दो बड़ी फिल्मों में छोटे रोल मिले भी थे। मैंने सोच लिया था कि अब उसके काम की कोई बात नहीं करूँगा।

मैंने लौटते ही कहा, "देखिए मैं अपने बारे में तो कछ भी बताना भूल ही गया।"

"जरूरत नहीं है, वैसे भी हम आज के बाद कभी मिलने वाले नहीं हैं।"

मन तो किया कि मैं पूछूँ कि क्यों, लेकिन मैंने जाने दिया। मेरी शक्ल पर लिखा हुआ था कि मुझे बुरा लग गया है। जैसी शक्ल मैंने बनाई थी उसको बुरा ना भी बोलें तो भी थोड़ा ऑकवर्ड तो मैं हो गया था।

वो बोली, "यार मोहित, तुमने तो सीरियसली ले लिया!"

"आपको मेरा नाम कैसे पता?"

"जो बिल के साथ तुमने अपना कार्ड रखा हुआ है उस पर लिखा हुआ है। आई एम श्योर, तुम चोर नहीं होगे और किसी मोहित अरोड़ा का कार्ड लेकर नहीं घूम रहे होगे!"

फिर कुछ सोचकर उसने कहा, "वैसे हम आज के बाद मिल भी सकते हैं, वो इस बात पर डिपेंड करता है कि तुम मुझे कितना कम बोर करते हो। देखो बोर तो तुम करोगे, अब कितना कम करोगे यह देखना है।"

"मैं बोर करूँगा, ऐसा तुमने क्यों कहा?"

"तुम खुद देखो, अमेरिकन एक्सप्रेस का कॉर्पोरेट कार्ड, जयपुर एयरपोर्ट पर अब भी टाई लगाए, दिनभर की मीटिंग के बाद थके हुए जैसे कि कोई फालतू की प्रेजेंटेशन से आ रहे हो। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हें अपने काम से प्यार नहीं है। टिपिकल कॉपोरेट वाले होते हैं। वैसे ही लग रहे हो तुम। अनलेस यू प्रूव इट रॉन्ग।"

उसकी हर एक बात सही थी। मुझे ताज्जुब हुआ कि वह इतनी मुँहफट थी कि अभी तक मेरा नाम भी नहीं जानती थी और मेरे बारे में इतना कुछ जान गई थी जो कि पूरी तरह सच ना भी हो लेकिन पूरी तरह झूठ भी नहीं था।

"तुमको इतना पता है, कहीं तुम मेरी फैन तो नहीं?"

"यह हुई ना बात। अब आया मजा। तो मोहित अरोड़ा, एक गेम खेलते हैं।"

"आहा! अब ट्रुथ एंड डेयर मत बोल देना।"

"बिलकुल नहीं, लेवल बढ़ाओ अपना।"

"सच का सामना?"

"बहुत ही घटिया गेम।"

"आई एम गेम, जो भी बोलो।"

"इसमें क्या करना होता है?"

"बहुत सिंपल है, हर सवाल का जवाब झूठ में देना होता है।"

"आहा! एक भी सच नहीं?" मैंने कन्फर्म करने के लिए पूछा।

"एक रूल और भी है कि जो सवाल मैंने तुमसे पूछ लिया, वह तुम मुझसे नहीं पूछ सकते और सवाल के बारे में कोई बात नहीं होगी।"

"ठीक है, शुरू करो फिर।"

"पानी पी लो पहले, बहुत जरूरत पड़ने वाली है।" उसने मेरी जूठी की हुई बोतल से ही एक घूँट पानी पिया।

"गेम तुम्हारा है शुरू तुम करो।"

"ठीक है तो यह बताओ मोहित अरोड़ा कि तुम घर में झूठ बोलकर ऑफिस के ट्रिप के बहाने से निकले हो कभी?"

उसका यह सवाल सुनकर मैं सोचने लगा कि अगर मैं गलत भी जवाब देता हूँ तो भी उसे सही पता चल जाएगा। मैं सोच ही रहा था कि वह बोली, "इतना सोचने की जरूरत नहीं है।"

“ऑफिस का ट्रिप बताकर नहीं निकला हूँ।”

मुझको बीच में ही काटते हुए वह बोली, “सवाल रिपीट नहीं करना है। बस हाँ या ना में जवाब दो न यार, बोर क्यों कर रहे हो!”

“ओके, नहीं कभी निकला।”

“गुड, अब तुम पूछो।”

“तुम जयपुर किस काम से आई थी?”

“शूट पर।”

“घर जाने से पहले अपने मोबाइल से मैसेज डिलीट करते हो?” उसने मेरी आँखों का एक्स-रे करते हुए पूछा।

“नहीं।”

“तुमने कभी काम के लिए कॉम्प्रोमाइज किया है?” मैंने बचा हुआ पानी एक बार में पीते हुए पूछा।

“नहीं।”

“तुम्हारे सच्चे दोस्त हैं, जिनसे तुम कुछ भी बोल सकते हो?”

“अगर मैं तुम्हें बोलूँ कि हम जयपुर से मुंबई की नहीं गोवा की फ़्लाइट लेंगे, तो तुम चलोगी?”

“अच्छा सवाल है मोहित, हाँ मैं चलूँगी।”

उसकी हाँ सुनकर मैं मन-ही-मन खुश हुआ था कि तभी मुझे ध्यान आया कि यह गेम तो उल्टा है।

“अब तो कुछ अच्छा पूछो यार!”

“तुम मेरे साथ गोवा जाना चाहते हो?”

मैं समझ नहीं पा रहा था कि अब सच बोलूँ या झूठ बोलूँ, मैं हर तरीके से फँस ही रहा था।

“नहीं।”

“जब मैं वॉशरूम गई थी, तब तुमने मेरे बारे में गूगल किया था?”

“नहीं।”

“अगर तुम्हें च्वॉइस होती है कि तुम पीछे जाकर अपने करियर में कुछ बदल सकती तो तुम क्या बदलती?”

“मैं सब कुछ वैसे ही करती जैसे हुआ, एक भी चीज नहीं बदलती।”

मुझे अब तक यह समझ में आ गया था कि हम सवालों के जवाब भले ही झूठ दे रहे थे लेकिन हर झूठ हमें सच की तरफ ले जा रहा था। यह सच उस पल का सच था। मेरी जैसी बातचीत हो रही थी मैंने कभी सपने में भी ऐसा नहीं सोचा था कि किसी से मैं ऐसे बात भी कर सकता हूँ।

केवल आधे घंटे में ही वह मेरे बारे में मेरे किसी दोस्त से ज्यादा जान गई थी। अजनबी के साथ सच और झूठ दोनों ही बोलने में थोड़ी आसानी रहती है। मेरी खामोशी तोड़ते हुए उसने कहा, “मेरे बारे में इतना क्यों सोच रहे हो?”

“नहीं तुम्हारे बारे में नहीं सोच रहा था।”

“झूठ!”

“झूठ ही तो बोलना था न?”

“गेम अभी खत्म नहीं हुआ है।” उसने यह कहकर अपनी आइस-टी का आखिरी सिप लिया। उसने मोबाइल में चार्जिंग चेक की। मोबाइल करीब आधा चार्ज हो चुका था। मोबाइल वापस चार्जिंग में लगाते हुए उसने पूछा, “तो किसका टर्न है?”

“इस गेम की जरूरत है भी? नॉर्मल रखते हैं न, सच बोलते हैं न। मेरा

“ठीक है मिस्टर मोहित अरोड़ा, तुम बढ़िया आदमी हो। मोबाइल चार्जर दे दिया और क्या चाहिए।”

“बहुत बढ़िया, तो गेम दोबारा शुरू करें?”

“बिलकुल करो। तुमने पहले सवाल पूछा था तो तुम शुरू करो”

“ठीक है तो फिर यह बताओ मोहित अरोड़ा कि तुम घर में झूठ बोलकर ऑफिस के ट्रिप के बहाने से निकले हो कभी?”

“हाँ।”

“अब तुम्हारा टर्न।”

“तुम जयपुर किस काम से आई थी?” मैंने अपना सवाल दोबारा पूछा।

“कैन वी ड्रॉप दिस क्वेश्चन? तुम अगला सवाल पूछ लो।”

वह इस सवाल का जवाब देने में कम्फर्टेबल नहीं थी। मैंने भी जोर नहीं डाला।

“अगर मैं तुम्हें बोलूँ कि हम जयपुर से मुंबई की नहीं गोवा की फ्लाइट लेंगे,

तो तुम चलोगी?"

"हाँ शायद!"

"शायद क्या होता है? हाँ बोलो या ना बोलो।"

"हाँ।"

"यह जानते हुए कि मैं तुम्हें बोर कर रहा हूँ फिर भी?"

"लोग बोर करते हैं, लेकिन मैं बोर होती नहीं।"

"मैं समझा नहीं?"

"मतलब यह है कि बोर होना एक च्वॉइस है। अपने आप पर है, आपको बोर होना है कि नहीं होना है। अगला टर्न मेरा था न? तुम सवाल पूछ ज्यादा रहे हो और बता कम रहे हो।"

"पूछो फिर।"

"गूगल में क्या मिला मेरे बारे में?"

"यही कि तुम्हारी एक बच्ची है।"

"और मेरा डिवोर्स हुआ है।"

मुझे लगा शायद वह कुछ और कहना चाहती है लेकिन वह कहते-कहते रुक गई। अब अगला टर्न मेरा था तो मैंने अपने हिसाब से सवाल पूछ लिया।

"अगर तुम्हें च्वॉइस होती कि तुम पीछे जाकर अपने करियर में कुछ बदल सकती तो तुम क्या बदलती?"

"मैं कभी उस म्यूजिक वीडियो के लिए हाँ नहीं बोलती।"

मेरे पास अब कोई सवाल बचा नहीं था। न ही वो भी कुछ पूछना चाहती थी।

"कैन आई मेक वन रिक्वेस्ट?" मैंने कहा।

"जब तुम अपना मोबाइल खोलना। अगर तुम्हें ठीक लगे तो क्या मैं तुम्हारी बेटी का नाम जान सकता हूँ और मैं क्या उसकी फोटो देख सकता हूँ?"

उसने कोई जवाब दिए बिना अपने मोबाइल को फ्लाइट मोड से हटाया। उसकी बेटी के साथ हजार फोटो में से एक फोटो से बड़ी करके मेरी तरफ बढ़ा दी।

“शगुन।”

“बहुत अच्छा नाम है।”

मैं वह फोटो कुछ देर तक देखता रहा कि तभी हमारी फ़्लाइट का अनाउंसमेंट हुआ।

“तुम्हारा सीट नंबर क्या है?” उसने पूछा।

“1D और तुम्हारा?” मैंने अपना बोर्डिंग पास देखते हुए कहा।

“1F है।”

“बहुत दूर नहीं है।” मैंने कहा।

“हाँ, बहुत पास भी नहीं है।” उसने खत्म होती हुई लाइन को देखकर कहा।

“मैं हमेशा 1D ही लेता हूँ।”

“और मैं हमेशा फर्स्ट की विंडो सीट।”

हमने अपने सामान समेटे। चार्जर का तार अभी उसके मोबाइल में लगा हुआ था। मैंने उसे निकालकर अपने बैग में रख लिया। अनाउंसमेंट होते ही एक लंबी लाइन लग गई थी।

हमारी बीच की सीट उस दिन खाली गई। फ़्लाइट लगभग भर चुकी थी। मैंने अपनी सीट शिफ्ट नहीं की, न ही वह बीच वाली सीट पर आई। इस बीच फ़्लाइट के आसमान में पहुँचने के बाद कोई मेरी उम्र का लड़का वॉशरूम के लिए आया और उसने जब म्यूजिक वीडियो वाली लड़की को देखा तो उसने कहा, “मैम, बिगफैन!”

हम दोनों यह सुनकर मुस्कुरा दिए। बीच वाली खाली सीट को हम ऐसे यूज कर रहे थे कि हम दोनों ने उसको मिलकर बुक कराया हो। जैसे वो सीट इस दुनिया की इकलौती ऐसी जगह हो जहाँ हम दोनों का कुछ हिस्सा हो।

पूरी फ़्लाइट भर हमारी बात हुई। एयरपोर्ट पर उसको गाड़ी लेने आई हुई थी। मुझे कैब बुक करनी थी। चलने से पहले मैंने अपना कार्ड उसकी तरफ बढ़ाया, “आई विश वी वुड बी इन टच।”

उसने मुझे गले लगाया और बोली, “डोंट रूईन दिस। लाइफ को थोड़ा चांस देते हैं। क्या पता कभी किसी दिन ऐसे ही फिर टकरा जाएँ!”

वो जाने से पहले लौटकर आई और बोली, “मुंबई में जो लड़कियाँ हीरोइन बनने आती हैं वह तीन तरीके की होती हैं…”

मैं जब भी फ़्लाइट लेता हूँ तो उसको ढूँढता हूँ। एयरपोर्ट पर और फ़्लाइट की विंडो सीट पर भी।

सुपरस्टार

मस्त काला चश्मा, नीला जीन्स वाला जैकेट, कान में बाली, हाथ में बैंड पहने जब राजू टैक्सी का दरवाजा खोला तो एक मिनट के लिए मैं कन्फ्यूज हो गया कि क्या सही में ये ड्राइवर है?

मैंने बैठते ही कहा, "तुम तो हीरो लगते हो।"

राजू ने टैक्सी का एप्प शुरू करते हुए बड़ा ही कैजुअली जवाब दिया, "लगता क्या है, अपुन हीरो है सेठ।"

मुझे लगा कि मैंने शायद गलत सुन लिया है। मैप पर मेरी लोकेशन लग चुकी थी। उन दिनों मैं एक टीवी सीरियल के लिए लिखा करता था तो कभी-कभार शूटिंग के लिए जाना होता था।

उसने जब मुंबई फिल्म सिटी की लोकेशन देखी तो खुश हो गया।

"आप फिल्म लाइन में हो क्या सेठ?"

"हाँ, लेकिन हीरो नहीं हूँ।"

वो जोर से हँसा और बोला, "मुंबई में हीरो बनना आसान नहीं है सेठ।"

उसने मुझे दस सीरियल के नाम गिना दिए। जिसमें से एक या दो ही मैंने सुने थे।

"मोस्टली दो-तीन दिन का शूट रहता है। क्राइम पेट्रोल में अपुन पाँच बार मर्डर कर चुका है सेठ। अब रोज शूटिंग नहीं रहती तो जिस दिन शूटिंग नहीं उस दिन टैक्सी चला लेता हूँ। पैसे भी आ जाते हैं और आप जैसे लोगों से मुलाकात हो जाती है।"

इतने में सड़क पर एकदम से कोई बाइक वाला आ गया। उसने बिना एक भी सेकंड गँवाए शीशा खोलकर दो-तीन गालियाँ दे डाली। उसका लुक देखकर बाइक वाला भी हैरान था।

फिल्म सिटी आने पर उतरने से पहले उसने नंबर लिया और बहुत ही धीमे से कहा, "आपके सीरियल में कोई काम हो तो बोलने का, अपुन हर तरीके का हीरो बन सकता है।"

मैंने नंबर दिया और उसके मैसेज आने पर नंबर सेव नहीं किया। दो-चार दिन में वो एक बार अपनी किसी फोटो पर गुड मॉर्निंग चिपकाकर भेज दिया करता।

राजू की जिंदगी वैसे ही चले जा रही थी। फिल्मी कहानियों जैसा कोई बड़ा ट्विस्ट नहीं आ रहा था। वही छोटे-मोटे और महीने में दो-तीन दिन का काम और बाकी दिन टैक्सी चलाना।

एक दिन राजू ने एयरपोर्ट पर दो लोगों को टैक्सी में लिया। ये लोग मुंबई पहली बार आए थे। राजू की तो आदत थी ही बात करने की, तो बात शुरू हुई। पता चला कि ये दो लोग दिल्ली के पान मसाले वाली कंपनी से हैं। अब ये लोग एक फिल्म बनाना चाहते हैं। यहाँ पर फिल्म के हीरो और हीरोइन को ढूँढ रहे हैं। जैसे ही राजू को ये बात पता चली, बस उसने पूरा जोर लगा दिया। सबसे पहले तो वो उनको एक अच्छा-से होटल में लेकर गया।

उन दोनों की ये डिमांड थी कि अगले एक हफ्ते में वो ज्यादा-से-ज्यादा लोगों से मिल पाएँ। राजू ने उनको होटल छोड़ने के पैसे भी नहीं लिए। इसके बदले में उन्होंने राजू को साथ में डिनर करने का ऑफर किया।

राजू शाम को तैयार होकर, महँगी शराब की बोतल लेकर होटल पहुँचा। शराब की बोतल इतनी महँगी थी कि राजू ने कभी वो ब्रांड नहीं पी थी। लेकिन वही बात थी कि ये शायद वो मौका था जो जिंदगी में बार-बार नहीं आता।

उसने सुना था कि मुंबई में हर नाम की एक लहर आती है। बात ये है कि

राजू को ये भरोसा था कि इस बार उसके नाम की लहर आ चुकी थी। अपने गाँव से जब वो चला था तो शुरू में मुंबई के समंदर के पास घंटों बैठता और समंदर को आसमान मानकर उससे बातें करता। उसको लगता कि मुंबई में अगर समंदर खुश हो गया तो एक दिन वो यहाँ पर राज करेगा।

राजू ने कभी भगवान को नहीं देखा था लेकिन समंदर को तो वो देख और छू सकता था। असल में हम उसे ही अपना भगवान मानना चाहते हैं जिसको हम देख और छू सकते हैं, फिर वो चाहे पत्थर ही क्यों ना हो। इसीलिए शायद न छू पाना भगवान होने की पहली शर्त है।

राजू जब कमरे में पहुँचा तो दोनों ने गर्मजोशी से स्वागत किया। उन दोनों में से एक जिसने गले में सोने की एक मोटी चेन पहनी थी, उसका नाम स्टीफेन था। दूसरा जो पतला, शांत और फिट था उसका पहला नाम तो उसने बताया नहीं। हाँ उसका टाइटल मीरचंदानी था।

स्टीफेन बात करते हुए बीच-बीच में इंग्लिश के कुछ वाक्य बोल देता, "वी वांट टू मेक इट बिग, इंडस्ट्री को बदलना है राजू भाई। नेपोटिज्म की माँ की आँख करनी है।"

राजू को चीयर्स करते हुए ग्लास में पड़ी बर्फ में मुंबई के समंदर को बदलते हुए देख रहा था। इस बदलाव का इंतजार मुंबई भी कर रही थी।

तीन पेग पीने के बाद मुंबई बदल चुकी थी। राजू भूल चुका था कि वो एक ड्राइवर पहले और हीरो बाद में, अब वो आने वाले कल का सुपरस्टार था।

राजू के मन में उधेड़बुन चल ही रही थी कि वो फिल्म के हीरो के लिए अपना नाम बोले। इतने में मीरचंदानी बोला, "राजू भाई, रजनी सर का पता है न, बस कंडक्टर थे। हमें वही करना है, इंडस्ट्री बदलनी है। पब्लिक का हीरो पब्लिक के बीच से आना चाहिए।"

जिंदगी पर भरोसा कहानियों की वजह से आता है। सुपरस्टार रजनीकांत की कहानी उन्हीं तमाम कहानियों में से एक थी।

इससे पहले राजू अपना नाम आगे रखता, स्टीफेन और मीरचंदानी ने एक-दूसरे की ओर देखा और चौथा पेग बनाते हुए स्टीफेन बोला, "राजू, तुम होगे अगले रजनीकांत।"

मीरचंदानी ने बात में जोड़ते हुए कहा, "हम दिल्ली जाकर पेपर भेज देंगे और एक बार आप दिल्ली आ जाना साइनिंग के लिए, वहाँ आपको अपने बॉस और पान बहार कंपनी के मालिक से भी मिलवा देंगे।"

राजू को सब कुछ सपने जैसा लग रहा था। उसने आगे बढ़कर दोनों को गले लगा लिया और बोला, "अपन इंडस्ट्री बदल देंगे सर।"

राजू की आँखों में आँसू थे। वो अपना एक बूँद आँसू मुंबई के समंदर में

"हम लोग तो किसी को जानते नहीं है राजू भाई, बढ़िया हुआ आप मिल गए।" राजू को ये लाइन केवल सुनाई पड़ी। वो यह समझ नहीं पाया कि इसको स्टीफेन ने बोला था या मीरचंदानी ने।

तय हुआ कि पूरी फिल्म के लिए बाकी सभी आर्टिस्ट से लेकर हीरोइन से प्रोड्यूसर को मिलवाने की जिम्मेदारी राजू पर थी।

"अपनी फिल्म है राजू भाई, हम लोग बॉस से बात कर लेंगे। आप लॉन्च तो हो ही रहे हो तो साथ में को-प्रोड्यूसर भी हो जाना।" स्टीफन ने कहा।

रात का आखिरी घूँट पीते हुए मीरचंदानी ने कहा, "राजू भाई, आप स्टार बनकर भूल तो नहीं जाओगे?"

राजू ने मीरचंदानी की आँखों में देखते हुए एकदम सीरियस होकर कहा, "टच में रहना, जब भी मिलना हो मैनेजर से बात कर लेना।"

ये कहकर राजू बहुत जोर से हँसा और उसको देखकर मीरचंदानी भी हँसा।

"क्या एक्टिंग है राजू भाई!" स्टीफेन ने कहा।

"एक बात कहूँ राजू भाई, अगर आप बुरा ना मानो तो..." मीरचंदानी बोला।

राजू के बुरा मानने का सवाल ही नहीं था।

"यार राजू भाई, आप अपना नाम बदल लेना। वो क्या है न, राजू किसी सुपरस्टार का नाम नहीं लगता।"

राजू ने इससे पहले कभी अपने नाम के बारे में सोचा नहीं। उसको पहली बार अपना नाम घटिया लगा। उसको अपने नाम से थोड़ी-सी नफरत भी हुई। उसे लगा कि उसने कभी अपने नाम पर ध्यान क्यों नहीं दिया।

"आप दिल्ली आना, न्यूमरोलॉजी वाले अपने एक फ्रेंड हैं, आपका नाम बदल देंगे।" स्टीफन ने जब ये कहा, उससे पहले राजू अपने मन में कई नाम सोच चुका था और अपने मन में राजीव कुमार फाइनल भी कर चुका था।

राजू को उस रात नींद नहीं आई। अगले दिन उसने अपनी टैक्सी की एप्प खोली ही नहीं। उसको फिल्म के लिए डायरेक्टर से लेकर हीरोइन तक सबको प्रोड्यूसर से मिलवाना था। जितने भी सीरियल में उसने काम किया था, उसने उनके कुछ लोगों की मीटिंग प्रोड्यूसर से करवानी शुरू कर दी।

दिन भर होटल के कमरे में मीटिंग होती। मीरचंदानी और स्टीफेन राजू की तारीफ करते नहीं थकते। उन्होंने कुछ एक लोगों को फाइनल भी कर

की खोज सही से शुरू नहीं हो पाई थी। मीरचंदानी और स्टीफेन की चिंता बढ़ती जा रही थी।

"राजू भाई, आपके लेवल की हीरोइन भी चाहिए। वैसे अगर कुछ नहीं हुआ तो कोई बड़ी हीरोइन भी ले सकते हैं, पैसे का टेंशन नहीं है।"

स्टीफेन की बात को काटते हुए मीरचंदानी बोला, "राजू भाई के साथ जैकलीन बढ़िया रहेगी। राजू भाई जैकलीन से मीटिंग कराओ आप।"

उसकी बात बीच में ही काटते हुए स्टीफेन बोला, "नो यार, शी इस नॉट एन एक्टर, अपने को एक्टर चाहिए। मीना कुमारी जी जिंदा होतीं तो वो बढ़िया रहतीं। वैसे चेहरे बनाने बंद कर दिए ऊपर वाले ने।"

बहुत सोचते हुए राजू बोला, "कंगना ने क्वीन में एक्टिंग अच्छी की है।"

"यार ये नाम दिमाग में ही नहीं आया!" स्टीफेन ने कहा।

"परफेक्ट है, फाइनल कर देते हैं। मीटिंग कराओ राजू भाई।" मीरचंदानी ने कहा।

राजू ने अपना पूरा जोर लगा दिया। अब आदमी कितनी भी कोशिश करके हाथ घुमाकर उड़ तो नहीं सकता न। कंगना के जो भी नंबर मिले, वो सभी

बंद थे। इस बीच राजू को क्राइम पेट्रोल में एक रेपिस्ट का रोल आया। एक दिन का काम था, लेकिन राजू ने मना कर दिया।

फिल्म के सब लोग फाइनल हो चुके थे। बस एक हीरोइन रह गई थी। इस बीच स्टीफेन और मीरचंदानी, राजू के साथ पूरा मुंबई घूमते। लौटकर कमरे में जमकर पीते और खाते। उन दोनों के जाने में बस दो दिन बचे थे। राजू उस दिन अपने साथ कास्टिंग वाले को भी शाम में लेकर आया। कास्टिंग वाले का काम टीवी सीरियल में क्राउड देने का था, वही जो लोग किसी सीन में पीछे चलते हुए दिखाई देते हैं। ऐसे लोग रोज के दो सौ से पाँच सौ रुपये में दिन भर बैकग्राउंड में घूमते रहते हैं। राजू ने उसको बड़ा कास्टिंग डायरेक्टर बनाकर मिलवाया था।

स्टीफन और मीरचंदानी ने क्लीयर कर दिया कि ऐसा फ्रेश फेस चाहिए जो छा जाए। राजू के मना करने के बाद भी मीरचंदानी ने जबर्दस्ती कास्टिंग वाले की जेब में दस हजार एडवांस के डाल दिए। कास्टिंग वाले ने अगले दिन सुबह से लेकर शाम तक लड़कियों की लाइन लगा दी। जब वो कमरे में होते तो राजू और कास्टिंग वाला अलग कमरे में इंतजार करते।

साथ ही स्टीफेन ने राजू से कहा, "राजू भाई, बाकी सब तो हो गया। अपने को एक सुपरहिट कहानी चाहिए। आप किसी राइटर को जानते हो क्या?"

मीरचंदानी ने साथ में जोड़ा, "सलीम-जावेद की जोड़ी टूट गई वरना कहानी तो वही लिखते थे। उसके बाद से कछ मजा नहीं आता। खैर आपकी जान-पहचान में कोई हो तो बताओ।"

उधर स्टीफेन और मीरचंदानी एक-एक घंटे हीरोइन को टेस्ट कर रहे थे। हीरोइन अपने आप को टेस्ट करा रही थी। इधर राजू ने मुझे फोन किया। मैं एक शूट के सिलसिले में केरल गया हुआ था। मैंने कहा आकर मिलता हूँ।

राजू की टोन से पता चल रहा था कि वो बहुत खुश है। उसने यहाँ तक ऑफर किया कि फ़्लाइट की टिकट वो करा देगा लेकिन ये चांस मिस नहीं होना चाहिए। मैं जिस शूट पर गया था उसको छोड़कर आना संभव नहीं था। राजू बार-बार कहता रहा, "सेठ, बस दो घंटे के लिए मिल लो। मेरी लाइफ बन जाएगी।"

मैंने किसी तरह से उसे मना किया। फोन रखने के बाद मुझे राजू के बारे में सोचकर बहुत अच्छा लगा और सुकून भी हुआ कि यार मुंबई शहर ऐसे ही सपनों की नगरी थोड़े है।

उधर कमरे में जो लड़कियाँ हीरोइन बनने के सपने लिए जा रही थीं। वो अपना मौका छोड़ना नहीं चाहती थीं। स्टीफेन और मीरचंदानी ने शाम को राजू को बधाई दी और कहा, "बॉस आपकी फोटो देखकर बहुत खुश हैं। उन्होंने कहा है कि लव ट्रायएंगल वाली फिल्म बनाएँगे। एक नई हीरोइन

और एक कोई भी पुरानी ले लेंगे। कंगना के लिए उन्होंने हाँ कर दिया है।"

आधी बोतल पीने के बाद भी राजू को चढ़ नहीं रही थी। उस दिन होटल से निकलने के बाद उसने एक टैक्सी ली और बांद्रा बैंड स्टैंड में शाहरुख खान के घर के बाहर खड़ा होकर बहुत देर तक समंदर से बात करता रहा।

जिंदगी एक फिल्म जैसी लग रही थी जिसमें राजू का हर शॉट एक बार में ओके हो जा रहा था। उसने अपना नया नाम भी मुंबई के समंदर को सुना दिया, राजीव कुमार।

अगले दिन जब वो एक राइटर को लेकर होटल पहुँचा तो वो शॉर्टलिस्ट की हुई लड़की वहाँ पहले से थी। उसको देखकर ऐसा लग रहा था कि वो रात से ही वहाँ थी।

राजू ने अपनी हीरोइन को प्रोड्यूसर के साथ हँसते-मुस्कुराते देखा तो उसके सीने में हल्का-सा दर्द हुआ। इसके बाद तीनों मुंबई घूमने गए। राजू आगे कार चला रहा था। हीरोइन उन दोनों के साथ पीछे बैठी थी। वो खुश थी। उसको भी रात भर नींद नहीं आई थी। वो किसी छोटे शहर से भागकर आई थी। उसके पापा-मम्मी ने उसको मरा हुआ मान लिया था। छोटे-मोटे रोल करके वो थक चुकी थी। चेहरे को मेन्टेन रखना मुश्किल काम है। इस हीरोइन को सही टाइम पर बड़ा ब्रेक मिल गया। वर्ना वो लड़की मुंबई के

राजू ने सिद्धिविनायक के पास टैक्सी लगाते हुए सबको गणेश जी के दर्शन कराए। दर्शन के समय लाइन में लगे हुए पता चला कि जैकलीन दर्शन के लिए आई हुई है। राजू मन-ही-मन सोच रहा था कि जब वो फेमस हो जाएगा तो लोग उसके आस-पास भी ऐसे ही भीड़ लगाकर सेल्फी लेने की कोशिश करेंगे। भीड़ से अलग होकर भीड़ आकर घेर ले तक की दूरी ही दुनिया है।

स्टीफेन और मीरचंदानी को एक लेखक से मिलकर अच्छा लगा था। उन्होंने तुरंत ही दो हीरोइन और एक हीरो वाली कहानी फाइनल कर दी थी। राजू ने हीरोइन को होटल के कमरे में उन दोनों के साथ छोड़ा और अपनी गर्लफ्रेंड को बुलाकर, खुद को कुछ देर के लिए उसने मीरचंदानी और स्टीफेन मान लिया।

उसकी गर्लफ्रेंड समझ नहीं पा रही थी कि आखिर राजू को उस दिन क्या हुआ है। सुबह का इंतजार करते हुए उसने अपनी गर्लफ्रेंड से कहा, "तू अंग्रेजी बोलना सीख ले। जरूरत पड़ेगी।"

गर्लफ्रेंड को ये बात समझ नहीं आई। राजू की गर्लफ्रेंड एक ऑफिस में डेटा एंट्री का काम करती थी। वो अपनी जिंदगी से थकी हुई थी। ऑफिस में कई लोग उस पर लाइन मारते थे और वो भी एक-दो लोगों पर लाइन मारती थी।

"मुंबई में हर चीज का ऑप्शन होना चाहिए और किसी के लिए रुकने का नहीं।"

वो अक्सर कहा करती। वो राजू से प्यार करती थी लेकिन उसका प्यार प्रैक्टिकल था। 'प्यार को प्रैक्टिकल होना चाहिए रे', ये कहते हुए वो अपनी उँगलियों पर राजू के अलावा ऑप्शन गिनती। राजू को उस दिन पहली बार अपनी गर्लफ्रेंड की महक से नफरत हुई। उसमें वो हीरोइन वाली महक नहीं आ रही थी।

अगले दिन स्टीफेन और मीरचंदानी की फ्लाइट थी। यूँ तो उन्होंने एयरपोर्ट आने को मना किया था लेकिन राजू समय से पहुँच गया। सात दिन का होटल का बिल सवा लाख हुआ था। स्टीफेन ने स्टाइल से निकालकर अपना कार्ड स्वाइप किया। लेकिन कार्ड से पेमेंट नहीं आया।

"हाउ कैन दिस हैपेन? प्लीज चेक योर मशीन।"

स्टीफेन बताने लगा कि आजकल तो मशीन में एक बार में पेमेंट होता ही नहीं है। स्टीफेन के अंग्रेजी में बोलने की वजह से रिसेप्शन पर खड़ी लड़की ने दो-तीन बार चेक करके कहा, "सर कोई दूसरा कार्ड होगा आपके पास?"

स्टीफेन ने इस बार पहले भी ज्यादा स्टाइल से कार्ड निकालकर आगे कर दिया। जब तक लड़की कार्ड मशीन में डाल रही थी। स्टीफेन बोला, "यार अपने को वो राइटर की कहानी बहत अच्छी लगी। आग लग जाएगी। ऐसी कहानी आई नहीं है।"

ये कार्ड भी नहीं चला। मीरचंदानी ने अपना कार्ड आगे किया। इस बीच स्टीफेन ने गुस्से से किसी को फोन किया।

"ये क्या मजाक है आप लोगों का, कॉर्पोरेट कार्ड चलता नहीं है! मुझे जो इनकन्वीनियंस हुआ उसका पैसा कौन देगा? आप अपने बॉस से बात करिए और इसको क्लीयर करिए।"

मीरचंदानी का कार्ड भी नहीं चला। स्टीफेन को फिर एक नंबर से फोन आया। उसने मोबाइल दिखाया कि बॉस का फोन आया, "देखा... बॉस ने हड़काया होगा।"

उसने फोन उठाया, "जी बॉस, जी बॉस... लेकिन इतना कैश बॉस, अच्छा बात करता हूँ बॉस।"

उसने फोन उठाकर राजू को दे दिया। राजू सीट से खड़ा हो गया, "जी सर!"

उधर से आवाज आई, "राजू सर, आपके साथ काम करके अच्छा लगेगा।"

राजू ने अंग्रेजी में कहा, "सेम हियर सर!"

उधर से आवाज आई, "आप एक काम करो, परसों की फ्लाइट से आ जाओ, पंडित जी से बात हो गई। मंगलवार का दिन शुभ रहेगा। मुझे खुद ही आना था लेकिन काम का तो आपको पता ही है। अब सीधे मुहूर्त पर ही आना हो पाएगा।"

राजू के मुँह से लगातार जी सर, जी सर निकल रहा था। फोन रखने से पहले बॉस ने कहा, "एक छोटा-सा काम था आपसे, अगर कोई दिक्कत ना हो तो..."

राजू का जवाब बॉस को पता ही था।

"मैंने गलत पिन डाल दिया था, सारी कंपनी के कॉर्पोरेट कार्ड ब्लॉक कर दिए हैं सालों ने, अगर आप पेमेंट कर दो और परसों साइनिंग में उतना अमाउंट जोड़ देंगे।"

"कहने वाली बात ही नहीं है सर, मैं करता हूँ।" राजू ने जैसे ही कहा, फोन स्टीफेन ने ले लिया और बोला, "अरे नहीं सर, राजू भाई को क्या परेशान करना है? हम लोग दो दिन और रुक जाते हैं। आप किसी को भेज दो न वहाँ से।"

हीरोइन राजू की ओर देख रही थी। ठीक वैसे जैसे जब कोई छोटे शहर का

देखा और उसको याद आया कि वो इस कहानी का हीरो है।

राजू को किसी दोस्त से इतनी जल्दी उधार तो मिलते नहीं, उसने एक घंटे के अंदर अपनी टैक्सी गिरवी रखकर 12% पर मंथ के रेट पर पैसा उठा लिया और पैसे अदा कर दिए। एयरपोर्ट पर उन दोनों को छोड़ने के बाद राजू और हीरोइन, उसकी खोली में गए।

उन्होंने तीन घंटे लंबी फिल्म के बराबर एक-दूसरे के साथ वो सब कुछ किया जो एक बड़ी फिल्म के हीरो और हीरोइन ऑफ स्क्रीन करते हैं।

राजू ने अपने और हीरोइन के लिए मंगलवार की फ्लाइट का टिकट बुक कर लिया। सोमवार की शाम तक कोई फोन नहीं आया। स्टीफेन और मीरचंदानी के नंबर इस दुनिया के नक्शे से गुम हो चुके थे। मंगलवार आते रहे, हर मंगलवार को जब वो किसी को एयरपोर्ट छोड़ने आता तो उसको अपनी छूटी हुई फ्लाइट की याद आती।

कुछ महीने बाद मैंने एयरपोर्ट जाने के लिए टैक्सी बुक की तो देखा ड्राइवर का नाम, राजीव कुमार है। जैसे ही टैक्सी में बैठा तो पाया कि ये तो राजू है।

"क्या राजू भाई, क्या हुआ उस फिल्म का?" मैंने टैक्सी में चढ़ते ही पूछा।

राजू ने पहले के जैसे ही काला चश्मा, कान में बाली, जीन्स वाला जैकेट स्टाइलिश टी-शर्ट पहनी थी।

"अपनी ही फिल्म बन गई सर जी!"

ये बोलते हुए जब वो घूमा तो मेरा ध्यान उसकी शक्ल पर गया, वो बूढ़ा हो चुका था। मुंबई शहर उस दिन थोड़ा-सा मर गया था।

"एयरपोर्ट का कितना टाइम दिखा रहा है?" मैंने पूछा।

"टेंशन मत लो सेठ, अपुन की टैक्सी में जो बैठा है उसकी फ्लाइट कभी नहीं छूटी।"

"बाकी लाइफ कैसी चल रही है?" मैंने पूछा।

"मस्त है सर, अपुन एक स्क्रिप्ट लिखेला है। अपनी ही लाइफ पर, कोई खरीदने वाला हो तो बोलना। मस्त दो हीरोइन, एक हीरो और दो विलेन, फुल बॉलीवुड मसाला है सर जी।"

जो लोग खुद लेट होते हैं, वो अक्सर दूसरों को समय से पहले पहुँचा देते हैं।

राजू उर्फ राजीव कुमार की कार के डैशबोर्ड में हाथ से लिखी हुई स्क्रिप्ट में टपककर सूख चुके हर आँसू को उम्मीद थी कि वो सुपरस्टार नहीं बना तो क्या हआ, उसकी कहानी किसी-न-किसी को एक दिन सुपरस्टार बना देगी।

खुश रहो

एयरपोर्ट पर रोज के जैसे ही चहल-पहल थी। इतने में 50 साल का आदमी कैफे में घुसा। उसकी नजर किसी का इंतजार कर रही थी। उसने कुर्सी पर बैठने से पहले दो कॉफी का आर्डर दिया। दोनों ही अलग-अलग तरीके की थी। ऑर्डर देने के बाद एक ठीक-सा कोना देखकर उसने अपना सामान रख लिया और साथ लाए अखबार को पढ़ने लगा। बार-बार उसकी नजर कैफे के गेट पर जा रही थी। इस बीच कॉफी आ चुकी थी। अपना फोन निकाला और एक नंबर डायल करने ही वाला था कि इतने में सामने एक करीब 20 साल का लड़का आकर बैठा।

"सॉरी पापा! ट्रैफिक बहुत था।"

"कोई बात नहीं, तुम्हारी कॉफी ऑर्डर कर दी है। अब भी वही पीते हो न?"

"पीता तो नहीं लेकिन पी लूँगा।"

अब इन दोनों के बीच केवल कैफे की आवाज थी। लड़का अपने बाप से नजर नहीं मिला रहा था। बाप को भी समझ नहीं आ रहा था कि वह बात

"काम ठीक चल रहा है तुम्हारा?"

"हाँ, अभी तक तो ठीक चल रहा है। फर्स्ट राउंड फंडिंग मिलने वाली है।"

"तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हें डिग्री पूरी कर लेनी चाहिए थी?" बाप ने कॉफी एक झटके में खत्म करते हुए यह बात पूछी।

"आप हर बार यही बात क्यों ले आते हैं? इस पर बात हो चुकी है।"

एक बार फिर से बातें खत्म हो गई थीं।

"ठीक है, तो मैं चलूँ?" बेटे ने अपनी कॉफी खत्म करते हुए पूछा।

"मैंने तुम्हें बात करने के लिए बुलाया है न?" बाप ने आँखों को चौड़ा करते हुए कहा।

"ओके!" लड़के ने मन मारकर कहा।

"एक और कॉफी पियोगे?"

"नहीं।"

"कुछ खाओगे?"

लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया। बाप उठा और काउंटर पर जाकर दो सैंडविच ऑर्डर कर ही रहा था कि लड़के ने आकर अपनी पसंद का सैंडविच बताया। लड़के ने सामने रखा अखबार लिया और एक मिनट तक अलटा-पलटा। इस पूरे समय बाप अपने बेटे को घूरे जा रहा था।

बेटे ने अखबार रखते हुए पूछा, "आप ठीक हैं?"

"हाँ ठीक हूँ।"

सैंडविच आ चुका था। लड़का जिस अंदाज से सैंडविच खा रहा था, उससे पता चल रहा था कि उसको काफी भूख लगी थी। बाप अपने बेटे को इत्मिनान से खाता हुआ देखकर मुस्कुराया।

"खाना-वाना कैसे खाते हो?"

"बाई आती है।"

"खाना समय से तो खाते हो न?"

"हाँ। आपकी ट्रिप कितने दिन की है?"

"कल शाम की वापसी है।"

सैंडविच खत्म हो चुका था। लड़का सीट से उठा और उसने पूछा, "मेरा

"हाँ अपनी वाली ही मेरे लिए भी बोल दो।"

"आपको वो अच्छी नहीं लगेगी।"

"कोई बात नहीं, एक बार पीने में क्या है, देखते हैं।"

लड़के ने अपनी वाली कॉफी ऑर्डर की, बाप अपने बेटे को काउंटर पर देख रहा था। इस बीच बाप के मोबाइल पर मैसेज आया- "बात हो गई?"

बाप ने रिप्लाई किया, "अभी नहीं।"

बेटा आकर बैठा और उसने अपने बाप की आँखों में आँख डाले बिना ही कहा, "मैं शादी में नहीं आऊँगा।"

बाप आगे से खिसककर थोड़ा पीछे आ गया।

"मम्मी ने समझाया तुमको?"

"नहीं, मुझे खुद ही नहीं आना।"

इससे पहले बाप कुछ बोलता, बेटे के फोन पर प्रिया का मैसेज आया।

"मना कर दिया तूने?"

बेटे ने कोई जवाब नहीं दिया। सैंडविच आ चुका था। दोनों ने बिना बात

किए कॉफी पी। लड़का बीच-बीच में अपना मोबाइल चेक कर रहा था। एक पाँच साल का बच्चा कहीं से खेलते हुए टेबल पर आया। उस बच्चे के पापा पीछे से आए और सॉरी बोलकर उसको ले गए। बच्चे की नजर अब भी इसी टेबल पर थी।

"मम्मी बता रही थीं कि तुम्हारा बैकपेन बहुत ज्यादा बढ़ गया है। मैंने आज का अप्वॉइंटमेंट ले रखा है, चलो दिखा आते हैं।"

"अब नहीं है इतना दर्द, कभी-कभी होता है।"

"अभी पूरी उम्र पड़ी है, बैक पेन को सीरियसली लेना चाहिए। शाम सात बजे का अप्वॉइंटमेंट है। वहीं हॉस्पिटल मिलो, वहाँ से डिनर करने चलेंगे।"

"मैं बाद में दिखा लूँगा पापा, आज बहुत काम है।"

"काम दिन में निपटा लो।"

"मैं दिखा लूँगा, अब इतना दर्द नहीं है पापा।"

"शाम को हॉस्पिटल पर मिलो।"

लड़का उठकर जाने लगा।

"कैसे जाओगे, मैं छोड़ देता हूँ।"

लड़का उठकर चला गया। बाप उसको तब तक देखता रहा जब तक वो दिखना बंद नहीं हो गया।

बेटे ने अपने पापा के मोबाइल पर मैसेज किया- 'सारी पापा! मैं नहीं आऊँगा!'

बाप ने रिप्लाई में लिखा- 'सात बजे, लीलावती, बांद्रा, सी यू।'

शाम को जब लड़का हॉस्पिटल आया तो उसके साथ उसकी गर्लफ्रेंड शेफाली भी थी।

"थैंक्स अंकल! मैं इतने दिनों से बोल रही थी, ये आ ही नहीं रहा था।"

बाप बहुत खुशी से शेफाली से मिला। वो जैसे ही हॉस्पिटल से निकले बेटे ने कहा, "अच्छा पापा, चलता हूँ।"

"डिनर करके जाना, क्यों शेफाली?"

शेफाली मना नहीं कर पाई। लड़का उसको लेकर ही इसलिए आया था ताकि उसके बहाने जल्द निकल ले। डिनर टेबल पर बाप की बात शेफाली से हो रही थी। लड़का चुपचाप था। लड़कियों के होने से बातचीत की जगह बनी रहती है। शेफाली और बाप के पास एक कॉमन टॉपिक था, लड़के की

बुराई।

"इसको लगता है कि ये अपनी मम्मी पर गया है लेकिन ये ठीक वैसा ही है जैसा मैं था।"

"आप कैसे थे?" यह पूछकर शेफाली हँसी।

"यही, अपने बाप को कुछ नहीं समझना। उनकी बात न सुनना।" कहकर बाप हँसा।

उसने साथ में यह भी जोड़ा, "ये तो फिर भी बात कर लेता है। मैं तो अपने पापा से एक बार ऐसा नाराज हुआ था कि दो साल बात नहीं की थी उनसे।"

"वो शायद आंटी की वजह से आया होगा इसमें।" शेफाली ने कहा।

बाप और बेटे ने एक-दूसरे को देखा और देखते ही नजरें हटा लीं। लड़के ने शेफाली को चलने का इशारा किया। शेफाली ने ध्यान नहीं दिया।

लड़के ने बीच में ही बात काटते हुए पूछा, "आपका काम हुआ?"

"मुझे कोई काम नहीं था, तुमसे मिलने आया हूँ बस।" बाप ने एक साँस में कह दिया। लड़के का सवाल उल्टा पड़ चुका था।

"मत आना, शेफाली तुम आओगी न?"

शेफाली के लिए ये थोड़ा अजीब हो गया कि वो बेचारी क्या जवाब दे, क्या नहीं!

ठीक उसी समय बैरे ने डिनर लगा दिया। खाते हुए कोई बात नहीं हो रही थी। चलने से पहले बाप ने कहा चलो तुम लोगों को छोड़ देता हूँ। लड़के के मना करने के बाद भी बाप ने उसको साथ बैठा लिया।

"शेफाली, इसकी दवा का पूछ लिया करना, देखना लापरवाही न करे ये। ऐसे तो फोन उठाता नहीं है ये।"

"जी अंकल!"

शेफाली के लिए भी अब बैठना मुश्किल हो रहा था। घर पहुँचकर लड़का और शेफाली जब टैक्सी से उतरे तो बाप ने पूछा, "यार कॉफी तो पिला दो।"

"दूध लाना पड़ेगा।"

"ब्लैक कॉफी पिला देना।"

लड़का मना नहीं कर पाया। घर के अंदर पहुँचकर बाप ने कमरे का

मुआयना किया। हॉल में उसकी और माँ की फोटो गणेश जी के साथ ही लगी हुई थी। शेफाली किचन में जाने ही वाली थी कि लड़के ने कहा, "मैं बनाता हूँ।"

कुछ देर में लड़के ने हॉल में कॉफी लाकर रखी। शेफाली अब तक कपड़े चेंज कर चुकी थी।

"पापा, मुझसे नहीं देखा जाएगा। आप प्लीज अब आने के लिए प्रेशर मत बनाइए।"

बाप ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने कॉफी का सिप लिया। लड़का बाप के कॉफी खत्म होने का इंतजार कर रहा था। शेफाली भी वहाँ आकर बैठ गई।

"जब मेरे पापा मरे तब मेरी उनसे बात नहीं होती थी। मैं उनसे बहुत नाराज था। वो मुझे अपने जैसा बनाना चाहते थे। उनके मरने पर मुझे रोना नहीं आया। न ही इस बात के बारे में मैंने कभी सोचा। मुझे उस दिन रोना आया जब तुम कॉलेज के लिए जा रहे थे। मुझे उस दिन तुम्हारे दादा जी की बहुत याद आई। उस दिन मैं उनकी कॉलेज में भेजी हुई चिट्ठियाँ पढ़कर बहुत देर तक रोया। मैंने सोचा था कि मैं कभी उनके जैसा नहीं बनूँगा। अब सोचता हूँ कि मैं ठीक उनके जैसे चलता हूँ। वैसे ही दाढ़ी बनाता हूँ। कभी-कभी नहाने के बाद अपना तौलिया सूँघता हूँ तो उसमें पिताजी की महक

लड़के ने कॉफी एक घूँट में पी ली और बोला, "पापा मैं नहीं आऊँगा। आप दूसरी शादी कर ही क्यों रहे हो?"

बाप उठा और दरवाजे से निकलने से पहले बोला, "खुश रहो! कोई दिक्कत होगी तो बोलना।"

शेफाली उनको ऐसे जाने नहीं देना चाहती थी, लेकिन उसको समझ नहीं आ रहा था कि बोले तो क्या बोले।

अपने बाप के जाने के बाद लड़का बहुत देर तक रोता रहा। शेफाली उसको चुप कराने की कोशिश नहीं कर रही थी। उसने बस लड़के को ऐसे समेट लिया जैसा चिड़िया अपने बच्चे के मुँह में दाने डालती है।

लड़का रोते-रोते सो गया। सुबह उसकी टेबल पर नजर पड़ी। पापा ने एक लिफाफे में कुछ पैसे, एक क्रेडिट कार्ड और अपनी शादी की सब डिटेल लिखी हुई थी।

लड़के ने कार्ड फाड़ने से पहले एक बार उसको ध्यान से देखा। क्रेडिट कार्ड को कैंची से काट दिया और एक नोट जिस पर लिखा था- 'आओगे तो अच्छा लगेगा। ज्यादा नहीं, बस दस लोग होंगे।'

लड़के ने उस कागज को फाड़कर डस्टबिन में डाल दिया, मगर फिर कुछ देर बाद उस कागज को टेप से जोड़कर अपनी अलमारी में कपड़े के नीचे लगे अखबार की तह में दबाकर रख दिया।

मम्मी की तीन-चार मिस्ड कॉल्स पड़ी थीं। लड़के ने फोन नहीं उठाया था।

शेफाली उठने के बाद काम पर जा चुकी थी। लड़का घर पर अकेला था। माँ का फोन एक बार और बजा।

"मम्मी मुझे अकेला छोड़ दो यार। मुझे तुम लोगों के झगड़े में नहीं पड़ना।"

माँ ने गुस्से में फोन काट दिया। माँ-बाप कई बार बच्चों को हथियार की तरह यूज करते हैं। लड़का अब यूज नहीं होना चाहता था। उसने अपने काम में ध्यान लगाने की कोशिश की लेकिन मन लग नहीं रहा था। उसने कुछ देर बाद अपनी मम्मी को सॉरी लिखकर भेज दिया।

दिन भर इधर से उधर काम टरकाने के बाद उसने रात को पापा को फोन किया।

"आप पहुँच गए?"

"बस अभी लैंड किया है।"

बस इतनी-सी बात हई। शेफाली ऑफिस से आ चुकी थी।

कुछ दिन में लड़का भूल ही गया कि पिता आए थे। वो अपनी दुनिया में खो गया। काम कई बार इसलिए भी जरूरी हो जाता है ताकि हम अपने दुख भूल सकें। शेफाली के पास लड़के के पिता का मैसेज आया कि उन दोनों की बुकिंग हो गई है। शेफाली ने लड़के को बताया, मगर लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया।

"क्या सोचा है, चलना है?"

"तू पागल है क्या? अपने बाप की शादी में जाने से ज्यादा इम्बैरेसिंग कुछ होगा दुनिया में? अब इस बारे में कभी कुछ नहीं पूछना।"

शेफाली को बुरा तो लगा लेकिन वो समझती थी। पिता ने पुश्तैनी जायदाद मम्मी और बेटे के नाम कर दी थी।

शादी में अब एक दिन बचा था। लड़के ने पहले ही तय किया था कि वो नहीं जाएगा। मम्मी का फोन आया। वो फोन पर पता नहीं क्या-क्या बोलती रहीं। लड़के को कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा था। टूटे हुए रिश्ते में भी बहुत कुछ बचा होता है, शिकायत ही सही कुछ तो जुड़ा होता ही है।

लड़के ने बेचैनी में अपनी बाइक निकाली और सड़क के साथ हो लिया।

इस बीच में उसकी बाइक एक महँगी गाड़ी से टकराई। तब जाकर उसके खयालों की सीधी रेखा टूटकर बिखर गई। कार के अंदर से एक लड़की उतरी और बोली, "मैं देख लूँगी, तुम्हें पता नहीं मेरे पापा कौन हैं!"

लड़के को कुछ सुनाई नहीं दिया, सिवाय इसके कि- 'मेरे पापा कौन हैं!'

उसने अपना नंबर नोट कराया और विश्वास दिलाया कि कार बनवाने में जो भी खर्चा आएगा वो भर देगा।

ऐसे मौके पर उसको अपने बाप की याद आई कि वो चाहता तो बोल सकता था कि उसका बाप कौन है। लेकिन उसको ऐसे लगा जैसे पिता से ब्रेकअप हो गया हो। उसको अपने बाप पर फिर गुस्सा आया।

ऐक्सिडेंट होने से उसका मूड ऑफ हो गया था। वो जब घर पहुँचा तो पिता का मैसेज पड़ा हुआ था।

"मैं शादी नहीं कर रहा।"

इतने में माँ का फोन आया। माँ बहुत खुश थी।

"बहुत अच्छा हुआ, ये तो होना ही था। कहीं गति नहीं मिलेगी तुम्हारे बाप को। जो हमारा नहीं हुआ वो किसी और का क्या होगा?"

माँ बोले जा रही थी, लड़का अनसुना किए जा रहा था।

उसने अपने लैपटॉप बैग में कछ सामान भरा और एयरपोर्ट की तरफ भागा। शेफाली ने ये बात पिता को बता दी। वो जैसे ही लैंड किया, पिता का मैसेज मिला कि वो उसको लेने आए हैं। लड़के को अच्छा लग रहा था कि वो उसको लेने आए थे।

लड़के ने पापा को गले लगाया। कार पापा चला रहे थे। रेडियो में फरमाइशी गीत चल रहे थे। पिता तो अपने घर लेकर गए। उसकी माँ को छोड़ने के बाद ये पहली बार था जब वो पिता के घर आया था। घर में घुसते ही उसको वही फोटो दिखी जो उसने अपने घर में लगा रखी थी।

इससे पहले घर का नौकर पानी टेबल पर लाकर रखता, बेटे ने अपने लैपटॉप बैग से पानी निकालकर पिया और बोला, "शैतानी करने पर जब मम्मी मुझे बाथरूम में बंद करके लाइट ऑफ कर देती थीं, आप हमेशा मुझे बचाने आ जाते थे। मैं जब भी परेशान होता हूँ तो मुझे वैसे ही बाथरूम जैसा लगता है और मैं सबसे पहले आपको ढूँढता हूँ।"

पिता अपने बेटे की बात को ध्यान से सुन रहा था। पिता को लगा कि जैसे बेटा नहीं, उसके पिता बोल रहे हों।

"मैं बस इतना चाहता हूँ कि आप जब परेशान हों तो सबसे पहले मुझे ढूँढें।"

पिता को बेटे से इस समझदारी की उम्मीद नहीं थी। पिता के कंधे पर से एक बोझ हट गया था। हर पिता अपने पिता का एक बोझ अपने अंदर ढोए हुए चल रहा है। एक दिन ऐसा आता है जब वो अपना बोझ आगे बढ़ा देता है और उसके लिए दुनिया हल्की हो जाती है। पिता बेटा बन जाता है और बेटा पिता। इस प्रक्रिया में किसी कागज-पत्तर पर निशान नहीं बनते, कोई शब्द खर्च नहीं होते।

पिता ने बेटे को गले लगा लिया। बेटे ने कान में धीरे से कहा, "आप शादी कर लीजिए। आपका और मम्मी का वैसे भी बहुत साल पहले सब खत्म हो चुका। अपने आप को परेशान मत कीजिए।"

बाप ने कुछ नहीं कहा। बेटे ने उस दिन बाप को वही आशीर्वाद दिया था जो हर बाप अपने बेटे को देता है, "खुश रहो!"

कुछ दिन बाद शादी हुई। घर की नई तस्वीर में बाप और बेटा पुराने जरूर थे लेकिन उनका कुछ हिस्सा नया था। बेटे ने अपने बाप को जीते जी माफ कर दिया था। वरना इतिहास गवाह है बाप को माफी मरने के बाद ही मिलती है।

@EBOOKSIND

द्रौपदी

देविका की बेटी को लगता है कि उसकी मम्मी पिक्चर की सभी हीरोइनों से सुंदर है। देविका छह बजे सुबह उठकर अपनी बच्ची गुनगुन को रोज तैयार करती है। अपने लिए और पति किसलय के लिए नाश्ता बनाती है। रोज गुनगुन की आँखों में वही सपने और सवाल देखती है जो कभी उसके हुआ करते थे।

द्रौपदी के टाइम पर पाँच पति कॉमन नहीं थे लेकिन आजकल बहुत कॉमन है। देविका देखने में लोकल ट्रेन वाली उस हर औरत की तरह लगती है जिसके पाँच पति होते हैं। देविका की खास बात यही है कि उसमें कोई खास बात नहीं है, उसके भी पाँच पति हैं। पहला और सबसे बोरिंग पति किसलय जिससे उसकी शादी हुई है जो हमेशा उसको टेकेन फॉर ग्रांटेड लेता है। दूसरा पति 'घर' जहाँ वो चौबीस घंटे की नौकर है। ये 'घर' नाम का पति देविका से कभी खुश नहीं होता, बाकी जैसे ही देविका एक काम पूरा करती है 'घर' दस नये काम पकड़ा देता है। तीसरा पति उसके ससुर जिनकी उम्मीदें वो रोज तोड़ देती है। चौथा पति जिनका घर वो छोड़ चुकी है वो हैं, उसके अपने पापा और पाँचवा पति ये समाज जो हमेशा उसको याद दिलाता रहता है कि अगर उसने अपने बाकी पतियों के लिए कुछ भी

'बहुत साल पहले की बात है। एक बहुत शक्तिशाली राजा था और उसकी कई सारी बहुत खूबसूरत रानियाँ थीं।' देविका ने अपने छह साल की बेटी गुनगुन को कहानी सुनानी शुरू ही की थी कि इतने में गुनगुन ने देविका को बीच में रोक दिया और कहा, "ये वाली आप सुना चुके हो।"

"नहीं, ये वाली नहीं सुनाई।" देविका ने कहा।

@EBOOKSIND

"नहीं मुझे नहीं सुननी ये एक राजा और कई रानियों वाली कहानी, कोई ऐसी द्रौपदी की कहानी सुनाओ जिसके कई राजा हों।" गुनगुन ने मासूमियत से कहा और बेड पर उठकर बैठ गई।

ये सुनकर देविका को तब पहली बार खयाल आया कि बचपन से उसने इतनी सारी शक्तिशाली राजाओं की कहानियाँ सुनी हैं कि अगर शायद इस बीच कोई शक्तिशाली द्रौपदी कभी कहीं हो भी तो उसकी कहानी धीरे-धीरे शक्तिशाली राजाओं की कहानियों में खो गई होगी।

गुनगुन को ये रात में कहानियाँ सुन के सोने की आदत, गुनगुन की दादी के आने के बाद से लगी थी। पिछली गर्मी की छुट्टियों में जब वो आईं तो उन्होंने न जाने कितनी कहानियाँ सुना दी थीं। इन कहानियों से शुरू में तो गुनगुन थोड़ा बोर होती थी लेकिन धीरे-धीरे उसे द्रौपदी, परियाँ, जानवर, जिन्न,

राक्षस, बड़े-बड़े खूँखार शैतान अच्छे लगने लगे थे। ऐसे ही देविका ने अपनी सास को एक दिन कहा था, "कहानियों से बच्चे कितने आराम से सो जाते हैं मम्मी जी।"

इस पर मम्मी जी ने कुछ सोचकर कहा था, "बहू, असल में कहानियों से बच्चों के अंदर कुछ जग जाता है।"

देविका ने गुनगुन की दादी के जाने के बाद से पहले किताब से कहानियाँ सुनानी शुरू किया लेकिन किताब वाली कहानियाँ जल्द ही खत्म हो गईं तब देविका रोज ऐसे ही रात को कुछ-न-कुछ बना के कहानियाँ सुनाने लगी। धीरे-धीरे उसको भी इसमें मजा आने लगा।

"बहुत पहले एक राजकुमारी थी, उसका नाम द्रौपदी था। वो बहुत सुंदर थी।"

"आपसे भी ज्यादा सुंदर?" गुनगुन ने पूछा।

"हाँ बहुत सुंदर। द्रौपदी की माँ बचपन में ही भगवान के पास चली गई थीं। उसके पापा जो कि बहुत बड़े राजा थे उसको बहुत प्यार करते थे। उस समय राजकुमारियों के लिए गुरुकुल नहीं होते थे, इसके बावजूद राजा ने द्रौपदी को खूब पढ़ाया था। घुड़सवारी, तलवारबाजी आदि सब कुछ सिखाया था। राजा बहुत बूढ़े हो गए थे इसलिए उनको अपनी बेटी की चिंता

एक लड़का ढूँढ रहे थे। द्रौपदी की शादी सबसे अच्छे, योग्य और शक्तिशाली राजा से हो, इसलिए उन्होंने स्वयंवर रखा।"

इतने पर गुनगुन ने मम्मी को रोका और पूछा, "स्वयंवर क्या होता है और आपका हुआ था?"

"स्वयंवर अब नहीं होता, पहले होता था। स्वयंवर में राजकुमारी सभी राजाओ में से अपनी इच्छा से पसंद करती है कि उसको किससे शादी करनी है। राजकुमारी को जो राजा पसंद आता है वो उसके गले में माला डाल देती है।" देविका ने इतना कहकर पास में रखा पानी पिया और कमरे की लाइट डिम कर दी।

"अब स्वयंवर क्यों नहीं होता मम्मी?"

"अब राजा-रानी नहीं होते न इसलिए। अब आगे सुनाऊँ? ज्यादा सवाल पूछोगी तो कहानी भूल जाऊँगी मैं।" देविका ने गुनगुन को धीरे से लिटाकर उसके सिर पर हल्के-हल्के हाथ फेरते हुए दुबारा कहानी शुरू की।

"द्रौपदी के पापा यानी बड़े वाले राजा ने सब जगह अपने घोड़े भेजकर खबर करवा दी कि उनके यहाँ उनकी बेटी का स्वयंवर है। स्वयंवर के लिए एक प्रतियोगिता होगी, जो उसमें जीतेगा द्रौपदी उसके गले में वरमाला डाल

देगी।"

देविका ने इतना सुनाकर गुनगुन को देखा, तो वो सो चुकी थी।

देविका गुनगुन के सोने के बाद अपने बेडरूम में गई। वहाँ किसलय लेटा हुआ टीवी पर कुछ देख रहा था और बीच-बीच में अपना मोबाइल चेक कर रहा था। शादी के बाद से दो साल के भीतर किसलय, देविका के पति से गुनगुन का पापा हो चुका था।

"टीवी और लाइट बंद कर दो।" किसलय ने कहा।

"तुम मोबाइल बंद कर दो अब।" देविका ने टीवी और लाइट बंद करते हुए कहा।

देविका आकर लेट गई, बिस्तर पर देविका और किसलय के तकियों की बीच में 7 साल की शादी के बराबर दूरी थी।

"कैसा रहा तुम्हारा ऑफिस?" देविका ने सात साल में से दो महीने की दूरी कम करते हुए कहा।

"ठीक था, रुटीन।" किसलय ने आँखें बंद किए हुए कहा।

"तुम कैसे हो?" देविका ने और दो महीने भर की दूरी तय करते हुए पूछा।

"ठीक हूँ, थक गया हूँ। सुबह जल्दी जाना है।" किसलय ने देविका को दो महीने पीछे धकेलते हए कहा।

उनको लेटे हुए अभी दो मिनट ही हुए होंगे कि इतने में किसलय के मोबाइल पर लाइन से 2-3 मैसेज आए। उसने मोबाइल उठाकर देखा, देविका ने कुछ नहीं कहा। दोनों तकिये फिर अपने आप से 7 साल की शादी के बराबर दूरी पर आ गए। किसलय अगले आधे घंटे मोबाइल पर चैट करता रहा। अगले आधे घंटे में देविका और किसलय के तकिये 7 साल और आधे घंटे बराबर दूर होते रहे।

सुबह उठकर देविका ने गुनगुन को स्कूल बस के लिए छोड़कर आने के बाद किसलय के लिए नाश्ता बनाकर टेबल पर रख दिया और कमरे में जाकर लेट गई। किसलय उठते ही अपना मोबाइल चेक करते हुए मुस्कुरा रहा था। देविका देखती और कुछ नहीं कहती। वो कभी किसलय का मोबाइल नहीं चेक करती। शायद इसलिए क्योंकि वो अपने शक को शक बने रहने देना चाहती थी। उसको सच होते हुए नहीं देखना चाहती थी। किसलय ने जल्दी से नाश्ता करके जाने से पहले पूछा, "तबीयत सही नहीं है क्या?"

"सही है, बस नींद पूरी नहीं हुई।"

"मुझे शायद आने में देर हो।" ये बोलकर किसलय अपना मोबाइल चेक

करते हुए चला गया।

देविका रोज की तरह धीरे-धीरे करके एक बजे तक घर के सारे काम निपटाती। तब तक गुनगुन के आने का टाइम हो जाता है। गुनगुन आते ही कहती है, "कल वाली कहनी पूरी करो।"

"रात में, पहले खाना तो खा लो।"

"नहीं पहले सुनाओ।"

"पहले खाना, नहीं तो कभी कोई कहानी नहीं।" देविका खिड़की भर आँखें खोलकर आसमान भर डाँटते हुए कहती है।

गुनगुन को कहानी सुनने का बहुत मन होता है इसलिए वो कहानी के चक्कर में फटाफट खाना खा लेती है और मौके का फायदा उठाकर देविका उसको एक कटोरी दाल भी पिला देने में कामयाब हो जाती है।

गुनगुन हाथ धोकर कपड़े बदलकर देविका के पास आकर कहती है, "कहानी कहानी कहानी..."

"आगे रात में बोला तो।"

"मम्मी नहीं, अभी सुननी है।"

"अरे स्कूल में मैम बोलती हैं कि जो भी पढ़ो उसको रिवाइज करो। आप अपनी कहानी रिवाइज कर लिया करो न। चलो अब सुनाओ, रिवीजन हो जाएगा आपका।" गुनगुन ने बस्ता भर मासूमियत के साथ कहा। अब देविका गुनगुन को कैसे समझाती कि हर वो चीज जो हमें पसंद होती है उसका रिवीजन केवल यादों में हो सकता है। देविका ने अपनी गुनगुन को अपने पास लिटाकर उसका सिर सहलाते हुए कहा, "द्रौपदी के स्वयंवर के लिए सभी बड़े राजाओं को संदेश जाने लगा। उधर द्रौपदी को अपनी शादी के लिए बहुत चिंता हो रही थी। उसे डर था कि कहीं उसकी शादी ऐसे राजा से ना हो जाए जिसकी पहले से कई रानियाँ हों। उसको कोई राजकुमार या कोई बड़ा राजा नहीं चाहिए था शादी के लिए, उसको तो बस ऐसा इंसान चाहिए था जो उससे खूब प्यार करे। उसके सारे सपने भले पूरे न करे लेकिन कम-से-कम उन्हें सुने और समझे। द्रौपदी की मम्मी तो थीं नहीं कि उनको ये सब बोल पाती तो ये सारी बातें वो मन-ही-मन सोच के रह जाया करती।"

ये कहने के बाद देविका सोचने लगी कि उसकी जिंदगी भी तो कहानी वाली द्रौपदी की जैसी है, कितनी बातें उस तक ही रह जाती हैं। किसलय के मोबाइल पर मैसेज आने की आवाज कभी-कभी उसको कूकर की सीटी से भी तेज सुनाई देती थी।

गुनगुन को अभी नींद नहीं आई थी उसके कहा, "तुम ये कहानी सुनाते हुए चुप क्यों हो जाती हो?"

"रिवीजन करने लगती हूँ न।" देविका ने टूटी हुई पेंसिल जितनी बेचारगी से कहा।

"कोई बात नहीं, अब हो गया आपका रिवीजन, अब आगे..."

"आगे ऐसा होता है कि बहुत बड़े स्वयंवर की तैयारी शुरू हो जाती है। बड़े राजा बहुत खुश होते हैं कि उन्होंने इतनी मुश्किल प्रतियोगिता रखी थी कि कोई छोटा-मोटा राजा तो उसे पार ही नहीं कर पाएगा। राजा ने सोच रखा था कि जो भी राजा स्वयंवर जीतेगा वो अपना सारा राजपाट उसको ही सौंप देंगे।"

"क्या प्रतियोगिता होती है मम्मी?" गुनगुन पूछती है।

"स्वयंवर के लिए अलग से एक तालाब बनवाया जाता है और उस तालाब के ऊपर एक मछली गोल-गोल घूम रही होती है। उस चलती हुई मछली की आँख पर सीधे निशाना नहीं लगाना था। बल्कि तालाब में मछली की परछाई देखकर निशाना लगाना था। जो निशाना लगा देगा, द्रौपदी उसी के गले में वरमाला डाल देगी, ऐसा तय हुआ था।"

ये सुनकर गुनगुन ने मछली जल की द्रौपदी है वाली मछली की मासूमियत

देता जिसकी पहले से कई रानियाँ हुईं तो भी क्या द्रौपदी उससे शादी कर लेती?"

"हाँ, उसको करनी पड़ती शादी उसी से।"

"फिर तो ये स्वयंवर नहीं हुआ न मम्मी?"

"क्यों नहीं हुआ?" देविका ने पूछा।

"क्योंकि तुमने बताया था स्वयंवर में द्रौपदी खुद से चुनती है अपना राजकुमार।"

बच्चों के सवालों से ज्यादा ईमानदार शायद ही दुनिया में कुछ बचा हुआ है। शायद दुनिया बची ही इसलिए है क्योंकि बच्चे आज भी सवाल पूछते हैं। खासकर वो सवाल जिनके जवाब अगर हमने दे दिए हुए होते तो आज दुनिया वैसी नहीं होती, जैसी है।

खैर, देविका ने आगे सुनाना शुरू किया, "द्रौपदी को पूरी उम्मीद थी कि एक दिन उसको अपने मन का राजकुमार मिलेगा, इसी उम्मीद पर वो एक-एक दिन काट रही थी।"

कहानी से गुनगुन की आँखों में नींद आनी शुरू हुई ही थी कि तभी

किसलय का फोन आया, फोन उठाने पर देविका ने हेलो नहीं केवल छोटा-सा 'हूँ' बोला। दूसरी तरफ से किसलय बोला, "आज शाम मुझे दो दिन के लिए दिल्ली जाना पड़ रहा है, मेरा समान पैक कर देना।"

देविका ने कोई सवाल नहीं पूछा। बस बहुत छोटा-सा 'ठीक है' बोलकर फोन रख दिया।

"मम्मी आगे..." गुनगुन ने माँ के फोन रखते ही पूछा।

"आगे रात में, पापा थोड़ी देर में आ रहे हैं।"

देविका ये कहकर सामान लगाने चली जाती है। वो सामान लगाकर जब लौटती है तब तक गुनगुन सो चुकी होती है। किसलय शाम को आने से पहले फोन करता है, "चाय बनाकर रखो मैं आ रहा हूँ।"

ये कहने के दो मिनट बाद ही वो दुबारा फोन करता है और पूछता है, "चाय बन गई?"

"अभी दो मिनट पहले ही तो तुमने कहा था, इतनी जल्दी कैसी बनेगी?"

"एक काम करो, तुम रहने ही दो। सामान लेकर नीचे आ जाओ, तुम्हारे चक्कर में फ्लाइट छूट जाएगी।"

इस बात पर देविका को गुस्सा आ जाता है। वो कहती है, "मैं नहीं

किसलय को देविका से ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी। वो गुस्से में ऊपर आता है, अपना बैग लेता है और कहता है, "लौट के देखता हूँ।"

देविका कुछ नहीं बोलती और अपने कमरे में आकर तेज आवाज में टीवी चलाकर वही चाय पीने लगती है जो उसने किसलय के लिए बनाई थी। घरों से आने वाली तेज टीवी की आवाजों की वजह केवल टीवी पर आने वाले प्रोग्राम नहीं होते, बल्कि घर में चलने वाले प्रोग्राम भी हुआ करते हैं।

गुनगुन शाम को खेलकर आती है और रात के डिनर पर पापा को न देखकर पूछती है, "पापा ऑफिस से नहीं आए?"

"वो ऑफिस के काम से बाहर गए हैं, दो दिन बाद आएँगे।"

ये सुनकर गुनगुन बहुत खुश होती है और कहती है, "फिर तो मम्मी आज आप कहानी पूरी कर देना और मेरे पास ही सो जाना।"

खाने के बाद सारे काम निपटाकर देविका, गुनगुन के पास जाकर कहानी शुरू करने ही वाली होती है कि किसलय का फोन आता है। देविका फोन नहीं उठाती, गुनगुन को दे देती है, "पापा का फोन है, बात करो।"

"हेलो पापा! मैं गुनगुन, आप क्यों जाते हो? कब आओगे और क्या

लाओगे?"

किसलय, गुनगुन की बातों का गोल-मोल जवाब देने के बाद कहता है, "बेटा, मम्मा को फोन दो।"

गुनगुन देविका की तरफ फोन बढ़ाती है और देविका कहती है, "उनको बोलो, मम्मी अभी थोड़ी देर में आपको फोन मिला लेगी।" गुनगुन थोड़ा कन्फ्यूज होती है और पापा से एक साँस में कहती है, "अभी मम्मी मुझे कहानी सुना के आपको फोन मिला लेगी, अगर वो कहानी पूरी नहीं सुनाएगी तो वो कहानी भूल जाएगी, ठीक है पापा, गुडनाइट, बाय! और हाँ, मेरी लिए स्टोरी बुक लेके आना आप। और आप मुझे कहानी क्यों नहीं सुनाते?"

किसलय किताब लाने का वादा करके फोन रख देता है।

"मम्मी, आगे सुनाओ, आपको इतना टाइम भी मिल गया रिवीजन का।" गुनगुन पास पड़ी कॉमिक्स में बने क्यूट चेहरे वाले कार्टून की क्यूटनेस अपनी आँखों में भरकर कहती है।

जिंदगी रोज जिस तरह से हमारी कहानी बनाती-बिगाड़ती रहती है, उसी तरह ही देविका भी द्रौपदी की कहानी के बहाने अपनी जिंदगी की कहानी के कुछ हिस्से बना रही थी तो कुछ हिस्से मिटा रही थी।

स्वयंवर का दिन आ जाता है। द्रौपदी खूब घबरा रही थी। एक के बाद एक सुंदर और शक्तिशाली राजा आते हैं लेकिन कोई भी निशाना नहीं लगा पता। ये देखकर बड़े राजा यानी द्रौपदी के पापा को भी चिंता होने लगती है। तभी एक बिलकुल साधारण कपड़े पहने हुआ युवराज आता है। मछली की आँख की परछाई तालाब में इतनी ध्यान से देखता है जैसे मछली की आँख के अलावा दुनिया में कुछ हो ही नहीं और उसका पूरा शरीर जैसे आँख बन गया हो। फिर देखते-देखते वो तीर चला देता है और तीर सीधा मछली की आँख में जाकर लगता है। चारों और तालियाँ बजने लगती हैं। आस-पास खड़ी प्रजा फूल बरसाने लगती है, नगाड़े बजने लगते हैं। द्रौपदी माला लेकर आती है। वो युवराज द्रौपदी को बहुत ध्यान से देखता रहता है जब तक द्रौपदी उसके पास नहीं आ जाती। द्रौपदी आती है, माला डालती है और पूरे महल में शंख और नगाड़े और भी तेजी से बजने शुरू हो जाते हैं।

वो युवराज बड़े राजा के पास आता है। उनको दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करता है। राजा उस युवराज से पूछते हैं कि वो युवराज कौन है और कहाँ का युवराज है?

वो युवराज बताता है कि उसका बहुत बड़ा साम्राज्य है लेकिन अभी उसके चाचा और उनके बेटों ने उनको वनवास में डाल रखा है। राजा को ये

सुनकर बड़ी चिंता होती है कि द्रौपदी इतनी सुविधाओं में पली है वो उस युवराज के साथ कैसे सुख से रह पाएगी? युवराज राजा को विश्वास दिलाता है कि वो द्रौपदी को बहुत अच्छे से रखेगा। द्रौपदी युवराज और उसके भाइयों के साथ चल देती है। शाम को जब वो घर पहुँचते हैं तो युवराज और उसके भाई अंदर से अपनी माँ को बुलाते हैं, "देखो माँ, हम क्या लाए हैं!"

माँ बिना बाहर निकले ही अंदर से बोल देती है, "जो भी लाए हो सब आपस में बाँट लो।"

@EBOOKSIND

युवराज और उसके भाई चिंता में पड़ जाते हैं कि वो कोई सब्जी, फल, आटा, चावल, दाल तो लाए नहीं हैं कि जिसको बाँटा जा सके। वो तो स्वयंवर जीत के द्रौपदी को लेकर आए हैं। माँ बाहर निकलती है तो उनको ये बात बतलाई जाती है। युवराज के बड़े भाई ये फैसला करते हैं कि माँ का कहा टाला तो नहीं जा सकता है। इसलिए द्रौपदी को सभी भाइयों से शादी करनी पड़ेगी। द्रौपदी को ये सुनकर बहुत बुरा लगता है। वो युवराज से कुछ करने को कहती है लेकिन युवराज आज्ञाकारी भाई और पुत्र की तरह कुछ भी कर पाने में अपनी बेबसी जताता है। द्रौपदी को बहुत गुस्सा आता है। वो समझ रही थी कि जिस युवराज ने इतने लोगों के बीच से प्रतियोगिता जीतकर द्रौपदी को अपना बनाया है वो कुछ तो करेगा।

असल में बड़ों की सभी बातें मान लेने से सब सही नहीं हो जाता, बल्कि

समझाती भी तो कैसे! उसको बड़े राजा की बहुत याद आई। वो रोते-रोते युवराज की माँ के पास गई और उनसे पूछा, "क्या उनकी बात पलटी नहीं जा सकती?"

उसकी जिंदगी का फैसला वो कैसे ले सकती हैं। लेकिन युवराज की माँ यानी द्रौपदी की सास कुछ नहीं बोलतीं। वो चुप रहती हैं।"

यहाँ तक सुनाते-सुनाते देविका चुप हो जाती है, गुनगुन की आँखों में बिलकुल भी नींद नहीं होती। देविका चुपचाप, गुनगुन को निहारते हुए अपने मन में कहानी का अगला हिस्सा बनाने लगती है।

"युवराज की मम्मी चुप क्यों रहती हैं और आप चुप क्यों हो गई? आगे सुनाओ मम्मी।" गुनगुन द्रौपदी की सारी बेचैनी अपनी आँखों में भरकर पूछती है।

देविका कहानी का आखिरी हिस्सा शुरू करती है, "युवराज की माँ जब कोई जवाब नहीं देती तो द्रौपदी युवराज के बड़े भाई के पास जाती है। वो भी उसे कोई उपाय नहीं सुझाते। द्रौपदी अब बहुत परेशान हो जाती है।"

ये बोलकर देविका फिर चुप हो जाती है।

"कितना रिवीजन करोगी मम्मी? फिर उसकी शादी सभी भाइयों से हो

जाती होगी। हो गई न एक द्रौपदी और कई राजा वाली कहानी!" गुनगुन कहानी खत्म होने के सुकून के साथ बोलती है।

देविका सामने खिड़की से बाहर के रोड लैम्प के ऊपर टहल रहे चाँद को देखते हुए कहती है, "नहीं, द्रौपदी बाकी भाइयों से शादी नहीं करती।"

"अच्छा, तो फिर वो अपने पापा के पास लौट जाती है न, मम्मी?"

सामने रोड लैम्प के पास से चाँद टहलते हुए बहुत आगे निकल गया होता है। देविका कहती है, "नहीं, वो बड़े राजा के पास भी नहीं जाती, बल्कि आखिरी बार युवराज को पूछती है कि अगर तुम गलत को गलत नहीं बोल सकते तो अपने आप को युवराज मानना छोड़ दो। जो अपनी पत्नी को ही न्याय नहीं दिला सकता वो प्रजा के साथ क्या न्याय करेगा! मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकती।

युवराज द्रौपदी को बोलता है कि द्रौपदी अगर ऐसा करेगी तो समाज में उनकी बहुत बेइज्ज़ती होगी, लोग क्या कहेंगे? वो कहीं अपना मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे। इस पर द्रौपदी बोलती है कि अगर वो रुककर सभी भाइयों से शादी कर लेगी तो दुनिया का भविष्य कभी उसको माफ नहीं करेगा। बहुत हो गया, अब वो नहीं रुक सकती। उसको अब एक पति भी नहीं चाहिए, पाँच तो बहुत दूर की बात है।

द्रौपदी नहीं मानती। वो वहाँ से चली जाती है।"

"कहाँ जाती है मम्मी?"

"वो वहाँ से निकलकर एक ऋषि के आश्रम में जाती है। जहाँ पर वो ऋषि के साथ मिलकर आस-पास के रहने वाले लोगों की लड़कियों को तलवारबाजी और घुड़सवारी सिखाना शुरू करती है। धीरे-धीरे उसका बहुत नाम हो जाता है और बड़े राजा उसको वापस लेने आते हैं। लेकिन वो उनके साथ वापस नहीं जाती। वो उनको समझाती है कि उसने अपने लिए ये अलग रास्ता चुन लिया है अब वो वहाँ से वापस नहीं आएगी। कुछ साल बाद युवराज भी उसको लेने आता है और बताता है कि माँ मान गई हैं, उसको सभी भाइयों से शादी करने की जरूरत नहीं। तब भी द्रौपदी टस-से-मस नहीं होती और युवराज को आश्रम से वापस भेज देती है। धीरे-धीरे द्रौपदी की ख्याति पूरी दुनिया में हो जाती है। जो राजा अपनी राजकुमारियों को पढ़ाते नहीं थे, घुड़सवारी, तलवारबाजी नहीं सिखाते थे, वो भी अपनी बेटियों को इस आश्रम में भेजने लगते हैं। जैसे युवराजों के गुरुकुल होते थे जहाँ वो सब कुछ सीखते थे, वैसे ही द्रौपदी के आश्रम से दुनिया के सबसे पहले राजकुमारियों के गुरुकुल की शुरुआत होती है।"

देविका ने जब कहानी खत्म की तब न उसकी आँखों में नींद थी, न गुनगुन

की आँखों में।

एक दिन बाद जब किसलय लौट के आता है तो दरवाजे पर उसको एक नोट मिलता है- 'मैं गुनगुन को लेकर जा रही हूँ। कहाँ जा रही ये मुझे भी नहीं पता, लेकिन ढूँढने की बेकार कोशिश मत करना। मन किया तो शायद लौट आऊँ। तुमने जाते हुए कहा था न, लौट के देखूँगा। जितना मन करे उतना देखना अब फुरसत से, पति हो परमेश्वर नहीं।'

देविका और गुनगुन की जिंदगी में कुछ बुरा नहीं हुआ बल्कि उससे अच्छा ही हुआ। इसीलिए शायद कहा जाता है कि बच्चों की कहानियाँ असली सच से ज्यादा सच होती हैं, क्योंकि वो न केवल पुराने झूठ मिटाती हैं बल्कि समय-समय पर नये सच भी बनाती हैं।

दिव्य प्रकाश दुबे ने पाँच बेस्ट सेलर किताबें—‘शर्तें लागू’, ‘मसाला चाय’, ‘मुसाफ़िर Cafe’, ‘अक्टूबर जंक्शन’ और ‘इब्नेबतूती’—लिखी हैं। ‘स्टोरीबाज़ी’ नाम से कहानियाँ सुनाते हैं। दिव्य प्रकाश आवाज़ की दुनिया का एक जाना-पहचाना नाम बन चुके हैं। Audible के लिए ‘पिया मिलन चौक’, ‘दिल लोकल’ और ‘दो दुनी प्यार’ जैसे मशहूर शो प्रस्तुत कर चुके हैं।

दस साल कॉरपोरेट दुनिया में मार्केटिंग तथा एक लीडिंग चैनल में कंटेंट एडिटर के रूप में कुछ साल माथापच्ची करने के बाद अब वह एक फ़ुलटाइम लेखक हैं। मुंबई में रहते हैं। कई नए लेखकों के साथ ‘रायटर्स रूम’ के अंतर्गत फ़िल्म, वेब सीरीज़ और ऑडियो शो विकसित करते हैं।

sharewithdp@gmail.com
www.divyaprakash.in
insta : @authordivyaprakash
Fb page : @authordivyaprakash

कहानियाँ

9 789392 820007

₹199

sampadak@hindyugm.com

प्रचार-सहयोग
हिन्दीनामा

हिन्द युग्म